RNI No. :BIHHIN/2013/53084

संपादक
अभिजीत कुमार, 9431006107

प्रबंध संपादक
मुकेश कुमार सिंह, 9534207188
समाचार संपादक
अखिलेश कुमार, 9431089053
राजनीतिक संपादक
प्रो. नीरज कुमार सिंह, 9431049337
सहायक संपादक
प्रभाकर कुमार राय/एस. एन. श्याम
संपादकीय सलाहकार
राजीव कुमार सिंह 9431210181
रंजीत कुमार 8800689555
कॉन्सेप्ट एडिटर
अनूप कुमार शर्मा, 7004821433
विधि सलाहकार
वीणा कुमारी जयसवाल, पटना हाई कोर्ट
बिहार ब्यूरो
अनूप नारायण सिंह
मुख्य संवाददाता
सोनू सिन्हा,9431006189
आशीष कुमार
जिला ब्यूरो
बेगूसराय : विरेश कुमार सिंह, 9430415316
अमित सिंह, 9430595995
रामसेवक स्वामी, 9570656021
भागलपुर प्रमंडल : राजेश पंजिकार, (ब्यूरो चीफ), 9334114515
समस्तीपुर : मृत्युंजय कुमार ठाकुर, 8406039222
चांदन : अमोद कुमार दूबे : 8578934993
हसनपुर : विजय चौधरी : 9155755866
मुंगेर प्रमंडल : बिधुरंजन उपाध्याय
मुंगेर : सिद्धांत
सहरसाः आशीष झा
जमुईः सुशान्त साईं सुन्दरम
बाराहाट : हेमन्त कुमार (संवाददाता)
सुईया : चन्द्रशेखर मिश्र (संवाददाता)
बिहार-झारखंड : अभिनव कुमार 7903292877
दिल्ली : नवल वत्स
ग्रेटर नोएडा : गौरीशंकर, 8920215318
प्रधान कार्यालय
गिरिराज सदन, हनुमान नगर, संजय गांधी नगर, काली मंदिर रोड़ नं.- 7, पटना - 800 020 (बिहार)
मो.- 9431006107, 9939815347
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक : अभिजीत कुमार गिरिराज सदन, हनुमान नगर, संजय गांधी नगर, काली मंदिर रोड़ नं.- 7 पटना - 800 020 (बिहार) से प्रकाशित व एस. एम. ऑफसेट पंडुईकोठी लंगर टोली, डीएन दास लेन, पटना-800 004,से मुद्रित।

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के विवाद के लिए लेखक स्वयं जिम्मेवार होंगे। इसके लिए संपादक से सहमति जरूरी नहीं। पत्रिका से संबंधित सभी विवादों का निबटारा पटना उच्च न्यायालय से होगा।

संरक्षक

डॉ. संजय मयूख
राष्ट्रीय सह मीडिया प्रभारी भाजपा

जय जयराम सिंह
JJRS CONSTRUCTION PVT. LTD.

चर्चित बिहार

वर्ष : 7, अंक : 5, जनवरी 2020, मूल्य : 25/- राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

7 रघुवर के रवैया ने झारखंड में डूबो दी बीजेपी की नैय्या

आतंकवाद निरोधक दस्ते ... 13

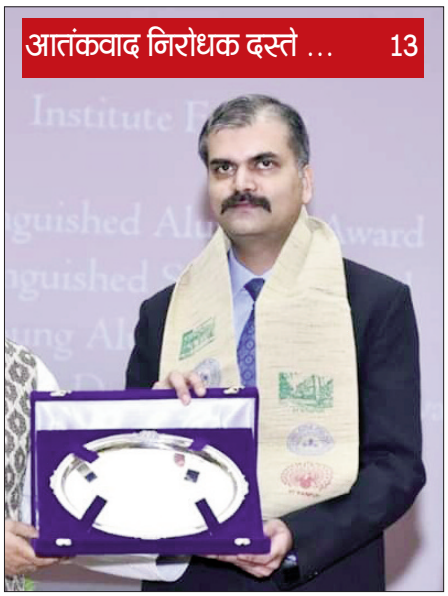

पटना के नए सिंघम बने ... 14

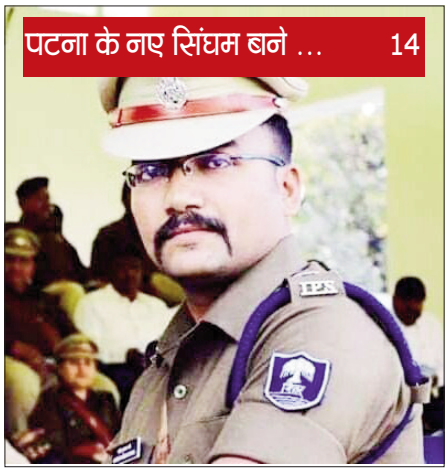

बिहार के युवाओं के बीच ... 17

प्रधान ने दिया ग्रीन इकोनॉमी... 19

किस दिशा में बदलाव

अभिजीत कुमार
संपादक
9431006107
cbhindi.news@gmail.com

एक नए साल और दशक के पहले दिन मन में पहला ख्याल यह आता है कि हम क्या-क्या लेकर आगे जा रहे हैं। एक व्यक्ति ही नहीं, देश के संदर्भ में भी यह प्रश्न उठता है। बीता दशक भारी बदलावों के लिए याद किया जाएगा, खासकर प्रशासनिक कामकाज के स्तर पर। नरेंद्र मोदी सरकार ने अपने पहले और दूसरे कार्यकाल के शुरूआती छह महीनों में कुछ नई संस्थाएं बनाईं तो कुछ का रूप बदल दिया। इसके पीछे सरकार का तर्क यह था कि वह कामकाज की जड़ता को तोड़कर एक नई कार्य संस्कृति विकसित करना चाहती है। वह चाहती है कि नौकरशाही की जटिलता समाप्त हो, त्वरित फैसले हों और जनता को इसका लाभ मिले। इस दृष्टि से सरकार ने योजना आयोग को भंग करके उसकी जगह नीति आयोग गठित किया। कहा गया कि योजना आयोग ऊपर से योजनाएं थोपता रहा है जबकि नीति आयोग ग्राम स्तर से योजनाएं बनाकर ऊपर तक पहुंचाएगा। आरबीआई के कामकाज में तब्दीली के लिए सरकार ने मौद्रिक नीति समिति (एमपीसी) का गठन किया। सरकार के मुताबिक, इसका उद्देश्य ब्याज दर निर्धारण को अधिक उपयोगी और पारदर्शी बनाना है। नौकरशाही में सुधार के मकसद से सरकार ने विभिन्न विषयों पर सचिवों के आठ समूहों का गठन किया और फिर सिविल सेवा में लैटरल एंट्री का प्रावधान किया जिसके जरिए विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों को विभिन्न मंत्रालयों में सीधे संयुक्त सचिव के रूप में नियुक्त किया गया।रक्षा के क्षेत्र में एक बड़ा कदम उठाते हुए सरकार ने सेनाध्यक्ष जनरल बिपिन रावत को देश का पहला चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (सीडीएस) नियुक्त किया। सीडीएस का दायित्व थलसेना, नौसेना और वायुसेना के कामकाज में बेहतर तालमेल लाना और देश की सैन्य ताकत को और मजबूत करना होगा। रेलवे की आठ विभिन्न सेवाओं को मिलाकर एक 'इंडियन रेलवे मैनेजमेंट सर्विस' नामक एक नई सेवा का गठन किया जा रहा है। रेलवे बोर्ड का ढांचा भी बदलेगा और इसमें कई स्वतंत्र अनुभवी विशेषज्ञ शामिल किए जाएंगे। एक लोकतांत्रिक व्यवस्था में प्रशासनिक मशीनरी का आदर्श यही है कि वह अपने चरित्र में ज्यादा से ज्यादा विकेंद्रित, पारदर्शी और जनता के प्रति जवाबदेह हो लेकिन मोदी सरकार के ढांचागत बदलाव पहली नजर में केंद्रीकरण की ओर झुके जान पड़ते हैं। स्वदेशी जागरण मंच जैसी संस्थाओं का भी कहना है कि नीति आयोग की रिपोर्टों में जमीनी समझ की कमी है। उसके पास योजना आयोग जैसे अधिकार भी नहीं हैं। ऐसे में उसके होने का कोई लाभ नहीं मिल पा रहा है। रिजर्व बैंक में बदलाव से गवर्नर की स्वायत्तता बाधित होने की बात कही जा रही है। आरबीआई के फैसले सरकार की चिंताओं से संचालित जान पड़ते हैं। नौकरशाही में लैटरल एंट्री या रेलवे सर्विस में बदलाव को लेकर यह आशंका जताई जा रही है कि इससे नौकरशाही में चाटुकारिता की प्रवृत्ति बढ़ेगी। सीडीएस को लेकर भी शंकाएं बहुत हैं लेकिन इसके कामकाज से जुड़े ब्यौरे अभी आने बाकी हैं। इन सारे बदलावों की असल परीक्षा 2020 के दशक में ही होनी है।

झारखंड की हार भाजपा के लिए बना सबक

जहाँ पर गिरे, वहाँ पर उठने के लिए चिंता नहीं चिंतन करने की है जरूरत

गौतम सुमन गर्जना/भागलपुर

2019 का चुनावी बिगूल बजते ही देखा यह जा रहा था कि झारखंड विधानसभा चुनाव के दौरान भारतीय जनता पार्टी अति उत्साहित है। एक तरफ लोकसभा चुनाव में मिली भारी सफलता और इस चुनावी दौड़ में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी,गृहमंत्री अमित शाह समेत भाजपा के दिग्गज नेताओं का दौरा तो वहीं दूसरी ओर महागठबंधन के नेता शांतिपूर्वक मतदाताओं के बीच जा-जाकर अपनी पकड़ मजबूत बना रहे थे। झारखंड विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी ने जहाँ सहयोगियों को बिल्कुल नकार दिया,वहीं महागठबंधन के घटक झारखंड मुक्ति मोर्चा,कांग्रेस और राष्ट्रीय जनता दल मजबूती के साथ एकजुट होकर चुनाव लड़ रहे थे।

भाजपा जहाँ 65 प्लस सीटों को जीतने का दावा कर रही थी,उसे मात्र 25 सीटों से संतोष करना पड़ा। जबकि महागठबंधन पूर्ण बहुमत बिना कोई लाग-लपेट के 47 सीटें हासिल करने में सफल रहे। महागठबंधन के तीनों दलों को 2014 के मुकाबले अधिक सीटें हासिल हुई। इस तरह एक और राज्य से भाजपा की सत्ता चली गई। इससे पहले महाराष्ट्र, राजस्थान, छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश में भाजपा सत्ता गवाँ चुकी है। बहुत दिन नहीं हुए जब भाजपा नेता कांग्रेस मुक्त हिंदुस्तान की बात किया करते थे।वहीं पिछले दो वर्षों में भाजपा ने सात राज्यों में सत्ता खोई है।

झारखंड चुनाव में हार के कारणों की समीक्षा करने में भाजपा के शीर्ष नेता लगे हुए हैं। पार्टी अपने स्तर से समीक्षा तो करेगी ही,क्योंकि एक-एक कर सात राज्यों में सत्ता खोने के बाद भाजपा का शीर्ष नेतृत्व चिंतित है। अब तो समीक्षा पुरी मजबूती से होनी चाहिए क्योंकि विकास और विश्वास के साथ रघुवर सरकार के द्वारा झारखंड को कायाकल्प करने के बाद भी आम जनता ने उन्हें नकार दिया और झारखंड राज्य में भारतीय जनता पार्टी की करारी हार हुई है। यह हार पार्टी के लिए एक सबक लेकर आया है। यूं तो हार और जीत लगा ही रहता है, लेकिन हर हार जीत के बहुत सारे कारण होते हैं! खासकर केंद्रीय नेतृत्व का किसी खास नेतृत्व पर बहुत ज्यादा भरोसा कर लेना, मुख्य कारण है। वैसे

बहुत सारे कारण हैं,जिसे कुछ इस तरह से अवलोकन किया जा सकता है...

- दूसरे पार्टी के नेताओं को पार्टी में मिलाकर, उसे टिकट देना, जिससे जमीनी कार्यकताओं में निराशा होना
- वर्तमान सरकार के रहते जितने भी विधानसभा के बाय इलेक्शन हुए, उसमें भाजपा का एक भी जगह नहीं जीतना, जिसका केंद्रीय नेतृत्व ने बिना समीक्षा किए नजर अंदाज कर दिया
- भाजापा से क्षुब्ध हुए झारखंड के प्रथम मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी को भाजपा में सम्मिलित करने के लिए केंद्रीय नेतृत्व का कोई प्रयास नहीं करना
- अर्जुन मुंडा को राज्य की राजनीति से हटाकर केंद्र में ले जाना, भाजपा के भीष्म पितामह कहे जाने वाले स्वर्गीय कैलाशपति मिश्र के निकटतम, जिन्हे चाणक्य भी कहा जाता है श्री सरजू राय जी को ऐन मौके पर पार्टी के टिकट से वंचित कर देना,
- झारखंड राज्य के गठन के बाद से निकट सहयोगी रहे आजसू से चुनाव के वक्त ही दूर हो जाना
- रघुवर दास जी के मुंह में कभी हंसी नहीं आना एवं सभी लोगों से मृदुभाषी न होकर तानाशाह जैसा व्यवहार करना
- बेरोजगारी को दूर करने के लिए कोई योजना नहीं बनाना
- झारखंड के जमीनी सच्चाई के बारे में सही आकलन करके केंद्रीय नेतृत्व को नहीं बताना
- प्याज के भाव,जो आग की तरह बढ़ गई है, उसके लिए केंद्रीय नेतृत्व को आम सभा में कोई आश्वासन न देना
- आदिवासी समाज से मुख्यमंत्री का न होना
- पार्टी के संगठन में स्थानीय तेजतर्रार नेता को महत्वपूर्ण पद पर न रखना, जदयू एवं लोक जनशक्ति पार्टी के महत्वपूर्ण नेताओं से संपर्क न करके उन से तालमेल न रखना, भाजपा के जमीनी विधायक को पार्टी में न मिलाना, जिससे उन्हें दूसरे पार्टी में जाकर जीतना,
- बिहार के तर्ज पर रोस्टर बनाकर सरकारी नौकरियों में बहाली न करना, मेरी समझ में कुछ इन्हीं सब कारणों से भाजपा की शर्मनाक हार हुई है। इसमें पूर्ण सुधार की आवश्यकता है एवं इन्हें यहाँ पर नए सिरे से संगठन को बनाना होगा। झारखंड की जनता यह भली-भांति जानती है ,कि उन्हें भारतीय जनता पार्टी

झारखंड की हार ने राज्यसभा को लेकर भाजपा की बड़ाई चिंता

भाजपा के हाथ से लगातार खिसक रहे विभिन्न राज्यों की सत्ता का बाग डोर से नरेंद्र मोदी सरकार के लिए आने वाले दिनों में बड़ा संकट खड़ा हो सकता है पिछले वर्ष से हो रहे विधानसभा चुनाव के बाद भाजपा ने मध्य प्रदेश राजस्थान छत्तीसगढ़ और झारखंड जैसे राज्यों को अपने हाथों से खुद दिया है वही दूसरी तरफ हरियाणा तथा गुजरात जैसे राज्य में भी प्रदर्शन निराशाजनक रहा है विधायकों की लगातार हो रही कमी से अस्पष्ट हो गया है कि आने वाले राज सभा चुनावों के दौरान भाजपा का राज्यसभा में सीटें घटेगी धारा 370 सीए एनआरसी जैसे मुद्दों पर संशोधन विधेयक को राज्यसभा में पास करवाने में भाजपा की चिंताएं इसलिए बढ़ रही है कि पहले से बहुमत का अभाव झेल रही उनका दल यदि राज्यसभा में अपनी चीतों को बरकरार नहीं रख सकती तो आने वाले दिनों में उन कई मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है गज्जू में चुनाव हारने के अलावे आसाम में इन आशिक को लेकर खड़ा विरोध तथा उत्तराखंड के स्थानीय निकाय चुनाव में खराब प्रदर्शन भी भाजपा के चिंता का कारण बना हुआ है

तो बिहार में मिलेगी स्थानीय नेताओं को तरजीह?

लगातार विधानसभा चुनाव में भाजपा को मिल रही हार के बाद केंद्रीय नेतृत्व स्थानीय नेताओं को तरजीही देने का मन बना रही है। सूत्रों के अनुसार भाजपा के हार का एक प्रमुख कारण ऊपर से राज्यों में थोपे जा रहे मुख्यमंत्री रहा है। झारखंड एक आदिवासी बहुल राज्य है इसके बावजूद 2014 में बहुमत हासिल करने के बाद केंद्रीय नेतृत्व में ओबीसी से आने वाले रघुवर दास को मुख्यमंत्री बना दिया। उसी तरह मराठा बहुल राज महाराष्ट्र में ब्राह्मण परिवार से आने वाले देवेंद्र फोन फडण्वीस को विधायक दल का नेता बना दिया गय। जाट बहुल हरियाणा में खान्नी पंजाबी मदनलाल खट्टर को मुख्यमंत्री बनाया गया। जिसके चलते वहां प्रदर्शन अच्छा करने में भाजपा विफल रही। पाटीदार समुदाय की बहुल्य वाले गुजरात में भी विजय रुपानी को मुख्यमंत्री बनाया गया जो जैन परिवार से आते हैं। यही कारण है कि उम्मीद के अनुसार गुजरात में भी भाजपा को सीटें हासिल नहीं हुई थी। इन सभी को ध्यान रखते हुए केंद्रीय नेतृत्व इस बात पर गंभीरता से विचार कर रहा है कि बिहार सहित अन्य राज्यों में होने वाले आगामी चुनावों के दौरान स्थानीय जनाधार वाले नेताओं को तरजीह दी जाए।

सत्ता बदलते ही झारखंड में उड़ी जेल मेनुअल की धज्जियां

बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री और राष्ट्रीय जनता अध्यक्ष लालू प्रसाद यादव चारा घोटाले में सजा पाने के बाद रांची जेल में बंद हैं। उन्हें चार अलग-अलग मामले में सजा हुई है। इस समय इलाज के लिए उन्हें रिम्स में रखा गया है। झारखंड में विधानसभा चुनाव के बाद महागठबंधन को बहुमत मिलते ही वहां लालू प्रसाद यादव को लेकर जेल मेनुअल की धज्जियां उड़ने लगी है। लालू प्रसाद यादव से मुलाकातियों को मिलने का दिन शनिवार निर्धारित है। और एक सप्ताह में उनसे अधिकतम 3 आदमी ही मिल सकते हैं। लेकिन जेल के नियमों को नजरअंदाज कर गुरुवार यानि 26 दिसम्बर को झारखंड के भावी मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन उनसे मिलने पेइंग वार्ड में पहुंचे। उनके मुलाकात के बाद बिहार के पूर्व मंत्री नरेंद्र सिंह, राजेंद्र सिंह, सहित आधा दर्जन से अधिक लोगों ने मुलाकात की। पेइंग वार्ड का बरामदा जनता दरबार के रूप में सजा दिखा। लालू प्रसाद यादव पूरी तरह पुराने रूप में दिखे। पुलिसकर्मी भी किसी को रोकटोक नहीं कर रहे थे। संबंध में बिरसा मुंडा केंद्रीय कारा के कारा अधीक्षक अशोक चौधरी ने कहा थी ऐसी जानकारी नहीं मिली है, और यदि ऐसा हुआ है तो जांच कर दोषियों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी।

के केंद्रीय नेतृत्व ने राज्य बनाने का काम किया है और फिर झारखंड का इतिहास यह भी रहा है कि सिटींग सीएम पुनः कभी नहीं आए।

इस बावत जब मैंने झारखंड में भाजपा को मिली करारी हार की बजह पूर्व मुख्यमंत्री रघुवर दास से पुछा तो उन्होंने कहा कि चुनाव में हार-जीत लोकतंत्र की खूबसूरती होती है। उन्होंने बताया कि भाजपा के लिए सत्ता सेवा का साधन है, साध्य नहीं। हमारा लक्ष्य जनता की सेवा करना है,उसे हम सदैव करते आए हैं और करते रहेंगे।उन्होंने कहा कि हमारी सरकार में अंत्योदय के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए लगातार कार्य किया गया है। सरकार की योजनायें गांव, गरीब, किसान, दलित, शोषित, वंचितों को समर्पित रही है। चुनावी परिणाम पर उन्होंने कहा कि विपक्ष हमारे खिलाफ दुष्प्रचार और अफवाह फैलाने में सफल रहा। विपक्ष मुद्दों पर नहीं सफल हुआ तो निजी हमलों पर उतर गया। उन्होंने व्यक्तिगत आरोप-प्रत्यारोप को राजनीति में शोभनीय बताया और कहा कि मुझे छत्तीसगढ़ी कहकर अपमानित किया गया, जबकि मैं झारखंड में पैदा होकर मजदूर परिवार में पला-बढ़ा हूँ और राजनीति में सेवा भाव को लेकर आया।उन्होंने बताया कि एक कार्यकर्ता के रूप में वे सदैव पार्टी की सेवा करते लहे हैं और इसे आगे भी जारी रखेंगे। नई सरकार पर श्री दास कहा कि अच्छे कार्यों पर सदा समर्थन करता रहूंगा, और जनविरोधी नीतियों के खिलाफ पार्टी सदैव संघर्ष करती रही है और करती रहेगी।

वहीं झारखंड के नए मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने बताया कि उन्होंने पिछले 40 दिनों में 182 रैलियां व सभाएं और रोड शो के साथ- साथ अनगिनत नुक्कड़ सभाएँ की हैं। उन्होंने बताया कि महागठबंधन की एकजुटता और उनकी मेहनत व संघर्ष के बदौलत आज फासीवादी पार्टी भाजपा की पराजय और महागठबंधन की जीत हुई है। उन्होंने बताया कि वे अखबारों में बड़े-बड़े इश्तेहार नहीं दे पाए,उन्होंने टी.वी.पर हर मिनट विज्ञापन नहीं दिया,क्योंकि वे गरीब/शोषित और हर झारखण्ड की आवाज हैं और उनके पास धन-बल और

छल नहीं है। उन्होंने कहा कि झारखंड में भाजपा ने केंद्र से लेकर दूसरे राज्यों तक के स्टार प्रचारकों की फौज खड़ी कर दी थी और धन-बल व छल को पानी की तरह बहाया। लेकिन इस बार चुनाव झारखण्ड की जनता खुद लड़ रही थी। वे तो सिर्फ. उनकी आवाज बनकर जनता के गुस्से,सपनों और उनकी सोच को परवाज दे रहे थे।अंततः जीत झारखंड के आम लोगों की हुई।

पूर्व में भाजपा सरकार के कार्य व क्रियाकलापों की उन्होंने विस्तारपूर्वक चर्चा करते हुए कहा कि जब भाजपा देश में अनुबंधकर्मी व्यवस्था लेकर आई थी,तभी उसने जता दिया था कि लोगों की आशाओं व आकांक्षाओं और सपनों के लिए उसके दिलों में कितनी जगह है...?

आम आदमी उनके लिए महज खिलौना मात्र थे,हैं और रहेंगे। उन्होंने बताया कि 5 साल लाखों अनुबंधकर्मियों को-पारा शिक्षक, आंगनबाड़ी, होमगार्ड, रसोइया, जलसहिया, मनेरगाकर्मी, ई-मैनेजर आदि को इस दमनकारी रघुवर सरकार ने प्रताड़ित किया है,यह झारखंड के इतिहास में काले अक्षरों में लिखा जाएगा।श्री सोरेन ने कहा कि वे एक झारखंडी बेटा हैं,इसलिये मैं कोई वादा नहीं करूंगा बल्कि एक मजबूत इरादों के साथ संकल्प लेता हूँ कि हर अनुबंधकर्मियों को उनका हक-हकूक और उनका अधिकार दिलाकर दम लूंगा। अनुबंधकर्मियों की नौकरी को स्थाई कर उसे 60 साल तक किया जाएगा,साथ ही समान कार्य का समान वेतन भी लागू करूंगा।उन्होंने कहा कि झारखंड से "अनुबंधकर्मी" शब्द हटाना उनकी पहली प्राथमिकता होगी। उन्होंने कहा कि झारखंड वासियों का प्यार व सम्मान पाकर वे अभिभूत हैं। उन्होंने लोगों से प्रार्थना किया है कि वे फूलों के 'बूके' देकर उन्हें बधाई न दें बल्कि ज्ञान से लबालब 'बूक' देकर अपना स्नेह व आशीर्वाद देने की कृपा करें,क्योंकि उन्हें तब बहुत बुरा लगता है- जब वे आपके दिये बधाई को संभाल नहीं पाते। उन्होंने कहा कि इस ज्ञानवर्धन वाली पुस्तकों को संभालकर वे एक पुस्तकालय बनाना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि वे जनता की उम्मीदों की कसौटी पर खड़े उतरने का पूरा प्रयास करेंगे।

अब यहाँ पर ये कहना गलत नहीं होगा कि 2014 के लोकसभा और फिर लगातार कुछ राज्यों के विधानसभा चुनावों में मिली सफलता ने भाजपा नेताओं को अभिमानी बना दिया था और खासकर राजनीति में अहम और वहम की भुमिका अदा करने वाले राजनीतिज्ञ मूंह के बल गिरते रहे हैं । नरेंद्र मोदी और अमित शाह के सामने शायद ही कोई भाजपा नेता सही बात कह पाने में और सही तस्वीर रख पाने में समर्थ है और यह तो हम जानते हैं कि जिस देश-राज्य, घर-समाज,पार्टी-संगठन आदि में मुखिया के हर कथनी व करनी पर केवल हाँ में हाँ मिलाई जाती है वहाँ पर विनाश होना तय हो जाता है। भारतीय जनता पार्टी लोकसभा चुनाव के साथ ही साथ विभिन्न प्रदेशों के विधानसभा चुनाव भी नरेंद्र मोदी के नाम पर ही लड़कर जीत जाने के लिए आश्वस्त थी और कुछ प्रदेशों में यह आश्वस्ता सफल हुआ भी।

परंतु झारखंड चुनाव परिणाम यह बताने के लिए काफी है कि आम जनता ने अपना मिजाज बदलकर अब प्रजातंत्र का वास्तविक लाभ उठाना सीख लिया है। वह अब विवेकशील होकर मतदान करते हैं,न कि भावना में बहकर। वक्त की नजाकत को समझकर अब खासकर युवा वर्ग जागरूक हो रहे हैं। राजनीतिक दलों को यह समझना होगा कि लोकसभा चुनाव और विधानसभा चुनाव में फर्क होता है। दोनों चुनाव के मुद्दे अलग-अलग होते हैं।विधानसभा चुनाव में स्थानीय मुद्दे व स्थानीय समस्याएं होती हैं। खासकर भारतीय जनता पार्टी को यह समझना होगा कि लोगों को पहले रोटी,कपड़ा और मकान जैसी मूल समस्याओं का समाधान चाहिए। राष्ट्रवाद, धारा 370,मंदिर-मस्जिद, एनआरसी, सीएए जैसे मुद्दे उसके बाद के हैं।इसमें कोई शक नहीं है कि भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने तीन तलाक,धारा 370 की समाप्ति, राम जन्मभूमि विवाद का स्थाई समाधान कर लंबे समय से चले आ रहे विवादित मुद्दों को सुलझाने का काम किया है। परंतु वहीं दूसरी ओर हम यह देख रहे हैं कि नरेंद्र मोदी की सरकार ने आम लोगों से जुड़ी समस्याओं मसलन शिक्षा,स्वास्थ्य, रोजगार,किसानों की समस्या,मंहगाई आदि के लिए कोई प्रयास नहीं किया। यह अटूट सत्य है कि वादे-इरादों से लोगों को कुछ समय तक नीति और नीयति के चक्कर में बहलाया जा सकता है,परंतु बातों से किसी का पेट नहीं भरता।सिर्फ भाषण देकर हम किसी को रोजी-रोटी नहीं दे सकते। सरकार को समाज के सबसे निचले तबके और मध्यमवर्ग में अपनी पकड़ बनानी होगी और उसके लिए उनकी समस्याओं को सुलझाना होगा।जिस तबके को धारा 370,राम मंदिर और नागरिकता संशोधन अधिनियम समझ में नहीं आती। उसे समझ में आती है सिर्फ रोटी,कपड़ा और मकान। अगले वर्ष जबकि कुछ और राज्यों में विधानसभा के चुनाव होने हैं,भारतीय जनता पार्टी को आम लोगों की मूल आवश्यकताओं को समझना होगा और उसके समाधान के लिए सार्थक प्रयास करने होंगे,नहीं तो कांग्रेस मुक्त हिन्दुस्तान की बात करते-करते कहीं भाजपा ही हाशिये पर न चली जाए। इसके लिए चिंता नहीं चिंतन करने की जरूरत है, यह संकल्प लेकर कि हम जहाँ पर गिरे हैं,वहीं पर उठेंगे।

झारखंड में हार, बिहार में तकरार

अखिलेश कुमार

पिछले हफ्ते झारखंड विधानसभा चुनाव परिणाम से भाजपा को करारी झटका मिला है और इस चुनाव परिणाम का असर बिहार विधानसभा पर भी पड़ने की आशंका जताई जा रही है चुनाव परिणाम के बाद बिहार में राजनीतिक गतिविधियों में अचानक उछाला गया है और तकरार भी शुरू हो गया है झारखंड विधानसभा चुनाव में रघुवर सरकार बुरी तरह परास्त हुई है और भाजपा वहां मात्र 25 सीटों पर सिमट कर रह गई है इस चुनाव परिणाम से जहां भाजपा और भाजपा गठबंधन मैं मंथन शुरू हो गया है वहीं दूसरी तरफ अगले वर्ष अक्टूबर नवंबर महीने में होने वाले बिहार विधानसभा चुनाव को लेकर भी तकरार शुरू हो गई है और झारखंड चुनाव परिणाम को होने वाले आगामी बिहार विधानसभा चुनाव से जोड़कर बहस शुरू हो गया है हालांकि बिहार और झारखंड के स्थानीय मुद्दे अलग-अलग हैं झारखंड में जहां आदिवासी चुनाव के मुख्य मुद्दा बनते हैं तो वहीं दूसरी तरफ बिहार में आज भी जातीय समीकरण हावी है लेकिन झारखंड में महागठबंधन की जीत के बाद बिहार में विधानसभा चुनाव को लेकर महागठबंधन के नेताओं का हौसला बढ़ा है और वे अपनी मतभेदों को भूलकर आपसी सामंजस्य के तहत बिहार विधानसभा चुनाव 2020 को मजबूती से लड़ना चाहते हैं ताकि 15 वर्षों से सत्ता में बैठे नीतीश कुमार को बेदखल किया जा सके इसी बीच भारतीय जनता पार्टी के नेताओं का भी नीतीश कुमार के खिलाफ शुरू की गई बयानबाजी के कई मायने निकाले जा रहे हैं भाजपा के वरिष्ठ नेता और पूर्व केंद्रीय मंत्री संजय पासवान ने जहां एक तरफ कई महीने से नीतीश कुमार के बदले आगामी विधानसभा चुनाव में मुख्यमंत्री का चेहरा भाजपा के तरफ से देने की मांग उठाई है वही झारखंड चुनाव परिणाम के बाद भाजपा के वरिष्ठ नेता और पूर्व विधायक रामेश्वर चौरसिया ने भी कहा है कि नीतीश कुमार के चेहरे से बिहार की जनता अब उठ चुकी है तथा मुख्यमंत्री के तौर पर आगामी विधानसभा चुनाव में नया चेहरा लाना चाहिए झारखंड चुनाव परिणाम के बाद जहां भाजपा के अंदर डर का माहौल पैदा हो गया है तो वहीं दूसरी तरफ नीतीश कुमार इसका बखूबी फायदा उठाना चाहते हैं वह जानते हैं कि भाजपा अकेले विधानसभा चुनाव में नहीं उतरेगी ऐसे में केंद्रीय मंत्रिमंडल में अपनी भागीदारी सुनिश्चित कराने के साथ ही साथ विधानसभा चुनाव में सीटों की अधिक मांग भी वे रखेंगे । सीएए और एन आर सी जैसे मुद्दे पर भाजपा से अलग रास्ता अपनाकर नीतीश कुमार ने यह साफ कर दिया है कि वह किसी भी तरीके से भाजपा के दबाव में आने वाले नहीं हैं बिहार विधानसभा के जिन 5 सीटों पर उप चुनाव हुए उसमें महागठबंधन की मजबूती को लेकर जहां महागठबंधन के हौसले मजबूत हुए हैं वहीं भाजपा और जदयू दोनों अपनी सत्ता बरकरार रखने के लिए नए तरीके से मंथन में लग गए हैं महागठबंधन के नेता का मानना है कि यदि हम लोग साथ मिलकर इमानदारी पूर्वक चुनाव लड़ते हैं तो आगामी विधानसभा चुनाव में महागठबंधन की जीत सुनिश्चित है बिहार विधानसभा में प्रतिपक्ष के नेता तेजस्वी जाधव कहते हैं कि पिछले लोकसभा के चुनाव में संवाद हीनता की कमी के कारण 5 सीटों पर फ्रेंडली उम्मीदवार उतारा गया था इसमें चार सीटें हम हार गए लेकिन आगामी विधानसभा चुनाव में राजद कांग्रेस के साथ ही साथ उपेंद्र कुशवाहा की पार्टी राष्ट्रीय लोक समता पार्टी मुकेश साहनी की वीआईपी पार्टी तथा जीतन राम मांझी की दलों के साथ मिलकर पूरी मजबूती से उम्मीदवार उतारेंगे बिहार विधानसभा चुनाव में भाजपा के तरफ से किन चेहरों को आगे किया जाए इसको लेकर अभी कुछ स्पष्ट नहीं हुआ है लेकिन लंबे समय से बिहार भाजपा का केंद्र बने उपमुख्यमंत्री सुशील कुमार मोदी के प्रति भाजपा के एक बड़े वर्ग में काफी नाराजगी है तथा आरोप लगते रहे हैं कि सुशील मोदी की मनमानी के कारण ही भाजपा बिहार में वैसा प्रदर्शन नहीं कर पाती है जैसा कि यहां भाजपा प्रदर्शन होना चाहिए उम्मीद दिया भी जताया जा रहा है की केंद्रीय नेतृत्व सुशील कुमार मोदी को किनारे कर किसी नए चेहरों को आगामी विधानसभा चुनाव में आगे खड़ा करें कुल मिलाकर झारखंड में बीजेपी की हार हुई है लेकिन झारखंड के इस चुनाव परिणाम के बाद बिहार की राजनीतिक गतिविधियों में हलचल काफी तेज हो गया है और भाजपा का केंद्रीय नेतृत्व में इस पर मंथन शुरू कर दिया है अब देखना यह है की मध्य प्रदेश राजस्थान छत्तीसगढ़ झारखंड तथा महाराष्ट्र में सत्ता गंवाने के बाद भाजपा नेतृत्व बिहार की सत्ता बरकरार रखने के लिए किस रणनीति पर काम कर रही है।

रघुवर के रवैया ने झारखंड में डूबो दी बीजेपी की नैय्या

झारखंड विधानसभा चुनाव में बीजेपी सत्ता से बाहर ही नहीं हुई बुरी तरह से हार भी गई हैं. इस हार का कारण लोकसभा चुनाव में शानदार बहुमत मिलने के बाद बीजेपी की लालच रही है. लालच के कारण बीजेपी ने सरकार में सहयोगी रहे आजसू को गठबंधन में सीटें नहीं दी, जिससे आजसू ने अकेले चुनाव लड़ा. दूसरा कारण रघुवर दास का रवैया रहा है. जिसके कारण भाजपा नेता के साथ ही उनके समर्थक की नाखुश थें. रघुवर के रवैया से नाराज थे कार्यकर्ता

रघुवर दास पर तानाशाह का आरोप तो पहले ही जेएमएम लगा चुकी थी. फिर भी उनका रवैया ठीक नहीं था. जिसके कारण बीजेपी के नेता उनसे खुश नहीं थे. यही कारण रहा की मंत्री सरयू राय समेत कई नेता उनसे नाराज चल रहे थे. सरयू तो खुलकर विरोध में आए, लेकिन पर्दे के पीछ रहने वाले नाराज नेताओं ने खेल कर दिया. जिसका खामियाजा रघुवर को एक बार फिर सीएम की कुर्की के पद खोना पड़ा.

लालच में दे दिया 65 पार का नारा

इस साल हुए लोकसभा के चुनाव में भाजपा ने 11 सीटें जीती और उनकी सहयोगी दल आजसू ने 1 सीट पर दर्ज की थी. यहां पर कुल 14 सीटें थी. लेकिन कुछ माह के बाद ही यहां पर बीजेपी की बुरी तरह से हार हुई है. इसका कारण अधिक लालच रहा है. बीजेपी ने इस बार 65 पार का नारा दिया था. इस 65 पार के चक्कर में अपने सहयोगी पार्टियों को भी किनारा कर दिया. अंत में आजसू अकेले 40 से अधिक सीटें पर चुनाव लड़ी. लोजपा को भी बीजेपी ने भाव नहीं दिया तो लोजपा भी अकेले चुनाव मैदान में उतर गई. जिसका खामियाजा बीजेपी को भुगतना पड़ा हैं.

अपने ही कैबिनेट के सहयोगी सरयू राय से चुनाव हार गए रघुवर दास, जानिए कौन हैं राय

झारखंड विधानसभा चुनाव में सबसे बड़ा उलटफेरे जमशेदपुरे पूर्व की सीट पर हुआ. जमशेदपुर पूर्व की सीट से मौजूदा मुख्यमंत्री रघुवर दास अपने कैबिनेट में सहयोगी रहे पूर्व मंत्री सरयू राय से चुनाव हार गए हैं. बीजेपी से बागी हो कर निर्दलीय चुनाव लड़े सरयू राय ने हरा दिया है. जमशेदपुर पूर्व की सीट सबसे हॉट सीट मानी जा रही थी और पूरे चुनाव में सबकी निगाहें इस सीट पर टिकी हुई थीं. जमशेदपुरे पूर्व की सीट से सरयू राय के चुनाव लड़ने के ऐलान की वजह से यहां मुकाबला दिलचस्प हो गया था. हालांकि, रघुवर सरकार में सरयू राय खाद्य और वितरण विभाग के मंत्री थे लेकिन लगातार अपनी ही सरकार के खिलाफ मोर्चा

खोले जाने की वजह से पार्टी ने उन्हें बीजेपी से टिकट देने से इनकार कर दिया. नतीजतन सरयू राय जमशेदपुर पूर्व से निर्दलीय चुनाव मैदान में उतर गए और उन्होंने रघुवर दास के सियासी करियर पर ग्रहण लगाने का काम किया.

सरयू राय झारखंड बनने के बाद साल 2004, 2009 और 2014 में जमशेदपुर पश्चिमे से चुनाव लड़ते थे. लेकिन इस बार सियासी बदले की वजह से उन्होंने जमशेदपुर पूर्व की मुख्यमंत्री की सीट से उतरकर चुनावी मुकाबले को रोमांचक बना दिया.भ्रष्टाचार के खिलाफ बिगुल फूंकने में हमेशा से आगे रहने वाले सरयू राय साल 1962 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़े और इमरजेंसी लागू होने के बाद पूरी तरह वो बीजेपी में शामिल हो गए. पहली दफा उन्हें बिहार में एमएलसी बनाया गया और झारखंड के निर्माण के बाद बीजेपी की अल्पमत सरकार को चलाने में उनकी भूमिका बाहर से काफी सराहनीय रही.

सरयू राय भले ही बीजेपी में रहकर चुनाव लड़ते रहे हैं लेकिने छात्रजीवने से उनकी दोस्ती नीतीश कुमार से काफी गहरी रही है. कहा जाता है कि पटना यूनिवर्सिटी में छात्र जीवन के दरमियान दोनों की दोस्ती खूब परवान चढ़ी और आपातकाल के दरमियान दोनों ने इंदिरा सरकार के खिलाफ मोर्चा खोलने में जोरदार भूमिका निभाई. यही वजह है कि दस साल पहले साल 2009 में जब सरयू राय जमशेदपुर पश्चिम से चुनाव हारे तो नीतीश कुमार ने उन्हें अपने प्रदेश बिहार से राजनीति करने का न्यौता दे डाला.

सरयू राय को टिकट नहीं देने को विपक्ष ने बनाया मुद्दा लेकिन ये बीजेपी और उनकी अपनी विचारधारो के प्रति प्रतिबद्धता थी कि उन्होंने बीजेपी छोड़कर जाना पसंद नहीं किया. लेकिन साल 2019 में टिकट नहीं दिए जाने से नाराज सरयू राय ने महात्मा गांधी की बातों को याद करते हुए कहा कि एक समय आता है जब कानून का उल्लंघन करना फर्ज बन जाता है.

कहा जाता है अपनी ही पार्टी की सरकार के खिलाफ उनके रवैये से नाराज होकर खुद पार्टी अध्यक्ष अमिते शाह ने उन्हें टिकट देने से इनकार कर दिया. उन्हें टिकट नहीं दिए जाने पर जेडीयू के नेता नीतीश कुमार ने काफी हैरानी जताई.जमशेदपुर पूर्व से सरयू राय भले ही निर्दलीय चुनाव लड़े लेकिन उनका समर्थन लालू प्रसाद की पार्टी आरजेडी, नीतीश कुमार की पार्टी जेडीयू और हेमंत सोरेन की पार्टी जेएमएम ने भी किया.सरयू राय का भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ने का रिकार्ड इतना जबर्दस्त है कि उनकी वजह से तीन-तीन मुख्यमंत्रियों को सलाखों के पीछे जाना पड़ा है. इन तीन मुख्यमंत्रियों में लालू यादव और जगन्नाथ मिश्र चारा घोटाले में और मधु कोड़ा 8000 करोड़ के घोटाले में जेल भेजे जा चुके हैं.

16 जुलाई 1951 में शाहबाद जिले के इटाढ़ी ब्लॉक में जन्मे सरयू राये मध्यम वर्गीय परिवार से ताल्लुक रखते हैं. इनके पिता किसान हैं वहीं माता गृहणी हैं. सरयू राय ने भौतिक शास्त्र में ग्रेजुएशन किया वहीं स्पैक्ट्रोस्कोपी में मास्टर्स डिग्री हासिल कर साल 1972 में अपनी पढ़ाई को पूरा किया. सरयू राय राजनीति और विज्ञान की गहरी जानकारी रखते हैं और साफ सुथरी छवि की वजह से अपने धुर विरोधियों के बीच भी बेहद सम्मान की नजरों से देखे जाते हैं. यही वजह है कि सरयू राय ने जैसे ही रघुवर दास के खिलाफ जमशेदपुर पूर्व से नामांकन भरा तो जेएमएम समेत कई दल उनके समर्थन में आ खड़े हुए जबकि उनकी प्रतिबद्धता बाकी के प्रदेश में दूसरे दलों के साथ है.

विकास और विश्वास के साथ रघुवर सरकार के द्वारा कायाकल्प करने के बाद भी आम जनता ने उन्हें नकार दिया और झारखंड राज्य में भारतीय जनता पार्टी की हार हुई। यह हार पार्टी के लिए एक सबक है। यूं तो हार और जीत लगा ही रहता है, लेकिन हर हार जीत के बहुत सारे कारण होते हैं सर! खासकर केंद्रीय नेतृत्व का किसी खास नेतृत्व पर बहुत ज्यादा भरोसा कर लेना, मुख्य कारण है।वैसे बहुत सारे कारण हैं, जिसे कुछ इस तरह से अवलोकन किया जा सकता है:-

1. दूसरे पार्टी के नेताओं को पार्टी में मिलाकर उसे टिकट देना, जिससे जमीनी कार्यकताओं में निराशा होना।
2. वर्तमान सरकार के रहते जितने भी विधानसभा के बाय इलेक्शन हुए उसमें भाजपा का एक भी जगह नहीं जीतना, जिसका केंद्रीय नेतृत्व ने बिना समीक्षा किए नजर अंदाज कर दिया।
3. भाजापा से क्षुब्ध हुए झारखंड के प्रथम मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी को भाजपा में सम्मिलित करने के लिए केंद्रीय नेतृत्व का कोई प्रयास नहीं करना।
4. अर्जुन मुंडा को राज्य की राजनीति से हटाकर केंद्र में ले जाना।
5. भाजपा के भीष्म पितामह कहे जाने वाले स्वर्गीय कैलाशपति मिश्र के निकटतम, जिन्हे चाणक्य भी कहा जाता है. श्री सरजू राय जी को ऐन मौके पर पार्टी के टिकट से वंचित कर देना।
6. झारखंड राज्य के गठन के बाद से निकट सहयोगी रहे आजसू से चुनाव के वक्त ही दूर हो जाना।
7. रघुवर दास जी के मुंह में कभी हंसी नहीं आना एवं सभी लोगों से मृदुभाषी न होकर तानाशाह जैसा व्यवहार करना।
8. बेरोजगारी को दूर करने के लिए कोई योजना नहीं बनाना।
9. झारखंड के जमीनी सच्चाई के बारे में सही आकलन करके केंद्रीय नेतृत्व को नहीं बताना।
10. प्याज के भाव,जो आग की तरह बढ़ गई है, उसके लिए केंद्रीय नेतृत्व को आम सभा में कोई आश्वासन न देना।
11.आदिवासी समाज से मुख्यमंत्री का न होना।
12. पार्टी के संगठन में स्थानीय तेजतर्रार नेता को महत्वपूर्ण पद पर न रखना।
13 जदयू एवं लोक जनशक्ति पार्टी के महत्वपूर्ण नेताओं से संपर्क न करके उन से तालमेल न रखना।
14.भाजपा के जमीनी विधायक को पार्टी में न मिलाना जिससे उन्हें दूसरे पार्टी में जाकर जीतना ।
15. बिहार के तर्ज पर रोस्टर बनाकर सरकारी नौकरियों में बहाली न करना, मेरी समझ में कुछ इन्हीं सब कारणों से भाजपा की शर्मनाक हार हुई है। इसमें पूर्ण सुधार की आवश्यकता है एवं इन्हें यहाँ पर नए सिरे से संगठन को बनाना होगा। झारखंड की जनता यह भली-भांति जानती है ,कि उन्हें भारतीय जनता पार्टी के केंद्रीय नेतृत्व ने राज्य बनाने का काम किया है ।

और फिर झारखंड का इतिहास यह भी रहा है कि सिटींग सीएम पुनः नहीं आते।बहरहाल चिंता नहीं चिंतन करने की जरूरत है।

"गिरे हैं जहाँ पर,उठेंगे वहीं"

असंतोष बदल सकता है चुनावी गणित

हाल भागलपुर जिला के सात विधानसभा क्षेत्रों का

भागलपुर के सातों विधानसभा की बदहाली के बीच 2020 के विधानसभा चुनाव की हो रही तैयारी

गौतम सुमन गर्जना

आगामी 2020 में होने वाले विधानसभा चुनाव को लेकर सभी पार्टियां अपनी-अपनी सियासी चालें निर्धारित करने लग गई हैं। इसके लिए पार्टियां अपनी पार्टी की रणनीतियां तय कर रही है,तो दूसरी तरफ एक-दूसरे को चित करने के प्रयास में अभी से ही जीतने के लिए कमर कस रही है। इसी कडी.में आईये हम बात करें भागलपुर लोकसभा क्षेत्र के अनतर्गत आने वाले 3 अनुमंडल भागलपुर सदर,कहलगांव एवं नवगछिया के 16 प्रखंड व अंचल नारायणपुर, बिहपुर, खरीक, नवगछिया, रंगरा, गोपालपुर, इस्माइलपुर, पीरपैंती, कहलगांव,सन्हौला, सबौर, नाथनगर, सुल्तानगंज, शाहकुंड, गोराडीह, जगदीशपुर, जिनमें 242 पंचायत व 1515 गांव आते हैं और यहां 7 विधानसभा क्षेत्र क्रमशः 152- बिहपुर,153- गोपालपुर, 154- पीरपैंती(अ०जा०), 155- कहलगांव, 156- भागलपुर, 157- सुल्तानगंज, 158-नाथनगर हैं। इस संसदीय क्षेत्र में पूर्णतः अंगिका भाषी और अंशतः उर्दू,भोजपुरी, मगही, मारवाड़ी व मैथिली भाषी रहते हैं। इन सातों विधानसभा क्षेत्र को यदि हम देखें तो इन सातों विधानसभा क्षेत्रों में कांग्रेस के 2 उम्मीदवार हैं, भागलपुर से अजीत शर्मा और के कहलगांव से सदानंद सिंह। अजीत शर्मा जहां कई बार चुनाव लड़कर दूसरी बार विधानसभा पहुंचे हैं, वही सदानंद सिंह ने कहलगांव से 8 बार अपनी चुनावी जीत हासिल की है और वे आज भी कांग्रेस के कद्दावर नेता माने जाते हैं। भागलपुर जिले की दो विधानसभा क्षेत्र में राजद का कब्जा है, जिसमें पीरपैंती से रामविलास पासवान जो पहली बार वहां से जीत हासिल की है वहीं बिहपुर से राजद की विधायक वर्षा रानी ने भी पहली बार पिछले चुनाव में अपनी जीत हासिल की है,तब उनके पति शैलेश कुमार उर्फ बुलो मंडल राजद से ही भागलपुर के सांसद थे।इस संसदीय क्षेत्र से जदयू के तीन विधायक अभी भी बिहार विधानसभा में हैं, जिनमें सुल्तानगंज से सुबोध राय जो दो बार चुनाव जीते हैं, गोपालपुर से नरेन्द्र कुमार नीरज उर्फ गोपाल मंडल और नाथनगर से लक्ष्मीकांत मंडल फिलहाल विधानसभा के सदस्य हैं।

अब अगर पार्टी लहर की बात करें तो फिलहाल किसी भी पार्टी की लहर इन विधानसभा क्षेत्रों में अभी नहीं है, क्योंकि चुनाव होने में अभी 1 साल का समय शेष है। अगर हम केंद्रीय नेतृत्व की बात करें,तो भागलपुर जिले के 7 विधानसभा क्षेत्रों में कुल मिलाकर तीन पार्टियों की पकड़ है और यह पार्टियां हैं- जदयू-राजद और कांग्रेस। वर्तमान में यहां भारतीय जनता पार्टी का एक आगामी 2020 में होने वाले विधानसभा चुनाव को लेकर सभी पार्टियां अपनी-अपनी सियासी चालें निर्धारित करने लग गई हैं। इसके लिए पार्टियां अपनी पार्टी की रणनीतियां तय कर रही है,तो दूसरी तरफ एक-दूसरे को चित करने के प्रयास में अभी से ही जीतने के लिए कमर कस रही है। इसी कडी.में आईये हम बात करें भागलपुर लोकसभा क्षेत्र के अनतर्गत आने वाले 3 अनुमंडल भागलपुर सदर,कहलगांव एवं नवगछिया के 16 प्रखंड व अंचल नारायणपुर, बिहपुर, खरीक, नवगछिया, रंगरा, गोपालपुर, इस्माइलपुर, पीरपैंती, कहलगांव, सन्हौला, सबौर, नाथनगर, सुल्तानगंज, शाहकुंड, गोराडीह, जगदीशपुर, जिनमें 242 पंचायत व 1515 गांव आते हैं और यहां 7 विधानसभा क्षेत्र क्रमशः 152- बिहपुर,153- गोपालपुर, 154- पीरपैंती(अ०जा०), 155- कहलगांव, 156- भागलपुर, 157- सुल्तानगंज, 158- नाथनगर हैं। इस संसदीय क्षेत्र में पूर्णतः अंगिका भाषी और अंशतः उर्दू, भोजपुरी, मगही, मारवाड़ी व मैथिली भाषी रहते हैं। इन सातों विधानसभा क्षेत्र को यदि हम देखें तो इन सातों विधानसभा क्षेत्रों में कांग्रेस के 2 उम्मीदवार हैं, भागलपुर से अजीत शर्मा और के कहलगांव से सदानंद सिंह। अजीत शर्मा जहां कई बार चुनाव लड़कर दूसरी बार विधानसभा पहुंचे हैं, वही सदानंद सिंह ने कहलगांव से 8 बार अपनी चुनावी जीत हासिल की है और वे आज भी कांग्रेस के कद्दावर नेता माने जाते हैं। भागलपुर जिले की दो विधानसभा क्षेत्र में राजद का कब्जा है, जिसमें पीरपैंती से रामविलास पासवान जो पहली बार वहां से जीत हासिल की है वहीं बिहपुर से राजद की विधायक वर्षा रानी ने भी पहली बार पिछले चुनाव में अपनी जीत हासिल की है,तब उनके पति शैलेश कुमार उर्फ बुलो मंडल राजद से ही भागलपुर के सांसद थे।इस संसदीय क्षेत्र से जदयू के तीन विधायक अभी भी बिहार विधानसभा में हैं, जिनमें सुल्तानगंज से सुबोध राय जो दो बार चुनाव जीते हैं, गोपालपुर से नरेन्द्र कुमार नीरज उर्फ गोपाल मंडल और नाथनगर से लक्ष्मीकांत मंडल फिलहाल विधानसभा के सदस्य हैं।

अब अगर पार्टी लहर की बात करें तो फिलहाल किसी भी पार्टी की लहर इन विधानसभा क्षेत्रों में अभी नहीं है, क्योंकि चुनाव होने में अभी 1 साल का समय शेष है। अगर हम केंद्रीय नेतृत्व की बात करें,तो भागलपुर जिले के 7 विधानसभा क्षेत्रों में कुल मिलाकर तीन पार्टियों की पकड़ है और यह पार्टियां हैं- जदयू-राजद और कांग्रेस। वर्तमान में यहां भारतीय जनता पार्टी का एक भी उम्मीदवार विधानसभा में मौजूद नहीं है,जबकि इससे पहले भागलपुर विधानसभा क्षेत्र से अश्विनी चौबे लगातार कई बार चुनाव जीतते रहे थे। पीरपैंती से रामविलास पासवान के जीतने के पहले अमन पासवान भारतीय जनता पार्टी के टिकट पर ही जीत हासिल की थी।

वर्तमान में यदि हम भागलपुर विधानसभा क्षेत्र के विकास की बात करें तो भागलपुर शहर को स्मार्ट सिटी का रूप दिया गया है लेकिन स्मार्ट सिटी घोषित होने को आज 3 वर्ष हो गए, लेकिन काम शुन्य मात्र भी शुरू नहीं हुआ

156, भागलपुर विधायक अजीत शर्मा

है। स्मार्ट सिटी के नाम पर जगह-जगह बड़े-बड़े होर्डिंग लगा दिए गए हैं महज यह कहते हुए कि स्मार्ट सिटी में आपका स्वागत है। बस उसके अलावा कुछ नहीं हुआ। न तो सड़कें दुरुस्त हुई,न सड़कें चौड़ी हुई, न नालों का उद्धार हुआ, जो पुराने बने-बनाए थे,उसकी थोड़ी बहुत मरम्मत करके इसे ही स्मार्ट सिटी नाम का अमलीजामा पहनाने की कोशिश की जा रही है। सबसे बड़ी चिंता शहर में पेयजल की आपूर्ति का अभी अभाव है,शहर की मूलभूत सुविधाओं जैसे पानी, बिजली, आवास, शिक्षा, चिकित्सा एवं बंद पडे. कल-कारखानाओं को चालू करने-कराने की व्यवस्था पर लोग आठ-आठ आंसू बहा रहे हैं और पिछले 2 वर्षों से भागलपुर शहर डेंगू की चपेट में है। जहां तक विकास व काम की बात है, तो वह हम कह सकते हैं कि वह अभी भी वहीं पर है, जहां पर आज से 5 वर्ष पूर्व थी। भले ही बड़े-बड़े दावे या दिखावे किए जा रहे हों पर वह गिनती में कहीं ठहरती नहीं है। रेल मंडल कार्यालय,भोलानाथ पुल पर ओवरब्रिज बनाने, हवाई सेवा चालू करने एवं हाईकोर्ट की खंडपीठ स्थापना को लेकर यहां केवल राजनीति होती रही है और इन्हीं राजनीति के बलबूते लोग सत्ता के गलियारे तक पहूंचकर सत्ता सुख का आनन्द भोगते रहे हैं।

158,नाथनगर विधायक लक्ष्मीकांत मंडल

नाथनगर विधानसभा क्षेत्र जात-पात के नाम पर जदयू का गढ़ माना जाता रहा है। कहा जाता है कि जदयू यहां से किसी ऐरे गैरे को भी उम्मीदवार जाति के नाम पर बना दे, निश्चित रूप से जीत उसी की होगी और आज तक यही होता भी रहा है। पिछले कई दशकों से नाथनगर के विधायक सत्ताधारी होने के बावजूद भी यहां विकास की नींव तक नहीं डाल पाए,जिस कारणवश नाथनगर अनाथनगर की स्थिति में है। यहां पर हमेशा से बाढ़ व सिंचाई के संकट पर वोट की राजनीति होती रही है।

परिणाम स्वरूप नाथनगर विस क्षेत्र आज भी कई गंभीर समस्याओं से उबर नहीं पाया है। पहले से जो संकट यह इलाका झेलता रहा है,उसे हर साल खासकर दियारा के इलाके में बाढ़ की त्रासदी लाखों की आबादी झेलती

रहती है। बैरिया, हरिदासपुर, गोसाईंदासपुर, शंकरपुर आदि इलाके के लोगों का घर कमोबेश हर साल बाढ़ में डूब जाता है। हजारों एकड़ में लगी फसल बर्बाद हो जाती है, दूसरी ओर सुखाड़ की मार अलग। सिंचाई के संकट से परेशान किसानों को यहां की नदियों ने भी साथ छोड़ दिया है। इंफ्रास्ट्रक्चर के नाम पर न तो भागलपुर में, न ही नाथनगर में और न ही इस क्षेत्र के सातों विधानसभा क्षेत्र में अब तक कुछ हुआ है। सारे उम्मीदवारों की घोषणाएं हवा-हवाई हो गई हैं। हां इस क्षेत्र के जितने भी उम्मीदवार हैं, वह केंद्रीय नेतृत्व के भरोसे अपनी नैया पार लगाना चाहते हैं।

53,गोपालपुर विधायक नरेन्द्र कु.नीरज उर्फ गोपाल मंडल

गोपालपुर क्षेत्र में अभी भी दबंगों की दबंगई चलती है। शासन प्रशासन उस तक पहुंचते-पहुंचते रह जाता है। इस विधानसभा क्षेत्र में आने वाला नवगछिया अनुमंडल मुख्यालय सालों से जिला बनने की बाट जोह रहा है। यह 1972 से पुलिस जिला है, इसके बाद भी अपराध यहां की सबसे बड़ी समस्या है। पिछले तीन-चार सालों में यह क्षेत्र अपराध जोन बन चुका है। आए दिन हत्या की घटनाएं होती रहती हैं। कई चर्चित घटनाओं के कारण यह इलाका सुर्खियों में रहता है।

इस विधानसभा क्षेत्र में नवगछिया, इस्माइलपुर, रंगरा, गोपालपुर चार प्रखंड हैं जिनमें 36 पंचायत हैं,लेकिन अधिकांश पंचायत पिछड़ापन का शिकार हैं। कटाव यहां की एक बड़ी समस्या है। करीब 20 पंचायत कटाव की चपेट में है।कमलाकुंड, मदरौनी जैसे गांव कोसी में विलीन हो गए हैं। कटाव निरोधी काम के नाम पर अब तक 50-60 करोड़ से ज्यादा खर्च हो चुके हैं। इसका बड़ा हिस्सा दियारा क्षेत्र है। यहां सड़क और बिजली की भारी कमी है। नवगछिया से इस्माइलपुर के लिए अच्छी सड़क नहीं है। नगरह जाने वाली सड़क वर्षों से अधूरी है।दियारा क्षेत्र में कलाय मुख्य फसल है। यह क्षेत्र केला और मकई की खेती के लिए भी जाना जाता है। दोनों फसलों पर आधारित प्रसंस्करण उद्योग लगाने की कई बार घोषणा हुई, लेकिन अमल नहीं हुआ। बाहर ले जाने की सही व्यवस्था नहीं होने के कारण किसानों को उचित मूल्य नहीं मिल रहा है। विगत सालों में यहां नवगछिया स्टेशन को मॉडल स्टेशन बनाने का बड़ा काम यहां दिख रहा है। राजधानी एक्सप्रेस समेत कई महत्वपूर्ण ट्रेनों का ठहराव हुआ है। इस रेलखंड में विद्युतीकरण का काम भी अंतिम चरण में है। एनएच 31 को बेहतर शक्ल मिलने से राजधानी पटना जाना- आना आसान हुआ है। सभी प्रखंडों में बिजली ग्रिड बनाने का काम चल रहा है। कटाव रोकने के लिए बांध बनाने का काम भी चल रहा है। यहां कटाव और बाढ़ रोकने के लिए प्रभावकारी योजना बननी चाहिए। बाढ़ के कारण यह इलाका पीछे रह गया है।नवगछिया को बहुत पहले जिला बन जाना चाहिए था। नवगछिया बाजार में भी कई जगह सड़क चलने लायक नहीं है।

अगर हम बिहपुर विधानसभा क्षेत्र की बात करें तो उसकी

152,बिहपुर विधायक श्रीमति वर्षा रानी

भी स्थिति गोपालपुर से कोई अच्छी नहीं है। बाढ़ का शिकार दोनों ही क्षेत्र हर वर्ष होते हैं और बहुत लंबी फसलें बाढ़ के कारण मारी जाती है। बाढ़ से बचने का कोई पुख्ता उपाय अब तक यहां के विधायकों ने करने में अपनी असफलता ही साबित की है। कोसी और गंगा के बीच बसे बिहपुर विधासभा क्षेत्र की अधिकांश आबादी गांवों में रहती है। आजादी की लड़ाई में इस क्षेत्र के लोगों का महत्वपूर्ण योगदान रहा था। गांधी स्वराज आश्रम बिहपुर की पहचान है। उद्योग, सिंचाई, सड़क और कटाव यहां की बड़ी समस्याएं हैं। विधानसभा चुनाव में ये समस्याएं हर वर्ष चुनावी मुद्दा बनती रही है।

इस विधानसभा क्षेत्र की सबसे बड़ी समस्या कटाव को लेकर है। गंगा और कोसी से दर्जनों गांव कटाव के कगार पर हैं। कटाव के चलते राघोपुर, काजीकोरैया, खैरपुर, छांव नवादा, पिपरपांती, ढोडिया, दादपुर, मिरचा, कहारपुर आदि दो दर्जन गांवों के लोग पलायन कर रहे हैं। ग्रामीण सड़कों का बुरा हाल है। बिहपुर से गनौल और जयरामपुर से नगरपाड़ा की सड़कें चलने लायक नहीं है। अभी भी दियारा की बैकठपुर, दुधैला और शहजादपुर पंचायत के एक दर्जन से अधिक गांवों में संपर्क पथ नहीं है। दो दर्जन से अधिक गांवों में बिजली नहीं पहुंची है। अपना भवन नहीं रहने के चलते एक दर्जन स्कूल दूसरे भवनों में चल रहे हैं। महिलाओं के लिए अच्छा शिक्षण संस्थान नहीं है। इस क्षेत्र की पहचान केला, मक्का और गेहूं की फसल उत्पादन से होती है,लेकिन बाजार नहीं रहने के चलते किसानों को उचित मूल्य नहीं मिल पा रहा है। किसान खुद इसे बाहर ले जाकर बेचते हैं। इस क्षेत्र में कोई उद्योग नहीं है। अभी तक त्रिमुहान से पहाड़पुर बांध नहीं बन सका। चार दर्जन से अधिक गांवों के पानी में आर्सेनिक और आयरन की मात्रा अधिक पाई गई है। विगत सालों में सड़क विहीन कई गांवों को संपर्क पथ से जोड़ा गया है। इस विधानसभा क्षेत्र के कई गांवों में आंगनबाड़ी और सामुदायिक भवन बनाए गए। लोकमानपुर मरकोसी धार में पुल निर्माण का प्रयास चल रहा है। भवनपुरा के पास कोसी में पुल बनाया गया है। दो दर्जन से अधिक गांवों में बिजली आपूर्ति शुरू की गई है।

यहां बुनियादी सुविधाओं का घोर अभाव है। क्षेत्र की सड़कें चलने लायक नहीं हैं। उद्योग नहीं लगने से किसानों को फसल की उचित कीमत नहीं मिल रही है। कटाव निरोधी कार्य के नाम पर हर साल खानापूरी की जा रही है।सुल्तानगंज विधानसभा को भी अपने वर्तमान विधायक सुबोध राय से बड़ी उम्मीद थी,क्योंकि वह पुराने और जुझारू नेता के रूप में जाने जाते थे। लेकिन उन्होंने भी ऐसा कोई बड़ा परिवर्तन सुल्तानगंज के लिए नहीं किया,जिसे वहां की जनता याद करे। गंगा के किनारे बसा सुल्तानगंज विधानसभा क्षेत्र पिछले सालों में विकास के दो पग भी नहीं भर सका है।अजगैबीनाथ मंदिर और

157,सुल्तानगंज विधायक सुबोध राय

श्रावणी मेले के कारण सुल्तानगंज पूरी दुनिया में जाना जाता है। यहां गंगा से लाखों लोग हर साल जल भरकर देवघर जाते हैं,लेकिन आजतक गंगा घाट की हालत नहीं सुधरी। जबकि नेताओं ने कई बार गंगा तट को हरिद्वार की हरकीपौड़ी की तर्ज पर विकसित करने की घोषणा की है। यही नहीं, यह भी कहा गया कि सुल्तानगंज को पर्यटक शहर बनाया जाएगा, लेकिन यह शहर आज बिजली, पानी, सड़क जैसी सुविधाओं के लिए तरस रहा है। हर साल लाखों लोग बाहर से आते हैं लेकिन उनके लिए यहां एक भी बढ़िया धर्मशाला नहीं है।

इस क्षेत्र के 75 प्रतिशत लोग खेती पर आश्रित हैं। किसानों को पटवन की सुविधा नहीं है।ग्रामीण इलाकों में बिजली की खासी समस्या है,जिससे बोरिंग नहीं चल पाता है। शहरी क्षेत्र की बात करें तो मुख्य साधन सड़क की हालत खराब है। सुल्तानगंज-शाहकुंड को जोड़ने वाली सड़क पांच किलोमीटर तक खराब हो चुकी है। कांवरिया मार्ग की हालत भी ठीक नहीं है। सुल्तानगंज से गुजरने वाला एनएच 80 जगह- जगह टूट चुका है। इसपर घोरघट पुल सालों से बन रहा है। पुराने पुल से आने-जाने में कठिनाई हो रही है। एक रेफरल अस्पताल है जहां दो ही महिला चिकित्सक हैं। यहां एक्सरे मशीन और दूसरी जांच की सुविधाएं नहीं हैं।विगत सालों में सुल्तानगंज में उल्लेखनीय विकास कार्य नहीं हुए हैं। सुल्तानगंज में गंगा नदी पर अगुवानी पुल बनाने की योजना है। मुख्यमंत्री ने पिछले दिनों इसका शिलान्यास किया है। सुल्तानगंज शहर में बिजली के कुछ पोल लगाए गए हैं। शहरी क्षेत्र में बिजली की हालत थोड़ी सुधरी है, लेकिन ग्रामीण क्षेत्र अंधेरा ही रहता है। गांवों में विकास की धूप अब तक नहीं फैली है। गनगनिया में प्याज की खेती खूब होती है, लेकिन इसे रखने के लिए कहीं कोल्ड स्टोरेज नहीं है। सड़क की हालत खस्ता होने से बाहर से आने वाले पर्यटकों को परेशानी होती है। किसी उद्योग-धंधे के बारे में नहीं सोचा गया।

154(अ०जा०), पीरपैंती विधायक रामविलास पासवान

पीरपैंती विधानसभा की स्थिति भी विकास के मामले में ठीक नहीं है। कोयला यहां की सियासत का केंद्र है और उसी को लेकर सियासत की सत्ता यहां तय होती है और विकास की बातें ताक पर रख दी जाती हैं। झारखंड की सीमा पर जिले का पीरपैंती विधानसभा क्षेत्र नक्सल प्रभावित माना जाता है। इसका असर क्षेत्र के विकास पर भी दिख रहा है। विधानसभा क्षेत्र की अधिकांश सड़कें चलने लायक नहीं रह गई हैं।

यहां जाम, बिजली और पेयजल की गंभीर समस्या है।इस विधानसभा क्षेत्र में सबसे खराब स्थिति एनएच- 80 की है। शिवनारायणपुर से पीरपैंती के बीच की सड़क पैदल चलने लायक भी नहीं रह गई है। सड़क के रख-रखाव के नाम पर करोड़ों रुपए खर्च हो चुके हैं। बावजूद लोग भागलपुर से पीरपैंती सड़क मार्ग से जाना नहीं चाहते हैं। 50 किमी की दूरी तय करने में पांच घंटे से अधिक समय लग जाता है। पीरपैंती से बाखरपुर जानेवाली सड़कें टूट चुकी हैं। बाराहाट से कहलगांव जाने वाली सड़क का भी यही हाल है। शेरमारी बाजार और बाराहाट में जाम बड़ी समस्या है। अतिक्रमण के कारण सड़कें सिकुड़ गई है।क्षेत्र में बिजली संकट बना हुआ है। अभी भी चार दर्जन से अधिक गांवों में बिजली नहीं पहुंच पाई है।यहां अच्छे शिक्षण संस्थान का अभाव है। बिहार और झारखंड की सीमा के पास यह विधानसभा क्षेत्र शिक्षा की दृष्टि से भी पिछड़ा हुआ है। यहां पर एक भी कॉलेज नहीं है। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए छात्र-छात्राओं को भागलपुर जाना पड़ता है। यहां के युवाओं द्वारा शिक्षण संस्थान खोलने की लगातार मांग हो रही है। किसानों की सबसे बड़ी चिंता सिंचाई को लेकर है। बटेश्वर पम्प नहर परियोजना के चालू नहीं होने से किसान अपनी खेती भगवान भरोसे करते हैं। विधानसभा क्षेत्र का करीब 50 गांव आर्सेनिक से प्रभावित है। पीरपैंती पावर प्लांट क्षेत्र की महत्वाकांक्षी योजनाओं में शामिल है। इसके लिए जमीन अधिग्रहण का काम चल रहा है। हालांकि, मुआवजा को लेकर हुए विवाद के चलते निर्माण कार्य बाधित है। विगत सालों में दो दर्जन से अधिक गांवों को सड़क से जोड़ा गया है। रानी दियारा में मोरंग पर पुल का निर्माण और कहलगांव-बाराहाट सड़क की मरम्मत का काम चल रहा है। मोहनपुर गोघट्टा में स्टेडियम का निर्माण और 10 गांवों में प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना निर्माण का कार्य शुरू हुआ है। सियां पंचायत में बड़ी जलापूर्ति योजना और 13 गांवों में जलापूर्ति योजना पर काम चल रहा है।पिछले 25 वर्षों से भागलपुर से पीरपैंती तक की सड़कें चलने लायक नहीं है। यह हर चुनाव में यह मुद्दा बनता है और इस पर नेता आश्वासन देकर चले जाते हैं। चार दर्जन से अधिक गांवों में पानी पीने लायक नहीं है। बिजली आधे-आधे घंटे में चली जाती है। सिंचाई की कोई व्यवस्था सरकार नहीं कर रही है।

अब यदि हम सूबे के सबसे चर्चित विधानसभा क्षेत्र की बात करें तो वह है बिहार के बडे.कद्दावर नेता सदानंद सिंह का क्षेत्र कहलगांव विधानसभा क्षेत्र, जहां से विगत 1969 से आठ बार वे विधायक बने। बावजूद यहां पर जाम, बिजली संकट, सिंचाई और जर्जर सड़क बड़ी समस्या है। क्षेत्र में सबसे खराब हालत सड़कों की है। 15 वर्षों से भागलपुर से कहलगांव जाने वाली सड़क नहीं बन पाई है। भागलपुर से कहलगांव के बीच 25 किमी की दूरी तय करने में दो से तीन घंटे लग जाते हैं। अतिक्रमण के कारण अक्सर जाम लगा रहता है। जर्जर भैना पुल के नहीं बनने से आवागमन बाधित रहता है। शहरी क्षेत्र में जलापूर्ति व्यवस्था ध्वस्त हो चुकी है। जांच में कई गांवों के पानी में आर्सेनिक पाया गया है। सिंचाई सुविधाओं का अभाव है। यहां के बटेश्वर स्थान गंगा पम्प नगर परियोजना 35 सालों से अधर में लटकी हुई है। जबकि करोड़ रुपए इस परियोजना पर खर्च हो चुके हैं। परियोजना के पूरा होने पर कहलगांव, पीरपैंती और झारखंड के गोड्डा जिले के कई प्रखंडों के लाखों किसानों को सिंचाई सुविधाओं का लाभ मिल सकता है। शहर में शिक्षण संस्थाओं का अभाव है। यहां एक भी अंगीभूत महिला कॉलेज नहीं है। छात्राओं को उच्च शिक्षा के लिए भागलपुर जाना पड़ता है। इस विधानसभा क्षेत्र में उद्योग नहीं लग पाए हैं। मेगा फूड पार्क और सीमेंट कारखाना जैसे उद्योग लगाने की तैयारी शुरू हुई थी, लेकिन प्रशासनिक उदासीनता के कारण लोगों को उद्योग से वंचित होना पडा.है। विगत वर्षों में कई गांवों को सड़क से जोड़ा गया है।इस विधानसभा क्षेत्र के कई गांवों में आंगनबाड़ी केंद्रों के लिए भवन बनाए गए हैं। कुछ गांवों में बिजली भी पहुंची है। कहलगांव मिनी जलापूर्ति योजना में काम शुरू होनेवाला है। इसका टेंडर निकाला गया है। इस योजना के लिए 219 करोड़ रुपए स्वीकृत हुए हैं। 20 करोड़ रुपए विभाग को प्राप्त हुआ है, उसमें से 9.5 करोड़ रुपए भू अर्जन विभाग को दे दिया गया है। परियोजना के पूरा होने पर कहलगांव और पीरपैंती के सैकड़ों गांवों को शुद्ध पेयजल की आपूर्ति होने लगेगी। शहर में बुनियादी सुविधाओं का अभाव है। जाम के चलते शहर की रौनक गायब हो रही है। सड़कें चलने लायक नहीं रह गई हैं। सिंचाई की सुविधा नहीं मिलने से किसानों की आर्थिक स्थिति लगातार कमजोर होते जा रही है।

155, कहलगांव विधायक सदानंद सिंह

अब यदि समग्र रूप से हम भागलपुर जिले के 7 विधानसभा क्षेत्रों के विकास की समीक्षा करें तो विकास किसी कछुए की चाल से ज्यादा नहीं है। उद्योग-धंधों की स्थापना के लिए इस क्षेत्र में पिछले कई दशकों से कोई प्रयास नहीं किए गए हैं। कई तरह के कलस्टर लगाने की बातें इन क्षेत्रों में की गई। बड़े-बड़े उद्योग-धंधे लगाने की घोषणा हुई लेकिन हुआ कुछ भी नहीं । फल-सब्जी, प्रसंस्करण-उद्योग लगाने एवं रेशम कलस्टर लगवाने तक की बातें कई बार सरकारी स्तर पर की गई,लेकिन यह सारी बातें अब तक वहीं की वहीं है। इन सातों विधानसभा क्षेत्रों में मूलभूत सुविधाओं के संबंध में अभी भी हम कह सकते हैं कि यह आगे नहीं बढ़ी है, बस कछुए की चाल चलकर केवल और केवल सत्ता मद की राजनीति हो रही है। सूत्रों के अनुसार यहां के ज्यादातर किसान और मजदूर इन क्षेत्रों में रोजगार की कमी होने के कारण दिल्ली,मुंबई,सूरत,चंडीगढ़ एवं कलकत्ता आदि शहरों की ओर अपना रुख तय करते रहे हैं। उन्हें वहां रोजगार के साधन उपलब्ध हो जाते हैं और रोजी रोटी का जुगाड़ बैठ जाता है। अगर यही मजदूर किसान अपनी धरती पर रह कर काम करें तो इनकी मिट्टी सोना हो जाएगी लेकिन बाढ़ और सुखाड़ से त्रस्त क्षेत्र विकास के लिए आज भी अपनी फूटी किस्मत पर आठ-आठ आंसू बहा रहा है। ऐसे में आगामी विधानसभा क्षेत्र में सियासत मतदाताओं को कैसे रिझाती है यह सियासतों के साम-दाम,दंड और भेद पर निर्भर है। वह फिर क्या-क्या नई घोषणाएं करती हैं और इन कोरी घोषणाओं पर कौन सी हवा चलती है और किस पार्टी के बड़े नेता कौन सी हवा बहाते हैं साथ ही किन पार्टियों का कैसा गठबंधन बनता है इन सभी बातों पर निर्भर होगा आगामी विधानसभा चुनाव और इसके साथ ही विकास की बात तो होगी।

बहरहाल,2020 के विधानसभा चुनाव आते-आते मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के साथ-साथ विपक्षीगण अभी बहुत कुछ बोलेंगे और यह समय की पुकार भी है। अभी तो सरकार ने एक तरफ करप्शन, क्राइम, कम्यूलिज्म बर्दाश्त नहीं करने की बात कही है तो दूसरी तरफ शराबबंदी के कानून में संशोधन पर विचार करने की भी बात कर उन्होंने बहुत कुछ इशारा कर दिया है पर आगामी समय के लिए इतना ही काफी नहीं है। हाल के दिनों में भागलपुर में हुए तनाव ने सरकार के कम्यूलिज्म बर्दाश्त ना करने की हवा निकाल दी है घटनाक्रम में और इसमें शामिल भाजपा नेताओं की भूमिका किसी से छिपी नहीं है। इस समय सरकार अपने को असहाय महसूस क्यों कर रही थी ? क्राइम की बात करें तो भागलपुर में खुलेआम हो रही हत्या अखबारों की रोजाना सुर्खियां बन रही है। राहजनों के साथ लूट-खसोट, चोरी- छिनतई, बलात्कार और महिलाओं पर अत्याचार अभी कम होने का नाम नहीं ले रही है । डीजीपी मुख्यालय छोड़कर जिलों में जाकर समीक्षा कार्य में लगे हुए हैं। बाँका में तीन नाबालिग सगी बहनों की हत्या, नवगछिया में सोनू राय एवं भागलपुर में दिनदहाड़े काली पूजा महासमिति सह शांति समिति सदस्य चिरंजीव यादव उर्फ धूरी की हत्या साथ ही दिन-दहारे गोली व बम विस्फोट एवं शराब कालाबाजारी की संख्या में बढोत्तरी पूरे भागलपुर में दहसत पैदा कर रखा है,जो सूबे की पोल खोलने में एक छोटा सा मिशाल है और करप्शन पर बात करना तो अब पूरी तरह से बेमानी लगती है,यह चरम पर है।राजनीतिज्ञों के लिए यह कलंक नहीं अलंकरण बना हुआ है और यह देश व समाज को अपाहिज बना कर रख दिया है। सरकारी महकमा तो उसका प्रमुख अड्डा बन चुका है। इसके अलावा बालू माफिया,गिट्टी माफिया, शराब माफिया, गांजा माफिया, भू-माफिया आदि अपने कारोबार में जिन दिनों-दिन पनप रहे हैं। घोटालों की एक लंबी फेहरिस्त है,जो इन सबको पीछे छोड़ दिया है। भागलपुर का सृजन घोटाला गरीबों के विकास के सैकड़ों करोड़ रुपए की लूट। सरकारी बाबू, बैंक अधिकारियों और राजनेताओं व रसूखदार लोगों के पेट में हजम हो चुका है और इस मामले में कौवों को फंसाकर बाज को बचाने की सफल कोशिश की गई है और इस पर मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की चुप्पी को बिहार की आम जनता खुली आंखों से देख रही है। लोग ये जानने को आतुर हैं कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के द्वारा बिहार को विशेष राज्य का दर्जा दिलाने के जिद्द व संकल्प का क्या हुआ ?

समय रहते सरकार के साथ-साथ विपक्ष के नेताओं को भी सजग होकर संभल जाने की जरूरत है, क्योंकि 2020 सामने है। इतिहास गवाह है भागलपुर संसदीय क्षेत्र के सभी विधानसभा क्षेत्र पूरे बिहार का नेतृत्व करता है। बिहार में मजबूती के साथ किसी भी दल या पार्टी को अपना झंडा या अपना परचम फहराने के लिए भागलपुर में मजबूती के साथ जीत का शंखनाद करना होगा और यह तभी संभव है जब समय रहते इनमें चेतना आएगी। सूत्रों की मानें तो सत्ता दल या विपक्षी दलीय नेताओं को 2020 के चुनाव में पुरानी सोच व सुझ-बुझ को त्यागकर अपने-अपने उम्मीदवार देने की जरूरत है,तभी उनकी साख बच पाएगी। अन्यथा इस बार मतदाताओं ने पूरी तरह कमर कस चुकी है कि वे प्रजातंत्र का वास्तविक लाभ उठाकर 2020 के चुनाव में वे भावना में नहीं बल्कि विवेकशील होकर मतदान करेंगे। वैसे यह सत्य है कि इन सभी किस्सों और खेलों के बीच चुनावी विसात बिछनी आरंभ हो चुकी है और यह समय बताएगा कि विवेकशील मतदातागण किस झांसे में फसेंगे।

कुप्रचार का शिकार नागरिकता कानून

संसद के शीतकालीन सत्र में संसद से पारित किए गए विधेयकों में सबसे महत्वपूर्ण नागरिकता संशोधन विधेयक था, जो अब कानून बन चुका है। किसी भी देश के लिए नागरिकता एक महत्वपूर्ण राजनीतिक प्रश्न होता है। जब सरकार किसी व्यक्ति को देश के नागरिक के रूप में मान्यता देती है तो वह नागरिक की सुरक्षा और उसके अधिकारों को सुनिश्चित करती है, ताकि वह देश के नागरिक के रूप में गरिमापूर्वक अपना जीवन व्यतीत कर सकें। संसद से पारित इस कानून के तहत पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान से भारत आए अल्पसंख्यक समूहों-हिंदू, जैन, सिख, ईसाई, बौद्ध और पारसी समुदाय के लोगों को भारत की नागरिकता देने का प्रावधान है। भारतीय संविधान के तहत दिए गए अधिकारों में से कुछ सभी को दिए गए हैं, जबकि कुछ केवल देश के नागरिकों को दिए गए हैं। यह केवल भारत में ही नहीं, बल्कि दुनिया के हर देश में है कि कुछ अधिकार सभी के लिए होते हैं और कुछ अधिकार केवल वहां के नागरिकों के लिए होते हैं। इस कानून से जुड़े तीन महत्वपूर्ण प्रश्न हैं। पहला, सरकार को इस कानून को लाने की आवश्यकता क्यों पड़ी? दूसरा, क्या यह कानून लोगों को नागरिकता प्रदान करने में धर्म के आधार पर भेदभाव करता है? तीसरा, क्या सरकार द्वारा विधेयक लाने की पूरी प्रक्रिया में संवैधानिक वैधता है? इन प्रश्नों का उत्तर जानने के पहले यह समझना होगा कि देश का विभाजन 1947 में धार्मिक आधार पर हुआ। 1950 में तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू और उनके पाकिस्तानी समकक्ष लियाकत अली खान के बीच एक समझौते पर हस्ताक्षर हुए। यह दोनों देशों में अल्पसंख्यक समुदाय को सुरक्षा प्रदान करने से संबंधित था। नेहरू-लियाकत समझौते पर पाकिस्तान ने कभी अमल नहीं किया। इस कारण बड़ी संख्या में अल्पसंख्यक पाकिस्तान और बांग्लादेश (उस दौर के पूर्वी पाकिस्तान) से भारत आए। इनके भारत आने का मुख्य कारण धार्मिक उत्पीड़न और उनकी धार्मिक पहचान का खतरे में होना था। इस गंभीर समस्या पर सिर्फ वर्तमान सरकार का ध्यान गया।

2003 से 2014 के बीच संप्रग सरकार ने संसद में अनेक बार यह बात दोहराई कि पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान में धार्मिक अल्पसंख्यकों को प्रताड़ित किया जा रहा है और इसलिए वे भारत आ रहे हैं। इतना ही नहीं, 2003 में जब केंद्र में राजग सरकार थी तब मनमोहन सिंह ने इन पीड़ित धार्मिक अल्पसंख्यकों को नागरिकता देने का मुद्दा उठाया था। माकपा नेता प्रकाश करात ने 2003 में मनमोहन सिंह द्वारा दिए गए बयान के आधार पर एक पत्र लिखा। कुल मिलाकर लंबे समय से चली आ रही इस समस्या की तरफ लगभग हर दल के नेताओं का ध्यान गया। सभी ने इस समस्या को एक गंभीर चिंता के रूप में जाहिर किया, किंतु दुर्भाग्य से समस्या को जानते और स्वीकारते हुए भी कांग्रेस ने ठोस समाधान निकालने की कभी कोशिश नहीं की। मोदी सरकार ने नागरिकता संशोधन कानून लाकर इस समस्या का समाधान किया है।

जहां तक इस विधेयक की संवैधानिक वैधता का प्रश्न है तो हमें यह याद रखना चाहिए कि संविधान की प्रस्तावना में कहा गया है कि प्रत्येक व्यक्ति को विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास और पूजा पद्धति की स्वतंत्रता है। विपक्ष द्वारा इस विधेयक के संबंध में उठाया गया मुख्य मुद्दा संविधान के अनुच्छेद 14 के संदर्भ में है। वे तर्क दे रहे हैं कि पड़ोसी देशों के कुछ धार्मिक अल्पसंख्यकों को नागरिकता देकर सरकार भेदभाव की राजनीति कर रही है। सच्चाई आरोपों से परे है। यदि एक कल्याणकारी सरकार किसी उपयुक्त आधार पर लोगों को वर्गीकृत करती है और फिर समूह के सभी सदस्यों को समान अधिकार प्रदान करती है तो यह व्यवस्था अनुच्छेद 14 के तहत मान्य है। यह लोगों को आरक्षण का लाभ देने के लिए एक वर्ग को चिन्हित करने के समान है। यदि देश के दस प्रतिशत लोगों को गरीबी के आधार पर आरक्षण दिया गया है तो यह नीति देश के करदाताओं के खिलाफ नहीं है। इसी तरह ओबीसी मुस्लिमों को दिया जाने वाला आरक्षण उच्च जाति के हिंदुओं के खिलाफ नहीं है।

टीएमए पई मामले में सुप्रीम कोर्ट ने धार्मिक और भाषाई आधार पर लोगों के वर्गीकरण को संविधानसम्मत स्वीकृत किया था। इसलिए विपक्ष द्वारा उठाए जा रहे ऐसे मुद्दे निराधार हैं। ये भी आरोप लगाए जा रहे हैं कि यह कानून पूवरेत्तर राज्यों के खिलाफ है। यह भी सच नहीं है। सरकार ने पूर्वोत्तर के सभी ह्यइनर लाइन परमिट क्षेत्रोंह्न को कानून के दायरे से बाहर कर दिया है। साथ ही पूवरेत्तर के जनजातीय क्षेत्रों को भी इस कानून के दायरे से बाहर रखा गया है। सरकार ने इस कानून के तहत लोगों को नागरिकता देने के लिए 31 दिसंबर, 2014 की तिथि निर्धारित की है। यानी नागरिकता प्रदान करने के लिए नए प्रवासियों को इसमें शामिल नहीं किया जाएगा।

इस कानून के तहत केवल उन्हें नागरिकता दी जाएगी जो निर्धारित तिथि या उससे पहले प्रवेश कर चुके हैं। बाहर से आए लोगों को विशेष परिस्थिति में नागरिकता पहले भी दी जाती रही है। 2003 में राजग सरकार और यहां तक कि 2013 में संप्रग सरकार ने सकरुलर के माध्यम से पाकिस्तान से आए हिंदू प्रवासियों को नागरिकता प्रदान की थी। इसलिए धार्मिक उत्पीड़न के आधार पर लोगों को नागरिकता देना संविधान के सिद्धांतों का उल्लंघन नहीं है। यह कानून लाकर तो सरकार ने लंबे समय से चली आ रही समस्या का स्थायी हल निकाला है। बिना किसी अधिकार के अनिश्चितता और असुरक्षा का जीवन व्यतीत कर रहे लोगों को नागरिकता प्रदान करके भारत सरकार ने मानव अधिकारों की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य किया है। कांग्रेस सहित कुछ विपक्षी दलों द्वारा जिस ढंग से नागरिकता संशोधन कानून पर भ्रामक अप-प्रचार करके जनता में भ्रम की स्थिति पैदा करने की कोशिश की गई है, वह अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण और निंदनीय है। यह बार-बार स्पष्ट किया जा चुका है कि नागरिकता संशोधन कानून 2019 से भारत के किसी भी धर्म के नागरिक को कोई खतरा नहीं है। इस कानून से किसी की नागरिकता पर कोई खतरा होने का सवाल ही नहीं है।

आतंकवाद निरोधक दस्ते के डीआईजी बने चर्चित आईपीएस विकास वैभव

वर्त्तमान भागलपुर रेंज में डीआईजी के रूप में तैनात रहे बेगूसराय के माटी के लाल बिहार कैडर के सबसे चर्चित आईपीएस अधिकारियों में शुमार विकास वैभव को तमाम इंसानियत खातिर सबसे बड़ी समस्या बनकर उभरे आतंकवाद से दो दो हाथ करने खातिर बिहार सरकार ने बतौर डीआईजी आतंकवाद निरोधक दस्ता यानि एटियश की कमान थमाई है।विकास वैभव ATS के DIG बनाए गए हैं। इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी द्वारा इसी वर्ष 2003 बैच के आईपीएस विकास वैभव को सत्येंद्र के दुबे मेमोरियल अवार्ड - 2019 से सम्मानित किया गया है। विकास वैभव ने मानवीय मूल्यों को कायम रखते बिहार के कई बहुमूल्य कार्य किए हैं।

विकास वैभव कुछ दिनों तक नेशनल इंवेस्टिगेशन एजेंसी के एसएसपी का जिम्मा भी संभाल चुके हैं। वहीं उन्होनें साल 2013 में पटना के गांधी मैदान ब्लास्ट और उसके पहले बोधगया ब्लास्ट की तफ्तीश करने वाली टीम को न केवल लीड किया था बल्कि आतंकी घटनाओं में संलिप्त आतंकियों को कोर्ट से सजा दिलाने में महती भूमिका निभाई। उनके बेहद तकनीकी एक्सपर्टीज और सटीक विश्लेषात्मक अनुसंधान को देखते हुए एक बड़ी जिम्मेदारी से नवाजा है।

उल्लेखनी है कि सूबे के बेहद ख्यातिनाम IPS अफसरों में शामिल विकास वैभव के बातौर क्वर अबतक के कैरियर में अद्वितीय और कभी न भूलाये जाने वाले अनेकानेक उपलब्धियों के सितारे टंगे है। नक्सल प्रभावित सासाराम के रोहतास फोर्ट को लाल आतंक के कब्जे से मुक्त कराकर कर श्री वैभव ने पहली बार तिरंगा फहराया तो केंद्रीय प्रतिनियुक्त से लौटने के बाद बातौर एसएसपी पटना नियुक्ति के दूसरे दिन ही उन्होंने जून 2015 में तात्कालिक ख्यातिनाम छोटे सरकार को न केवल घर मे घुसकर गिरफ़्तार किया बल्कि बिहार सरकार के शासन को सुशासन में तब्दील होने के सफर की एक अहम मोड़ दिया। उल्लेखनीय है कि एनआईए में रहते हुए आईपीएस विकास वैभव कई आतंकी वारदातों की गुत्थियां सुलझा चुके हैं।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी विकास वैभव एक बेहद अजीम शख़्सियत के मालिक है। बेहद तार्किक कलमकार और कवि हृदय के स्वामी है। माटी के स्वर्णिम इतिहास के पहरुआ श्री वैभव पुरातत्व के क्षेत्र में शोध भी कर रहे हैं। साथ ही पुरातन इतिहास के ज्ञाता है। वर्त्तमान समय इंडस वैली सिविलाइजेशन पर शोध करते हुए नए तथ्यों को उद्धृत करने के उद्देश्य पर काम कर रहे हैं। आईआईटी कानपुर से इंजीनियरिंग में पोस्ट ग्रैजुएट हैं। विकास वैभव बिहार में ऐसे चुनिंदे पुलिस अफसरों में से हैं, जो एक टीचर की तरह बच्चों को पढ़ाते भी हैं।वे चाणक्या लॉ नेशनल इंस्टीच्यूट में बतौर गेस्ट लेक्चरर और एक्सपर्ट स्टूडेंट्स को आतंकवाद के विषय पढ़ाते हैं।

विकास वैभव साइलेंट पेजेज नाम से ब्लॉग लेखन में भी सक्रिय है। यह ब्लॉग ऐतिहासिक स्मारकों और माटी के सापेक्षता स्वर्णीय ऐतिहासिक कालखण्डों को कलमबद्ध करते है। साथ ही पुरात्व महत्व के स्थलों को सचित्र उल्लेखित करने है।साथ ही पर्यावरण और ऐतिहासिक धरोहरों से इनका विशेष प्रेम रहा है। साथ में फोटोग्राफी का भी इन्हें शौक है।

पटना के नए सिंघम बने : उपेंद्र शर्मा

अभिजीत

नववर्ष ट्वेंटी20 की बधाई के साथ ही बिहार सरकार सूबे की राजधानी पटना के लॉ एंड ऑर्डर को पुरसुकून बनाये रखने की जिम्मेदारी 2008 बैच के बिहार कैडर के आईपीएस अधिकारी उपेन्द्र कुमार शर्मा को सौप दी है। जिन मजबूत कंधो पर शहर और शहरवासियों के सुरक्षा की महती जिम्मेदारी सौपी गई है, इसके बात आपके मन मे भी कई सवाल होंगे तो मिलिए नवनियुक्त एसएसपी पटना आईपीएस उपेन्द्र कुमार शर्मा से ....

राजधानी पटना के नवनियुक्त एसएसपी उपेंद्र कुमार शर्मा बहुमुखी प्रतिभा के धनी है। मेहनती उपेंद्र कुमार शर्मा एक विनम्र पृष्ठभूमि से हैं। एक बेहद संवेदनशील व्यक्तित्व के साथ एक प्रखर वक्ता और कलम के जरिए शैक्षणिक,सामाजिक और वर्त्तमान परिवेश के प्रति बेहद सजगता से शाब्दिक उल्लेख करने वाले इस शख्स का जन्म 4 सितंबर,1983 को हुआ। अपनी स्कूली शिक्षा की शुरूआत यानी मैट्रिक तक कि पढ़ाई धनबाद के चर्चित स्कूल डे नोबेली स्कूल धनबाद और फिर पिता के तबादले के बाद पिता संग वडोदरा चले गए और तदुरान्त प्लस टू की पढ़ाई साबरी विद्यालय वडोदरा से पूरी की। पढ़ाई के दौरान टेस्ट में बेहद कम नम्बर आने पर भी पिता का विश्वास नही डिगा। फिर आगे की पढ़ाई यानी अपनी एकेडमिक्स पूरी कर उपेंद्र ने वडोदरा के एम.एस विश्वविद्यालय से मैकेनिकल इंजीनियरिंग में स्नातक किया। बेहद विनम्र पृष्ठभूमि के इस प्रखर प्रणेता को संस्कार और सम्यक व्यवहारिक ज्ञान माता पिता और परिजनों के सानिध्य में मिला। अपने विचारों को ज्ञान के प्रकाश ने नित नए आयाम देते हुए उपेंद्र ने तकनीकी शिक्षा पूर्ण करने के बाद अगले 9 वर्षों में मैकेनिकल इंजीनियर बनने की तरह छोटी और बड़ी सफलताओं की एक सशक्त चारदीवारी अपने उन्नयन काल मे खड़ा किया। इस दौरान एक साल के लिए एलएंडटी के साथ काम करना, 3 वर्षों के लिए एनटीपीसी के साथ और फिर मध्यवर्गीय परिवार की सबसे बड़ी ख्वाब सरकारी नौकरी भी के तहत उन्हें अपना पहला पेशेवर ब्रेक 1999 में पूर्व मध्य रेलवे के तहत टीटीई के रूप में मिला।

लेकिन,नियति और समय ने इस तिमिर के पथिक लिए कुछ और ही लक्ष्य निर्धारित कर रखा था। चुकी लगन सच्ची थी तो समय के इस पथिक को सफलताओ के एहसास से उद्वलेति करने उत्प्रेरक की भूमिका का निर्वहन कर रहा था। मंजिल करीब आ रही थी उत्साह और उम्मीदें इस कर्मठ व्यक्तित्व को नित नए बिहान रुपी सफलताएं दे रही थी। यूपीएससी के साथ इस अर्हता प्राप्त किया तो सफलता ने जोरदार अंगड़ाई ली और फिर यूपीएससी में वर्ष 2008 में 125वां रैंक हासिल कर बिहार कैडर में आईपीएस बने।

2 साल के प्रशिक्षण के बाद, बिहार कैडर आवंटन के तहत 2010 में बिहार में योगदान दिया। तकनीकी और शारीरिक प्रशिक्षण के बाद जमीनी हकीकतों से रूबरू होने खातिर रोहतास जिले में प्रशिक्षित किया गया था जो वास्तव में व्यावहारिक पुलिसिंग सीखने के लिए एक जगह थी। उपेंद्र ने वर्ष 2010 में बातौर एएसपी भभुआ के बेहद सघन नक्सल पैठ वाले वारजोन और प्रभावित क्षेत्र में पुलिसिंग की बारीकियों को समझा और जाना। युवा जोश और उत्साह कुछ कर गुजरने की अदम्य लालसा में 10 महीने तक विश्वासघात- प्रतिघात और लाल आतंक के खात्मे की जंग में जोरदार भूमिका निभाई और फिर शुरू हुआ तैनाती और विरमित होने का सफर।

सिटी एसपी पटना उपेंद्र शर्मा

पटना में सिटी एसपी के रूप में तैनात किया गया। 5 महीने बाद, उन्हें राज्य के सबसे कठिन आरोपों में से एक दिया गया और उन्हें जनवरी 2012 में एसपी, जमुई के पद पर नियुक्त किया गया। उन्होंने जमुई के लोगों के लिए उल्लेखनीय सेवा की, जिसके लिए उन्हें आज भी याद किया जाता है। जमुई को बिहार का दंतेवाड़ा माना जाता है, इसलिए जिले में पुलिसिंग के कठिनाई स्तर की डिग्री आसानी से समझ में आती है। 2 साल के सफल कार्यकाल के बाद, उन्हें एसएसपी, दरभंगा के रूप में तैनात किया गया था। उस जिले में सेवा के एक वर्ष के बाद ही अक्टूबर 2013 में एक जघन्य नक्सली घटना के मद्देनजर उनका तबादला कर दिया गया और उन्हें औरंगाबाद में औरंगाबाद भेज दिया गया। उन्होंने वहां 2 साल तक सेवा की और जिले में शांति वापस लाई जो अन्यथा उबलते थे। लाल आतंक का खतरा। फरवरी 2015 से, वह आज तक बक्सर समेत के विभिन्न संवेदनशील जिलों में सेवा करते हुए। मोतिहार में आम लोगों को सुरक्षित करने और शांति लाने के अपने प्रयास को जारी रख रहे।

पटना एसएसपी बनाये गए

बिहार कैडर के अमूमन हर आईपीएस अधिकारी की चाहत रहती है कि राजधानी पटना में जरूरी तैनाती मिले। दरअसल, यह सूबे का न केवल विशिष्ट जिला है बल्कि सूबे के कमांड सेंटर है। अतः यहां की तैनाती तलवार की धार के समान है जहाँ सजगता ही सफलता है वर्ना तो ... । उपेंद्र पटना के एसएसपी के तौर पर तैनात हो गए है उद्देश्य परिभाषित है लक्ष्य तय है यानी आम आदमी की सुरक्षा सर्वोपरी है। आम लोगों को सुरक्षित करने और शांति लाने के अपने प्रयास को नवनियुक्त एसएसपी जारी रख किन ने आयामों तक ले जाएंगे ये वक्त के गर्भ में है पर उम्मीदें सार्थक और सकारात्मक है।

रियल सिंघम हैं पटना के नए सीनियर एसपी उपेंद्र कुमार शर्मा

कड़क मिजाज और तेज तरार आईपीएस अधिकारी उपेंद्र कुमार शर्मा जनता के बीच काफी लोकप्रिय हैं इनके काम करने का अंदाज भी अनूठा है कभी आपको क्रिकेट ग्राउंड में बच्चों के साथ क्रिकेट खेलते नजर आ जाएंगे तो कभी किसी संस्थान में बच्चों को पढ़ाते भी, आम आदमी से इनका सीधा जुड़ाव रहा है.

पटना के नए एसएसपी उपेंद्र शर्मा एक्शन में आ गए है और आराम करने के मूड में नही प्रभार ग्रहण करते ही थानों का औचक निरीक्षण पटना एसएसपी कर रहे है ये भी साफ हो चुका है अगर कोई थाना प्रभारी अपने क्षेत्र में सुस्त दिखे उनकी खैर नही रहेगी लगातार कई थानों का पटना एसएसपी ने निरीक्षण किया और साफ कर दिया काम करिए नए एसएसपी ने टास्क भी थमा दिया है. की विधि व्यवस्था से समझौता नही होगा और जो अपराध करेंगे उन्हें किसी कीमत पर बक्शा नही जाएगा चाहे कितना भी बड़ा अपराधी क्यों न हो साथ ही अपने काम करने के अंदाज और तरीकों से भी वाकिफ पटना एसएसपी ने तमाम थाना प्रभारी को करा दिया है और इस एक्शन और तेवर से साफ हो चुका है अब अपराधियो की खैर नही है आपको बता दें कि ट्रांसफर किए जाने के दूसरे दिन ही आईपीएस अधिकारी उपेंद्र शर्मा ने पटना के एसएसपी का कार्यालय पहुँचे उसके बाद वो बिहटा थाना पहुँचे और वहाँ कई दिशा निर्देश दिया वही देर रात पटना एसएसपी उपेन्द्र शर्मा अभी पटना के पीरबहोर थाना पहुँचे और उन्होंने मीडिया से बात करते हुए कहा कि वो हर मामले को देख रहे है साथ ही कारगिल चौक पर जो कुछ दिन पूर्व उपद्रवी ने जो उत्पात मचाया था उनकी जल्द गिरफ्तारी होगी साथ ही पुलिस पर हमला करने वाले कि जल्द पहचान कर उन्हें गिरफ्तार कर लिया जाएगा हाल के दिनों में राजधानी और आसपास के इलाकों में कई बड़ी वारदातें हुई हैं. जिनसे उपेंद्र शर्मा पूरी तरह से वाकिफ हैं. फुलवारी शरीफ, नौबतपुर, बिहटा और पालीगंज की अपराधिक गतिविधियों को अच्छे से जान रहे हैं. हाल के दिनों में राजधानी में अपराध की घटना में बढ़ोतरी हुई है आज जहाँ पुलिस पर हुए हमले में अपराधियो ने पुलिस को खुली चुनौती दी है अब देखना दिलचस्प होगा कि पटना के नए एसएसपी उपेन्द्र शर्मा के आने से अपराध पर अंकुश लगता है या अपराधियो का मनोबल बढ़ा रहता है ये तो देखने वाली बात होगी।

नागरिकता कानून से एक इंच पीछे नहीं हटेगी सरकार अमित शाह ने सभी विपक्षी दलों को दिया चैलेंज

जोधपुर। केंद्रीय गृह मंत्री और भाजपा अध्यक्ष अमित शाह ने साफ कर दिया है कि सरकार नागरिकता कानून (उअअ) के मुद्दे पर जरा भी पीछे नहीं हटेगी। राजस्थान के जोधपुर में नागरिकता कानून के समर्थन में एके जनसभा को संबोधित करते हुए अमित शाह ने कहा कि अगर सभी विपक्षी दल एक साथ मिलकर आ जाते हैं तो भी भारतीय जनता पार्टी नागरिकता कानून के मुद्दे पर एक इंच पीछे नहीं जाएगी। अमित शाह ने विपक्षी दलों को कहा कि आप नागरिकता कानून पर जितना चाहे झूठ फैलाते रहो। अमित शाह ने जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि भाजपा ने देशभर में नागरिकता संशोधन कानून के समर्थन में जनजागरण अभियान का आयोजन किया है, क्यों ये आयोजन करना पड़ा? क्योंकि जिस कांग्रेस को वोटबैंक की राजनीति की आदत पड़ गई है, उसने इस कानून पर दुष्प्रचार किया है। उन्होंने आगे कहा कि उअअ पाकिस्तान, अफगानिस्तान और बांग्लादेश से हिंदू, सिख, जैन, पारसी, बौद्ध, ईसाई लोग, जो धर्म के आधार पर प्रताड़ित होकर आए हैं, उन्हें नागरिकता देने का कानून है। विपक्षी इसके खिलाफ एकजुट हो जाएं, लेकिन भाजपा इस फैसले पर एक इंच भी पीछे नहीं हटेगी। नागरिकता कानून का विरोध कर रहीं पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री का जिक्र करते हुए गृह मंत्री ने कहा "ममता दीदी कह रही हैं कि आपकी लाइने लग जाएंगी, आपसे प्रूफ मांगे जाएंगे। मैं बंगाल में बसे हुए सारे शरणार्थी भाइयों को कहना चाहता हूं कि आपको कोई प्रताड़ना नहीं झेलनी पड़ेगी, आपको सम्मान के साथ नागरिकता दी जाएगी। दीदी से डरने की जरूरत नहीं है। मैं ममता दीदी को कहना चाहता हूं कि बंगाली भाषी शरणार्थी हिंदू, दलितों ने आपका क्या बिगाड़ा है, क्यों इनकी नागरिकता का विरोध कर रही हो?"अमित शाह ने वीर सावरकर के मुद्दे पर भी कांग्रेस पार्टी को घेरा और कहा "वीर सावरकर जैसे इस देश के महान सपूत और बलिदानी का भी कांग्रेस पार्टी विरोध कर रही है। कांग्रेसियों शर्म करो-शर्म करो। वोटबैंक के लालच की भी हद होती है। वोटबैंक के लिए कांग्रेस ने वीर सावरकर जैसे महापुरुष का अपमान किया है।"

बिहार के युवाओं के बीच लोकप्रिय हैं मनीष कुमार

एक साधारण किसान परिवार में जन्म लेने वाले मनीष कुमार आज अपनी मेहनत, कुशलता के दम पर पटना के युवाओं के ही नहीं बल्कि बिहार के युवाओं के बीच अपनी कार्यशैली को लेकर अति लोकप्रिये बन चुके है। मनीष कुमार के पिता श्री वीरेंद्र नारायण सिंह जी एक साधारण किसान है और जिस प्रकार एक किसान अपने कठिन परिश्रम से अन्न उगाता है ठीक उसी प्रकार अपने बेटे को शिक्षा दी की विपरीत परिस्थितियों में भी अगर आप दृढ़ इच्छाशक्ति और लगन से कोई भी काम निस्वार्थ भाव से करेंगे तो उसमें जरूर सफलता मिलेगी। मनीष कुमार का जन्म पटना में हुआ और आर्थिक स्थिति अच्छा नहीं होने बाद भी किसान पिता ने बेटे को अच्छी शिक्षा दी,मनीष मनीष कुमार ने BSc.(Mathematics) से संपन्न करने के बाद दिल्ली के प्रतिष्ठित इंद्रप्रस्था युनिवर्सिटी से MBA और NOU से PGDFM (Finance) से करने के बाद कुछ समय के लिए प्रतिष्ठित कंपनी महिंद्रा में नौकरी की लेकिन श्री कुमार शुरू से ही किसानों की समस्या,युवओं की समस्या और गरीबी को नजदीक से देखा था और यही कारण बना की उन्होंने अपनी नौकरी छोड राजनीति के माध्यम से सेवा करने की ठान ली और जूलाई,2014 में मनीष कुमार को मेंथा की खेती जिससे कम लागत में किसानो की आय दुगनी होती हैं, पर व्याख्यान देने ब्राजील मे आयोजित ब्रिक्स सम्मेलन मे भारत के प्रतिनिधिमंडल में शामिल होने का मौका मिला पर किसी

कारणवश जा नहीं पाए, पर कहते हैं न कि प्रतिभा छुपाए नहीं छुपती और फिर 2018 मे जोहासंबर्ग,साउथ अफ्रिका मे आयोजित ब्रिक्स सम्मेलन मे भारत के प्रतिनिधिमंडल साथ मनीष कुमार शामिल भी होकर पटना के साथ बिहार को भी गौरवान्वित किया.

मनीष कुमार ने विभिन्न मुद्दों पर चाहे 2017 में लगभग 14 लाख बिहार बोर्ड के छात्र फेल कर दिए गए थे तब छात्रों की आवाज बनकर सड़क पर उतरना हो तब छात्रों के साथ सड़क पर उतर कर संघर्ष किये और मजबूरन तब की राजद-जदयू सरकार को फेल छात्रों की फिर से परीक्षा लेनी पड़ी।अभी हाल ही में श्री कुमार ने राज्यपाल महोदय से मिलकर छात्रों की मांग जिसमे हर कॉलेज में डिजिटल लाईब्रेरी हो,सत्र की देरी को नियमित करना,छात्राओं के लिए शौचालय और नालंदा खुला विश्वविधालय,नालंदा के निर्माण में हो रही देरी को लेकर। मनीष कुमार ने बताया कि पटना बिहार की राजधानी है और भाजपा युवा मोर्चा,पटना महानगर का अध्यक्ष होने के नाते मेरा कर्तव्य बनता है कि यहाँ जो भी मरीज दिखाने आये और उन्हें किसी प्रकार की दिक्कत हो तो उसे मदद करने सबसे पहले आगे आए,हमसब रक्तदान शिविर लगाते है ताकि बिहार के कोने-कोने से आये मरीजों को खून की दिक्कत न हो और जो भी युवा पटना में आकर पढाई करते है या रोजगार की तलाश मे आते हैं उनको हरसभंव मदद करे। अभी हाल ही में पटना में भीषण बारिश के कारण आए

बाढ़ में सभी क्षेत्रों में भाजयुमो,पटना महानगर के कार्यकर्ता इनके नेतृत्व में लगातार जरूरतमंद लोगों तक राहत सामग्री पहुंचाई और जहाँ कही भी कोई फंसा था उन्हें बाहर निकालने में लगे रहे। 2019 लोकसभा चुनाव में भी भाजयुमो, पटना महानगर अध्यक्ष के नेतृत्व में बेहतरीन प्रदर्शन रहा,रन फॉर नमो पटना सहित देश के 50 विभिन्न शहर में आयोजित हुआ,पटना में भी श्री कुमार के नेतृत्व में शानदार आयोजन हुआ इसके साथ ही सोशल मीडिया टीम के साथ पटनाकारवि कैंपेन चलाया। भाजयुमो, पटना महानगर अध्यक्ष मनीष कुमार के नेतृत्व मे सोशल मीडिया के माध्यम से भी जनता तक सरकार की योजनाओं,कार्यक्रम और उपलब्धियां भी शानदार तरीके से पहुंचाती है।पटना साहिब के लोकप्रिय सांसद सह केंद्रीय कानून एंव आईटी मंत्री द्वारा ट्विटर पर श्री कुमार एंव इनकी टीम की प्रसंशा भी की.

श्री कुमार ने बताया कि हमारी पार्टी की नीति ही है कि जब तक अंतिम व्यक्ति तक बूनयादी सुविधा ना पहुँचे तब तक हम भाजपा के कार्यकर्ता लोगों की समस्या में हर संभव मदद करें। श्री कुमार की मेहनत और कार्य क्षमता ही उनकी असली पहचान बन चुकी है, सभी कार्यक्रम को सफलता पूर्वक सम्पन्न कराने की वजह से ही संगठन में लगातार इनका कद बढ़ता जा रहा है, बात जब देशभक्ति की हो तब भी मनीष कुमार युवाओं के साथ सडक पे होते हैं चाहे वर्ष 26 जनवरी 2019 की पूर्व संध्या पर 100 फिट लम्बां तिरंगा यात्रा हो या युवाओं की राष्ट्रभक्ति का संदेश हो या CAA के समर्थन में विशाल बाइक रैली।

श्री कुमार दूरसंचार सलाहकार समिति (भारत सरकार) के सदस्य भी रह चुके है,वर्तमान में सॉफ्टबॉल क्रिकेट एसोसिएशन ऑफ बिहार के उपाध्यक्ष भी है।

श्री कुमार ने बताया कि जिस तरह पटना में युवओं में नशा की बढ़ोतरी चिंताजनक है और मेरी प्रयास रहेगी की अपने संगठन के माध्यम से जागरूक कर युवाओं को नशा की चपेट में आने से बचाये और ऐसे युवा जो खासकर तकनीकी कोर्स करते हो को पटना में ही विशेष प्रशिक्षण मिले ताकि उनका वैश्विक दृष्टिकोण मजबूत हों और दुनिया के किसी भी कोने मे रोजगार मिलने मे कठिनाई ना हो. हमारे देश में आज भी युवाओं की संख्या सबसे ज्यादा है और यह हमसबों का कर्तव्य बनता है कि हम अपने प्रधानमंत्री के नया भारत बनाने के सपने को हकीकत में तब्दील करने के लिए एक साथ मिलकर देश की विकास में अपना योगदान दें।

श्री कुमार ने बताया कि भविष्य में भी संगठन द्वारा दिए गए दायित्व का कर्तव्यनिष्ठा से पालन करते हुए युवाओं की हर आवाज को उठाऊंगा और हमेशा सबकी मदद के लिए आऊंगा चाहे वो किसी भी धर्म का हो,किसी भी जाति का क्योंकि हमारा संगठन ही सबका साथ सबका विकास और सबका विश्वास की नीति से काम करने की शिक्षा देती है। आज देश में एक अरब से ऊपर की जनसँख्या में जाति, धर्म और भाषा के भाँति-भाँति के अद्भुत फूल खिले हों तो उन्हें पिरोकर माला बनाने का कार्य शिक्षा ही कर सकती है इसीलिये आज हम सभी का दायित्व बनता है की छात्रों की शिक्षा में सभी प्रकार की सुविधा मिले ताकि अधिक से अधिक छात्र शिक्षा ग्रहण कर सके और हम देश में व्याप्त समस्याओ जैसे महिलाओ के प्रति बढ़ती हिंसा,जनसँख्या में बढ़ोतरी, पर्यवारण प्रदुषण, गरीबी, भ्रष्टाचार इत्यादि को शिक्षा से ही कम कर सकते है। जैसा की सभी जानते है कि पटना में सिर्फ बिहार ही नहीं बल्कि कई अन्य राज्य के लाखों छात्र अपनी पढाई पूरी करने आते है तो ये हम सभी का कर्तव्य बनता है कि हम युवाओं की मदद करें।

धर्मेंद्र प्रधान ने दिया ग्रीन इकोनॉमी के लिए ग्रीन स्टील का मंत्र !

इस्पात इरादे' से हासिल होगा लक्ष्य
ग्रीन स्टील को बढ़ावा देगी मोदी सरकार
ग्रीन स्टील से बनेंगे घर से लेकर बड़े इंफ्रा प्रोजेक्ट

नई दिल्ली। स्टील को अर्थव्यवस्था की बुनियाद कहा जाता है, क्योंकि यह लगभग हर क्षेत्र के लिए फीडर इंडस्ट्री का काम करता है। ऐसे में जब चर्चा ग्रीन और हरित अर्थव्यवस्थाओं की हो तो इसमें एनवायरनमेंट फ्रेंडली स्टील की भूमिका काफी अहम हो जाती है। केंद्र की मोदी सरकार इस बात की अहमियत को समझते हुए ग्रीन स्टील के उत्पादन और खपत बढ़ाने की कवायद तेज कर रही है। केंद्रीय पेट्रोलियन एवं प्राकृतिक गैस तथा इस्पात मंत्री श्री धर्मेंद्र प्रधान ने गुरुवार को देशभर के इस्पात उत्पादकों से ग्रीन स्टील का उत्पादन बढ़ाने का आह्वान किया। श्री प्रधान इंडियन स्टील एसोसिएशन द्वारा आयोजित स्टील कॉन्क्लेव में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि अर्थव्यवस्था की किसी भी गतिविधि में पर्यावरण के मुद्दों को दरकिनार कर आगे नहीं बढ़ा जा सकता।

आज नवीनीकरण ऊर्जा के क्षेत्र में दुनिया भारत को देख रही है। हमने 450 गीगावट अक्षय ऊर्जा के उत्पादन का लक्ष्य तय किया है, इसे हासिल करने में स्टील की बड़ी भूमिका होगी। उन्होंने स्टील के उत्पादन और वितरण की प्रक्रिया से लेकर सोलर डिवाइस के विकास को प्रोत्साहित करने के लिए भी इस्पात निमार्ताओं को आगे आने को कहा।

इस्पात इरादे से हासिल होगा लक्ष्य

इस मौके पर श्री धर्मेंद्र प्रधान ने कहा कि 5 अरब डॉलर की इकोनॉमी की राह पर इस्पात इरादों के साथ ही बढ़ना होगा। मोदी सरकार-2 में पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस के साथ इस्पात मंत्रालय का जिम्मा संभाल रहे श्री धर्मेंद्र प्रधान ने कहा कि वह दिन दूर नहीं जब भारत विशुद्ध इस्पात निर्यातक देश बनेगा। उल्लेखनीय है कि पिछले कुछ समय से भारत स्टील के आयात-निर्यात को समान स्तर पर ला दिया है। इसके पीछे भारत की तेल आयात के बदले स्टील निर्यात की वह नीति है जिसके अंतर्गत धर्मेंद्र प्रधान ने खाड़ी देशों से तेल आयात करने के बदले उन्हे भारतीय स्टील लेने को सहमत किया है।

बिहार के गणितज्ञ एमके झा को बॉलीवुड अभिनेत्री मलाइका अरोड़ा ने किया सम्मानित

अनूप नारायण सिंह

सम्मानित हुए गणित के जादूगर एम के झा एक्शन रिसर्च द्वारा आयोजित इंटरनेशनल बिजनेस अवार्ड 2019 में सर्वश्रेष्ठ गणितज्ञ के सम्मान से सम्मानित हुए गणित के जादूगर एमके झा प्रख्यात बॉलीवुड अभिनेत्री मलाइका अरोड़ा खान ने प्रदान किया सम्मान. पटना के नया टोला सेंट्रल बैंक बिल्डिंग में चलता है। झा मैथमेटिक्स क्लासेस के नाम है इनका संस्थान प्रतिवर्ष हजारों की तादाद में प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफल होते हैं छात्र. सम्मानित. एम के झा को बधाई देने वाले में गुरु डॉक्टर एम रहमान मुन्ना जी भीम सिंह विपिन कुमार सिन्हा पुष्पराज डॉ विजय राज सिंह शैलेश कुमार सिंह भूषण कुमार सिंह बबलू अनूप नारायण सिंह एवं अरनव मीडिया के सभी सहकर्मी शामिल है.अपने अदम्य साहस और आत्मबल के सहारे गणित के जादूगर के रूप में विख्यात चर्चित शिक्षक एमके झा बिहार के श्रेष्ठ शिक्षकों में शामिल हैं जिनसे पढ़ने की तमन्ना लिए हजारों छात्र पटना आते हैं. प्रतियोगिता परीक्षाओं की तैयारी के सर्वश्रेष्ठ संस्थान के रूप में इनका झा क्लासेज आज बिहार में स्थापित है बिहार की राजधानी पटना प्रारंभिक काल से ही शिक्षा के केंद्र बिंदु रही यहां के शिक्षकों का डंका पूरे देश ही नहीं विदेशों तक मे बजता आ रहा है. इसी पटना के नया टोला सेंट्रल बैंक बिल्डिंग के द्वितीय तल पर संचालित होता है झा क्लासेज. जहां हजारों की तादाद में छात्र विभिन्न प्रतियोगिता परीक्षाओं की तैयारी के लिए गणित पढ़ने इनके पास आते हैं .मूल रूप से ग्राम शाहपुर पंडोल जिला मधुबनी के निवासी एमके झा के पिता श्री तारा कांत झा व्यवसाय मे थे।एककृत बिहार में बोकारो में स्कूली शिक्षा आदर्श मध्य विद्यालय चास बोकारो से तथा दसवीं की शिक्षा राम रूद्र हाई स्कूल जोधाडीह मोड़ बोकारो से हुई 1986 में इन्होंने मारवाड़ी कॉलेज रांची से इंटर की परीक्षा और 1989 में रांची कॉलेज से गणित प्रतिष्ठा में स्नातक की डिग्री ली पढ़ाई समाप्त होने के बाद प्रतियोगिता परीक्षाओं में लगे सर्वप्रथम इनका चयन पटना के एलएन मिश्रा संस्थान के लिए हुआ लेकिन इन्होंने एडमिशन नहीं लिया तत्पश्चात असिस्टेंट स्टेशन मास्टर के रूप में मुंबई रेलवे के लिए चयनित हुए उन्होंने वहां भी ज्वाइन नही किया. उसके बाद असिस्टेंट स्टेशन मास्टर के तौर पर महेंद्र रेलवे बोर्ड के लिए भी चयनित हुए लेकिन इनके मन में बचपन से ही लीक से अलग कुछ कर गुजरने की चाहत थी. जो ज्ञान इनके पास है छात्रों के बीच बांटा जाए तो बिहार से हजारों की तादाद में छात्र विभिन्न सरकारी नौकरियों के लिए चयनित हो सकते हैं. इस जज्बे के साथ 25 वर्षों से छात्रों को पढ़ाने वाले एम के झा के10 हजार से ज्यादा छात्र विभिन्न सरकारी नौकरियों में उच्च पदों तक आसिन है. 1996 में महेंद्रु पोस्ट ऑफिस के पास 4 बच्चों से अपने संस्थान की शुरूआत करने वाले झा वर्ष 1998 में बिहार के प्रतिष्ठित करतार कोचिंग से जुड़े गणित पढ़ाने की कला के कारण छात्रों की भीड़ खिंची चली आती थी .वर्ष 2000 से 2011 तक पटना के गोपाल मार्केट में इन्होंने छात्रों को पढ़ाया तत्पश्चात वर्ष 2012 में करतार कोचिंग छोड़कर इन्होंने खुद का झा क्लासेस नाम से नया टोला सेंट्रल बैंक बिल्डिंग के द्वितीय तल पर अपने संस्थान की स्थापना की. खुद का संस्थान होने के बाद छात्रों से सीधा संवाद कुछ ज्यादा ही होने लगा भीड़ बढ़ने लगी सफलता मिलने लगी और झा क्लासेस बिहार का प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थान बन गया. गणित के जादूगर के रूप में प्रसिद्ध एमके झा की प्रसिद्धि आज की तारीख में इतनी है कि विभिन्न प्रतियोगिता परीक्षाओं के लिए तैयारी करने वाले पटना आने वाले छात्र इनके संस्थान में गणित पढ़ना नहीं भुलते. आज भी निर्धन विकलांग छात्रों को उनके संस्थान में नाममात्र के शुल्क पर शिक्षा दी जाती है. इनके संस्थान में लाइव वीडियो क्लासेज की व्यवस्था भी है. सफलता की कहानी इनकी धर्मपत्नी बबीता झा के बिना अधूरी है 25 वर्षों के पढ़ाने के अभियान मे इनका योगदान काफी बेहतर है.संस्थान का प्रबंध ये संभालती ही है साथ ही साथ तथ्यात्मक जरूरतों को भी पूरा करती हैं .उनके साथ कदम से कदम मिलाकर चलने वाली बबीता झा छात्रों के आर्थिक स्थिति को देखते हुए उनके लिए आर्थिक आधार पर भी काफी सहूलियत की व्यवस्था करती हैं .इनके संस्थान में पढ़ने वाले छात्र कहते हैं इनके पढ़ाने की तकनीक काफी अलग है जिस कारण से गणित जैसे कठिन विषय भी छात्रों को कंठस्थ हो जाते हैं. जिस तकनीक से पढ़ाते हैं .उसके कारण विभिन्न प्रतियोगिता परीक्षाओं में गणित के प्रश्न हल करना काफी आसान हो जाता है .इसी कारण छात्रों की दिली तमन्ना रहती है कि वह झा क्लासेज मे जरूर पढ़े. विभिन्न राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सम्मान से सम्मानित गणित के जादूगर एमके झा को दिल्ली के उपमुख्यमंत्री व शिक्षा मंत्री मनीष सिसोदिया पूर्व सीबीआई डायरेक्टर जोगिंदर सिंह तथा देश के प्रतिष्ठित मासिक पत्रिका आउटलुक ने श्रेष्ठअवार्ड से भी सम्मानित किया है. बातचीत के क्रम में उन्होने बताया कि पढ़ने पढ़ाने के अलावा वे कुछ भी नहीं सोचते हैं उन्हें लगता है कि छात्रों के अंदर सब कुछ है बस उसे परोसने की कला सीखनी है. गणित के बारे में छात्रों के दिमाग में बचपन से ही बैठा दिया जाता है कि कठिन है लेकिन तकनीक के माध्यम से पढ़ाते है जिससे छात्रों को लगता है कि अन्य विषय से गणित के सवालों को हल करना काफी आसान है।

बिना गॉडफादर के बनाई है भोजपुरी सिनेमा में पहचान पूनम दुबे ने

अनूप नारायण सिंह

भोजपुरी फिल्मों की मशहूर अदाकारा पूनम दुबे आज किसी पहचान की मोहताज नहीं हैं. रवि किशन, दीनेशलाल यादव 'निरहुआ', पवन सिंह, खेसालीलाल यादव, यश मिश्रा और रितेश पांडे जैसे तमाम भोजपुरी के दिग्गज अभिनेताओं के साथ पूनम दुबे फिल्में कर चुकी हैं. उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद की रहने वालीं पूनम दुबे आज जिस मुकाम पर हैं, उसे पाने के लिए पूनम को कड़ी मेहनत करनी पड़ी. पूनम की मेहनत और काम के प्रति लगन ने उन्हें वह प्रसिद्धि प्रदान की है, जो एक सक्सेसफुल पर्सन में होता है.

वहीं, इन दिनों पूनम दुबे के कई वीडियो इंटरनेट पर छाए हुए हैं, जिसमें से एक है उनकी फिल्म 'सुहागरात' का गाना 'फुलवा से सजल'. वहीं पूनम का दूसरा वीडियो 'बतिया मान ऐ सइयां जी' गाने का है. आकर्षक नैन नक्श वाली पूनम की उम्दा अदाकारी उन्हें भीड़ से अलग करती है.वे कहती है की सच बोलना अगर बगावत है तो समझो हम सब बागी हैं.अक्सर पर्दे के पीछे का सच जुबान पर ला कर वे चर्चा में आ जाती है पूनम ने कल अपने लाईव शो के दौरान पटना में पत्रकारों से बातचीत करते हुए कहा की उन्होने बिना किसी फिल्मी परिवेश के और ना ही किसी गॉडफादर के सहारे बल्कि अपने टैलेंट के दम पर भोजपुरी सिनेमा में अपनी खुद की पहचान बनाई । पूनम दुबे की पहचान भोजपुरी सिनेमा जगत में टैलेंटेड अभिनेत्री के रूप में होती है पूनम काफी संजीदा है साथ ही साथ अपने टैलेंट के कारण भोजपुरी के सभी बड़े निमार्ता निर्देशक की पसंद भी। बातचीत के क्रम में पूनम ने बताया कि अच्छे और बुरे लोग सभी जगह होते हैं यह आप पर डिपेंड करता है कि आप कैसे हैं अगर आप अच्छे हैं तो बुरे लोग आपका कुछ भी बुरा नहीं कर पाते। भोजपुरी सिनेमा का भविष्य उज्जवल बताने वाली पूनम कहती है कि वर्तमान समय में भोजपुरी सिनेमा प्रयोगवाद के दौर से गुजर रहा है नए विषय वस्तु की फिल्में बन रही है

अपने द्वितीय पारी में जदयू को नए धार देने में लगे है बेगूसराय जदयू जिला अध्यक्ष भूमिपाल राय

पूर्व विधान परिषद के सदस्य व जदयू के जिला अध्यक्ष भूमिपाल राय अपने द्वितीय पारी में नए रंग में दिख रहे हैं।कुछ माह पहले ही संगठन के चुनाव में इन्हें दुबारा जदयू का जिला अध्यक्ष बनाया गया है।

शराबबंदी व दहेज बन्दी जैसे कार्यक्रम को जमीन पर उतार कर जन जन तक पहुँचाया।

नीतीश सरकार के सरोकारी व लोक कल्याणकारी निर्णय को वर्ष 2016 व 2017 में बेगूसराय के 18 प्रखंड के लगभग सभी पंचायत में प्रेरक टेली फिल्म बनाकर शराबंदी व दहेज पर मुक्ति गाथा बनाकर भूमिपाल राय ने जन जन तक पहुँच कर मुख्यमंत्री के कार्यक्रम के प्रति जागरूकता अभियान चलाया था।लगभग 4 लाख लोगों को फिल्म दिखा कर लोगो से शराब छोड़ने की अपील किया गया वही दहेज कुप्रथा पर फिल्म के माध्यम से लोगो को प्रेरित किया था। जल जीवन हरियाली को लेकर भूमिपाल राय इन दिनों दलीय व सामाजिक कार्यक्रम को भी एक नया रूप दे रहे हैं। पिछले दिनों छठ महोत्सव के अवसर पर बेगूसराय के रचियाही में मार्तण्ड उत्सव मनाकर हजारो लोगो को जल जीवन हरियाली थीम को समझाने में

कामयाब रहे।इस कार्यक्रम में सभी अतिथि को पेड़ देकर पर्यावरण के प्रति रुझान को मजबूत किया गया।वही इन दिनों संगठन के लगभग सभी कार्यक्रम में बूथ बूथ जाकर जल जीवन हरियाली के महत्व को लेकर लोगो को जागरूक कर रहे हैं।सभी कार्यक्रम में पेड़ बांटे जा रहे हैं।

भूमिपाल राय बताते हैं कि बिहार के मुख्यमंत्री जी के हम सब सिपाही है।वे पिछले 15 वर्षों से बिहार में सामाजिक उदय का प्रयास कर रहे हैं।न्याय के साथ विकास का संकल्प ही बिहार मॉडल है।बिहार मॉडल से ही देश आगे जाएगा।हमारे नेता नीतीश कुमार जी अगड़ा, पिछड़ा,अति पिछड़ा, दलित, महादलित, अल्पसंख्यक सभी के लिये न्याय के साथ विकास कर रहे हैं।बिहार का यही मॉडल आज देश के सभी राज्यों को संदेश दे रहा है। इन दिनों ठंड से बेपरवाह भूमिपाल राय संगठन को नए धार देने में लगे हैं।प्रखंड स्तर पर संगठन को मजबूत करने के लिये कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं।हर बूथ पर 30 यूथ के एजेंडा पर कार्य चल रहा है।बैठक में कार्यकर्ता को सरकार की योजनाओं पर सरजमीं उतारने के लिये नजर रखने की बात की जा रही है।जदयू के सांगठनिक गतिविधि से विरोधी दल के भी पसीने छूट रहे हैं।

कुष्ठ कॉलोनी के लोगों के बीच पुलिस कप्तान कुमार आशीष ने किया कंबल का वितरण

नये वर्ष के उपलक्ष्य में खगड़ा स्थित माछमारा में कुष्ठ कॉलोनी के लोगों के बीच जिला पुलिस कप्तान कुमार आशीष ने किया कंबल का वितरण। इस मौके पर 170 से ज्यादा किया गया कंबल वितरण।कंबलों का वितरण सामुदायिक पुलिसिंग के तहत किया गया।युवाओं और आम नागरिकों के सुख दुख में सहभागी बनते हुए उनसे प्रशासन की मदद करने का भी आवाह्न किया गया।आम लोगों के सहयोग से ही अपराध पर प्रभावकारी नियंत्रण किया जा सकता है। कड़ी मेहनत और सच्ची लगन हो तो रास्ते में जितनी भी बाधाएं हो दूर हो सकती है:-कुमार आशीषकुमार आशीष ने रिक्शा व ठेला चलाने वाले लोगों के बच्चों से मिले।बच्चो से मिलकर श्री कुमार आशीष ने उनसे उनके शिक्षा के बारे में पूछा और कहा कि आप अगर अच्छे से पढ़ेंगे तो आप भी आगे चलकर उच्च पद पर जा सकते हैं।इसके लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ेगी। किशनगंज/धर्मेन्द्र सिंह, जिला पुलिस कप्तान कुमार आशीष ने खगड़ा के माछमारा में नववर्ष के मौके पर भीषण ठंड से ठिठुर रहे गरीबों और असहाय के बीच कंबल वितरण कर उन्हें राहत पहुंचाने का कार्य किया।आपको मालूम हो कि माछमारा में वितरण करने के बाद पुलिस कप्तान श्री कुमार ने शहर में घूम घूम कर ठंड से ठिठुर रहे लोगों को कंबल ओढ़ाया।इस मौके पर बड़ी तादाद में गरीब परिवारों के लोग कंबल के लिए पहुंचे।जिन्हें पुलिसकर्मियों ने बारी-बारी से कंबल प्रदान किया।जिससे गरीब और असहाय लोगों के चेहरे खुशी से खिल उठे।श्री कुमार के मानवता और आत्मियता को देख लोगों ने उनकी सराहना की।कुछ लोगों का कहना था कि कड़ाके की ठंड में ठिठुर रहे गरीबों व असहायों को कंबल बांट कर पुलिस कप्तान ने मानवता की मिशाल पेश कर दी और पिपुल्स फ्रेंडली होने के दावे को सच कर दिखाया।इस मौके पर मुख्यालय डीएसपी अजय झा, सर्किल

इंस्पेक्टर इरशाद आलम, इंस्पेक्टर मनीष कुमार, सुनील कुमार, टाउन थानाध्यक्ष राजेश कुमार तिवारी, सुदेश कुमार सहित कई अन्य पुलिस पदाधिकारी और कर्मी उपस्थित थे।

बिहार पुलिस एसोसिएशन के अध्यक्ष मृत्युंजय कुमार सिंह की कलम से पढ़िए ज्ञान की कुंजी

दुनिया में जीने के लिए इंसान के जीवन - ज्ञान की कुंजी

जीवन को जानना और समझने के साथ ज़िंदगी सकारात्मक सोच - विचार और अच्छे कर्म के साथ कैसे जिए .... संसार के अधिकतर इंसान उलझा हूवा है । हल ढूँढने की कोसिस करते रहता है पर मार्ग मिलने पर भी संतुष्ट नही हो पा रहा है । इसका मूल कारण इंसान की ख़्वाहिशें .. उसे संतुष्ट होने नही दे रही है । हम पुलिस सेवा में आए ... एसोंसीएशन के अध्यक्ष बने । पहचान मिला नाम के साथ ख्याति मिला । हमें संतुष्टि होनी चाहिए ।..... पर इंसानी आदतें ख़्वाहिशें कही न कही कुछ मन - मस्तिष्क हो दबी होगी । इससे निश्चित रूप से निकलने के लिए .... कृष्ण के गीता उपदेश से ज्ञात कर ... जीवन पथ पर गतिमान होना चाहिए । ज़िंदगी को खुशी पूर्वक जीने के मूल मंत्र खुद की संतुष्टि को अपने सोच - कर्म के दिनचर्या में अमल लाय । अपने को हर इंसान पूर्ण - और सत्य का प्रतिबिम्ब समझता है । पर क्या ए सही में सत्य है । इसे खुद को खुद से समीक्षा के जरूरत है ।

ह्सत्य" की "भूख" सभी को है लेकिन.... जब "परोसा" जाता है तो बहुत कम लोगों को इसका "स्वाद" पसंद आता है

सफलता के 21 मंत्र

1. खुद की कमाई से कम खर्च हो ऐसी जिन्दगी बनाओ..!
2. दिन में कम से कम 3 लोगों की प्रशंसा करो..!
3. खुद की भुल स्वीकारने में कभी भी संकोच मत करो..!

4. किसी के सपनों पर हँसो मत..!
5. आपके पीछे खडे व्यक्ति को भी कभी कभी आगे जाने का मौका दो..!
6. रोज हो सके तो सुरज को उगता हुए देखे..!
7. खुब जरुरी हो तभी कोई चीज उधार लो..!
8. किसी के पास से कुछ जानना हो तो विवेक से दो बार...पूछो..!
9. कर्ज और शत्रु को कभी बडा मत होने दो..!
10. ईश्वर पर पूरा भरोसा रखो..!
11. प्रार्थना करना कभी मत भूलो, प्रार्थना में अपार शक्ति होती है..!
12. अपने काम से मतलब रखो..!
13. समय सबसे ज्यादा कीमती है, इसको फालतु कामो मैं खर्च मत करो...!
14. जो आपके पास है, उसी में खुश रहना सिखो..!
15. बुराई कभी भी किसी कि भी मत करो, क्योकिं बुराई नाव में छेद समान है, बुराई छोटी हो बडी नाव तो डुबो ही देती है..!
16. हमेशा सकारात्मक सोच रखो..।
17. हर व्यक्ति एक हुनर लेकर पैदा होता है बस उस हुनर को दुनिया के सामने लाओ..!
18. कोई काम छोटा नही होता हर काम बडा होता है जैसे कि सोचो जो काम आप कर रहे हो अगर वह काम आप नही करते हो तो दुनिया पर क्या असर होता..?
19. सफलता उनको ही मिलती है जो कुछ करते है।
20. कुछ पाने के लिए कुछ खोना नही बल्कि कुछ करना पड़ता है।
21. एक आखरी बात जीवन में "गुरु" न हो तो जीवन बेकार इसलिए जीवन में "गुरू" जरूरी हैं "गुरुर" नहीं पेड बूढा ही सही, आंगन में रहने दो, फल न सही, छाव तो अवश्य देगा
ठीक उसी प्रकार माता-पिता बूढे ही सही,घर में ही रहने दो,
दौलत तो नहीं कमा सकते,
लेकिन बच्चों को संस्कार अवश्य देंगे ।धन और धर्म (कर्म) में एक को चुनना हो तो कर्म को चुने । धन स्थिर नही होता पर कर्म से प्राप्त फल आप रहे या ना रहे जनमानस में आपके नाम से रहता है ।

छपरा की बेटी बनी झारखंड की विधायक

छपरा जिले के#एकमा भरहोपुर की बेटी दीपिका झारखंड के गोड्डा जिला के महगामा सीट से बनी है विधायक. एकमा थाना के के भरहोपुर की बेटी दीपिका पांडेय सिंह ने झारखंड में संपन्न हुए चुनाव में जीत हासिल कर जिले का मान बढ़ाया है। उन्होंने गोड्डा जिला के महगामा सीट से कांग्रेस प्रत्याशी के रुप में बीजेपी के प्रत्याशी अशोक भगत को करीब 12499 वोटों से हराकर जीत हासिल की है। जिसको लेकर उनके गाँव में जश्न का महौल है । प्रियंका पांडेय सिंह के चुनाव जीतकर विधायक बनने की खबर एकमा में लोगों को मिली तो वे खुशी में झूम उठे व मिठाईयां बांटी। नव निर्वाचित विधायक एकमा व भरहोपुर निवासी अरुण पांडेय की पुत्री है। जो रांची में ही रहकर अपना पढ़ाई की है ।

झारखंड की सबसे कम उम्र की विधायक

बड़कागांव से कांग्रेस के टिकट पर जीत हासिल कर इतिहास रचनेवाली अंबा प्रसाद ने पिता योगेंद्र साव और मां निर्मला देवी के आंदोलन को न सिर्फ जिंदा रखा, बल्कि उनकी राजनीतिक विरासत को भी बचाए रखने में कामयाब हुईं। अंबा ने कभी सोचा भी न था कि वे विधायक बनेंगी, लेकिन माता- पिता के जेल जाने और राज्य बदर होने के बाद उन्होंने शपथ ली थी कि बड़कागांव विधानसभा क्षेत्र में माता -पिता के अधूरे कार्यों को वे पूरा करेंगी। पिछले चार वर्षों से वे क्षेत्र में सक्रिय रहीं। कार्मेल स्कूल से पढ़ाई करने के बाद 12वीं की पढ़ाई डीएवी स्कूल, हजारीबाग से पूरी की। 2009-12 में विभावि से एलएलबी की डिग्री हासिल करने के बाद संत जेवियर्स कॉलेज, रांची से 2012-14 में पीजीडीएम (एचआर) की डिग्री हासिल की। उसके बाद सिविल सर्विसेज की तैयारी के लिए दिल्ली चली गईं। इसी क्रम में कफन सत्याग्रह के दौरान माता निर्मला देवी और पिता योगेंद्र साव को जेल भेज दिया गया, तो अंबा प्रसाद दिल्ली की पढ़ाई छोड़कर हजारीबाग लौट आई। फिर हजारीबाग कोर्ट में प्रैक्टिस शुरू किया और माता -पिता पर दर्ज मुकदमों को उन्होंने देखना शुरू कर दिया।

शराब के अवैध कारोबार को रोकने के लिए पुलिस के द्वारा विशेष समकालीन अभियान चलाया जा रहा है: कुमार आशीष

किशनगंज शराब तस्करों की गतिविधियों और छिपाकर बेचने के धंधे को रोकने के लिए डॉग स्कवॉयड टीम किशनगंज पहुंची। पुलिस कप्तान कुमार आशीष के निर्देश पर एसआइ सरोज कुमार के नेतृत्व में गठित टीम ने दिनांक- 15.12.2019 को शहर के विभिन्न स्थानों पर छापेमारी कर भारी मात्रा में शराब की खेप को जब्त कर लिया।आदिवासी छैतन टोला में डॉग स्कवॉयड के सहारे की गई छापेमारी में पुलिस ने 05 टीना गुड़ सहित 25 लीटर देशी शराब जब्त किया।जबकि शराब की भट्टी और अन्य उपकरणों को मौके पर ही नष्ट कर दिया गया। हालांकि छापेमारी की भनक मिलते ही शराब कारोबारी शुक्ला बास्की मौके से फरार हो गया। पुलिस ने शुक्ला की तलाश में उसके घर में भी दबिश दी।लेकिन घर के सभी सदस्य गायब मिले।

इस संबंध में जिला पुलिस कप्तान कुमार आशीष ने बताया कि शराब के ठिकानों का पता लगाने के लिए पूर्णिया से डॉग स्कवॉयड टीम पहुंची है।मद्यनिषेध कानून का सख्ती से पालन करने के लिए टीम के द्वारा छापेमारी शुरू की गई है।शराब तस्कर के द्वारा जिस जगह शराब छिपा कर रखा गया है।इसे सूंघ कर डॉग स्कवॉयड टीम पता लगा लेगी।अगर किसी घर मे पीने के लिए शराब रखा गया है वहां भी कार्रवाई की जाएगी।उन्होंने कहा कि शराब के अवैध कारोबार को रोकने के लिए पुलिस के द्वारा विशेष समकालीन अभियान चलाया जा रहा है।नेपाल और बंगाल से सटी सीमाओं पर विशेष सतर्कता बरती जा रही है।इस छापेमारी टीम में टाउन थाना के शहनवाज खान, राम विनय प्रसाद, राजकुमार राम, संजय कुमार यादव सहित सशस्त्र बल के जवान शामिल थे।

तस्करों से ज्यादा अलर्ट है पुलिस विभाग

नए साल को रंगीन बनाने की जुगत में शराब तस्कर जुट गए हैं। इस बात की भनक पुलिस को भी है। वार्ड नंबर 24 छेतन टोला स्थित आदिवासी बस्ती में छापेमारी में देसी शराब की भट्ठी का भंडाफोड़ हुआ। स्थानीय लोगों से पूछताछ में बताया कि यहां शराब बनाने का काम बेधड़क चल रहा था।शाम होते ही पियक्कड़ों का मजमा लग जाता है। सिर्फ चेकपोस्ट पर ही वाहनों की जांच की जाती है, लेकिन शहर में प्रवेश के दर्जनों रास्ते हैं।बंगाल से शराब की छोटा खेप पहुंच रही है। बंगाल के चाकुलिया की ओर से खगड़ा, बालिचुका होकर कैलाश चौक, बंगाल के मलद्वार से पूरब पाली सहित कई रास्ते हैं, जिसका प्रयोग शराब तस्कर करते हैं। सभी रास्तों पर हर वक्त पहरा संभव नहीं है। दिनांक-13.12.2019 को उत्पाद विभाग ने एक ट्रक से 500 कार्टन शराब किया था जब्त किशनगंज के रास्ते राज्य के कई जिलों में पहुंचती है शराब की खेप बताते चलें कि दिनांक-13.12.2019 की सुबह उत्पाद विभाग ने 500 कार्टन शराब से लदा ट्रक जब्त किया था।शराब बंगाल से मुजफ्फरपुर ले जाई जा रही थी।बंगाल से किशनगंज के रास्ते ही शराब की खेप सूबे के अन्य हिस्सों में जाती है।ठंड में सुबह घने कुहासा का फायदा उठाकर शराब लेकर तस्कर जाते हैं। एनएच से रोज पांच हजार ट्रक गुजरते हैं।सभी की जांच संभव नहीं है।पुलिस या उत्पाद विभाग सटीक सूचना पर ही कार्रवाई करता है। तस्करों का नेटवर्क इतना तगड़ा है कि शराब लदे वाहन के आगे व पीछे गिरोह के सदस्य स्कॉट करते हैं।गश्ती या पुलिस जांच की सूचना मोबाइल से ट्रक में बैठे अपने गुर्गे को देते हैं।

बढ़ते उम्र में आँखो की बीमारियों को नजरअंदाज ना करें हो सकता है मोतियाबिंद

राजेश पंजिकार (ब्यूरो चीफ)

आँखो के प्रति सचेत रहे ,सजग रहें,क्योकि आँखें हैंअनमोन.बढते उम्र के साथ बदले मौसम मेंआँखो के प्रति लापरवाही किसी गंभीर बीमारी का कारण वन सकता है.यह बात वताई बांका आँख कान ,नाक के प्रसिद्ध चिकित्सक डा० अनिल कुमार नें चर्चित बिहार केबिशेष भेंट के क्रम में इन्होने बताया कि आँख कई छोटी छोटी ग्रंथी से वनी एक जटिल ग्रंथी हैं जो बहुत ही कोमल होती है.आम तौर पर नेत्रश्लेस्मा के शोथ को सामान्य भाषा मे आँखें आना कहते हैं यह शोथ कीटाणुओं ,एलर्जीकरने बाले विकार पैदा करने बाले पदार्थो से हो जाता है.

आम तौर पर इसका कारण पता कर पाना मुश्किल होता है.साधारणतया इससे दोनो आँखो पर असर होता है.कुछ बैक्टिरिया और बायरस यह संक्रमण पैदा करते है जिससे ऑखों मे यह विकार उत्पन्न हो जाता है.इस तरह की समस्या पैदा होने पर तुरंत अपने चिकित्सक से मिलें.उन्होने आगे बतायाकि आँखों का एक महत्वपूर्ण अंग जिसे कॉर्निया कहते हैं बहुत ही नाजुक होता हैयह पूरी तरह से पारदर्शी रहे इसीलिए इसमे खून का वहाव भी नही होता है.आँखों मेछाला होना भी एक गंभीर समस्या है.इससे कॉर्नियां अपारदर्शी हेतर अंधापन भी हो सकता है.इसके लिए उचित और पर्याप्त देख भाल की जरूरत होती है.कंर्नियीम मेंछाला बाहरी कणों के आँखों मे चले जाने समक्कमण या बिटामिन ए की कमी सेभीहो सकता है.कॉर्नियां के छाला से आशिक या पूरी तरह से दागदार (ल्यूकोमा) या अपारदशीर्ता होने की संभावना होती है.कॉर्नियां के धाव के कारण हुए अंधे पन मे केवल कॉर्नियां के प्रत्यारोपण से आँखो कीरोशनी बापस आ सकती है. मोतियाबिंद के बारे मे पूछे जाने पर उन्होने बताया कि मोतियाबिंद आम तौर पर बूढे याअधिक उम्र मे होता है लेकिन कभी कभी यह वीमारी नवजात शिशु में भी.मोतियाबिंद पाया जाता है.इसका कारण जव शिशु माँ केगर्भ के दौरान मां को जरमन मीजील्स का संक्रमण हुआ हो ऐसे मे शिशु को किसी योग्य चिकित्सक से दिखाना चाहिए .उन्होने आगे बताया कि अकर बूढे लोगो मे डायविटिस और ब्लड प्रेसर से मोतियाबिंद होता है लेकिन आधुनिक तकनीकि इलाज से यह संभव है कि आँखों की रौशनी पुनः बापस आ सकती है.बैसे कभी कभी ऑखों की लापरवाही काला मोतियाबिंद काभी कारण बन जाता है जो एक जटिल रोग है.

डा० अनिल कुमार सेभेटबार्ता करते राजेश पंजिकार

भाजपा राष्ट्रीय मीडिया सह प्रभारी एवं विधान पार्षद श्री संजय मयूख जी सुप्रीम कोर्ट बार एसोसिएशन के कार्यकारिणी सदस्य निर्वाचित होने पर श्रीमती प्रेरणा कुमारी जी को बधाई और शुभकामनाएं देते हुए । वर्तमान में श्रीमती प्रेरणा कुमारी जी सुप्रीम कोर्ट महिला अधिवक्ता एसोसिएशन की महासचिव भी हैं । इससे पूर्व में ये सुप्रीम कोर्ट में हरियाणा राज्य के लिए डिप्टी एडवोकेट जनरल, दो बार SCBA के कार्यकारिणी सदस्य और सुप्रीम कोर्ट एसोसिएशन के कोषाध्यक्ष भी रह चुकी हैं।

श्रीमती प्रेरणा कुमारी, अधिवक्त, सर्वोच्च न्यायालय

दरभंगा स्नातक निर्वाचन क्षेत्र से चुनाव की तैयारी

दरभंगा स्नातक निर्वाचन क्षेत्र से चुनाव की तैयारी में जुटे समाजसेवी रजनीकांत पाठक का अंदाज वोटरों के सर चढ़कर बोल रहा है विगत 6 माह से रजनीकांत पाठक बेगूसराय समस्तीपुर मधुबनी दरभंगा के गांव-गांव में जाकर युवा स्नातक वोटरों को जागृत कर रहे हैं साथ ही साथ उन्हें उनके मताधिकार के बारे में भी बता रहे हैं.दरभंगा।इस बार दरभंगा स्नातक चुनाव 2020 में युवा समाजसेवी रजनीकांत पाठक का नाम तेजी से उभरा है। मूल रूप से बखरी के निवासी रजनीकांत पाठक सोशल वेलफेयर में मास्टर डिग्री हैं।सामाजिक गतिविधियों में पिछले 15 वर्षों से सक्रिय रहे हैं। देश स्तर पर कई संस्था इन्हें सम्मान भी कर चुकी है। जुलाई 2019 से स्नातक के दरबार में कार्यक्रम चला कर रजनीकांत पाठक ने वैसे सामान्य स्नातक को भी दरभंगा स्नातक एमएलसी चुनाव का मतदाता बनने के लिये प्रेरित किया जो आज तक इस चुनाव की प्रक्रिया से अनजान थे।दरभंगा स्नातक के कुल 77 प्रखण्ड में जाकर रजनीकांत पाठक ने ह्लस्नातकों के दरबार मेंह्व कार्यक्रम चला कर इस बार

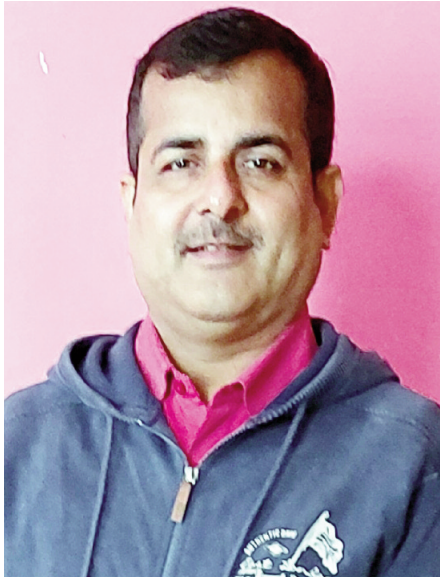

सामान्य स्नातक को भारी संख्या में मतदाता बनाने में कामयाबी हासिल की है।रजनीकांत पाठक बताते हैं कि इस बार का चुनाव गुपचुप नहीं होने जा रहा है।इस बार स्नातक मतदाता परिवार के खिलाफ है।मधुबनी,दरभंगा,समस्तीपुर और बेगुसराय में एक अनुमान के अनुसार 50 से 60 प्रतिशत नए मतदाता बने है।इस बार 25 से 40 वर्ष के उम्र के मतदाता 60 प्रतिशत से भी अधिक हैं।आपको बता दें कि समाजवादी सोच रखने वाले रजनीकांत पाठक से किसी दल से समर्थन संबंधित बात पूछी जाती है तो मुस्कुरा कर सवाल टालते हुए कहते हैं इस बार लोग दिल की सुनेंगे और दिल जो कहेगा वही करेंगे. रजनीकांत पाठक वेब जर्नलिस्ट्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया के संस्थापक सदस्यों में से एक हैं और फिलहाल इसके संरक्षक हैं. सरल हृदय और मीठी बोली के चलते बड़ी संख्या में लोगों का समर्थन इन्हें मिल रहा है. रजनीकांत पाठक के मैदान में आने से साधारण मतदाता खुद को सहज महसूस कर रहे हैं और हर जाति वर्ग का समर्थन मिलने की उम्मीद लिए रजनीकांत पाठक भी जमकर पसीना बहा रहे हैं.

नल जल योजना की उड़ायी जा रही है धज्जियां

विरेश कुमार

बेगूसराय। वर्तमान पंचवर्षीय वित्तीययोजना क कार्यकाल समाप्तिकी ओर है किंतु मुख्यमंत्री के महत्वकांक्षी सात निश्चय योजना में से एक हर घर नल योजना टांय-टांय फीस साबित हो रहा है। लाखों करोड़ों की निकासी एवं खर्च के बाद भी हर घर नल जल की पहुंच नही हो सकी है। जानकारी के अनुसार जिले के सभी 257 पंचायतों में लाखों रुपये की लागत से हर घर शुद्ध जल पहुंचाने के लिए नल लगाने की योजना बिगत पांच वर्षों में कागजों पर ही सिमटी हुई है। कई बार सरकार के निर्देश के बाद भी पदाधिकारियों एवं जनप्रतिनिधि खानापूर्ति कर एवं जनता की आंखों में धूल झोकते चले आ रहे हैं। जानकारों के अनुसार पूर्व में कई गांव में घर-घर शुद्ध जल पहुंचाने की नियत से ही जल मीनार बनाया गया था। जिस पर लाखों रुपये की खर्चा हुआ था। वर्तमान में बेगूसराय जिले में एक भी जल मीनार सही नहीं रहने के कारण जनता की आशाओं पर तुसाराघात हो गया, फिर एक बार जनता की आंखों में धूल झोंकने के लिए पुरानी गोतल में शराब की तरह हर घर नल जल योजना लायी गयी है, लेकिन सरकारी मुलाजिमों की अर्कनगण्यता के कारण यह योजना दम तोड़ता नजर आ रहा है। सूत्रों के अनुसार इसयोजना में लगे ठेकेदार द्वारा विछाया गया पाईप लाईन लीकेज है जो लूट खसोट का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है। पदाधिकारी एवं ठेकेदार की गठजोड़ में हर घर नल जल योजना का बंदरबांट कर दयि है। इस कारण आज जब मुफ्त में शुद्ध जल सेन करने के बजाय बोतल एवं डिब्बा में जल खरीद कर सेवन कर रहे हैं। जिले के कई समाजसेवियों ने मुख्यमंत्री का ध्यान आकृष्ट कराते हुए अधिकारी, ठेकेदार गठजोड़ को समाप्त कर हर घर नल जल योजना को मूर्तरूप देने की मांग की है। जिससे आम लोग स्वस्थ्य रह सके। इस शुद्ध जल को लेकर कई तरह की बीमारी उत्पन्न से ग्रसित हो रहे हैं लोग।

कविता

आज कल के
फेर में गया
तीन दिन बीत।
गुरूजन का
आशीष ले हो
जायेगा जीत।।
समय के साथ
चलता चल।2
बीते दिन की
याद भुलाकर
आगे बढ़ता चल।।
नियति का है नियम जो भी, भुलाना है उसे मुश्किल।
मरण के साथ है जीवन, उमर को पार करता चल।।
सुबह के साथ है संध्या, दिवा के साथ है रजनी।
क्षुधा के साथ तृष्टि है, करम कल स्वाद चखता चल।।
करो मत बात औरो की, करो निज काम की बातें।
सभी को मानकर अपना, जहां से प्यार करता चल।।
यह दरिया है मुश्किल अपना, जहां से प्यार करता चल।
अजी! माला समंदर में, लहर का तालगिनता चल।

- कवि मौलेश्वरी सिंह 'विद्याभूषण'

ग्राम : चांदपुरा, पिन : नवभतई।
थाना : संग्रामपुर, जिला : मुंगेर (बिहार)

कर्मठ बनो, विवाद से बचें

जीवन में सफल होने के तेरह बेहतरीन टिप्स के बारे में उल्लेख करने से पहले मैं आप सबको यह बताना चाहूँगा कि ये टिप्स दुनिया के सफलतम व्यक्तियों द्वारा दिए गए हैं। लोग इस बात का रोना रोते हैं कि मेरी उम्र अधिक हो गयी, मेरा फैमिली बैकग्राउंड उतना अच्छा नहीं है लेकिन कहीं न कहीं सबके मन में एक सामान्य इच्छा जरूर होती है कि कैसे लाइफ में सक्सेसफुल बनूँ।. हालाँकि लोगों के सफलता का मापदंड अलग अलग होता है। कोई पैसा चाहता है तो कोई शोहरत, कोई अच्छा फमिली लाइफ जीना चाहता है तो कोई ऐशोआराम। इसमें कुछ लोग सफल हो भी जाते हैं और कुछ नहीं। सफलता हासिल करना उतना आसान नहीं है अपितु इसे हासिल किया जा सकता है। हालाँकि जीवन में सफल होने के कई उपाय हो सकते हैं लेकिन सफलतम लोगों द्वारा अपनाये गए उपाय अपेक्षाकृत कम श्रम साध्य होते हैं।

१. हमेशा बड़ा सोचो

ज्यादातर लोग अपना गोल बहुत ही छोटा गोल करते हैं और उसे प्राप्त कर खुश हो जाते हैं जबकि कुछ लोग बहुत बड़ा गोल पाने की कोशिश तो करते हैं लेकिन हासिल नहीं कर पाते। इसलिये आप अपना गोल काफी सोच समझ कर सेट करें और बड़ा सोचें।

२. उसी काम को करें

यह पता लगायें कि आपको क्या करना अच्छा लगता है और उसी काम को करें : काम यदि आपकी रूचि के अनुसार होता है तो आप उसमे अपना 100 प्रतिशत देते हैं । यदि आप अपना काम अच्छे से करते हैं और इसके बदले आपको कुछ भी नहीं मिलता है तो आप समझिये कि आप सफलता के मार्ग पर अग्रसर हैं।

३.सफलता का दृढ निश्चय करो

जब आप यह निश्चय करते हैं कि चाहे कुछ भी हो, कितना भी मेहनत करना पड़े हमें अपना गोल अचीव करना है तो यह संकल्प हमें सफल बनाता है। इस संकल्प को निरंतर बनाये रखना पड़ता है।

४. असफलता से मत डरो

एक प्रसिद्ध उक्ति है कि असफलता का मतलब है कि सफलता का प्रयास पूरे मन से नहीं किया गया। असफलता किसी काम को दुबारा शुरू करना का एक मौका देता है कि उसी काम को और भी अच्छे तरीके से किया जाय ।

५.अपने जीवन को संतुलित बनाना सीखें

हमारे जीवन में निरंतर कई तरह की लड़ाईयां चलती रहती हैं ; पारिवारिक और व्यवसायिक , शांति और कलह, आदि। हम किसी में निपुण नहीं हो सकते लेकिन इसे हम कैसे करते हैं यह हमारी सफलता को सुनिश्चित करती है।

७.अपने सफल होने की क्षमता पर विश्वास रखें

मन में यह विश्वास जरूर होना चाहिए कि मैंने जो सपना देखा है उसे मैं पूरा कर सकता हूँ।

८.कर्मठ बनो

कुछ लोग ऐसे होते हैं तो गोल तो बिग सेट कर लेते है लेकिन उसके अनुरूप कर्म नहीं करते है जिससे वे सफल नहीं हो पाते हैं। सफल होने के लिए गोल के हिसाब

से मेहनत करनी पड़ती है

९.विवाद से बचें

आपके दैनिक जीवन में कई तरह के लोग आते हैं। यह बहुत आवश्यक है कि आप लोगों के साथ कैसे डील करते हैं । किसी तरह का विवाद आपके सफलता के पथ का रोड़ा साबित होगा। सो एवाइड कन्फ्क्ट .

१०.अपनी सोच को हमेशा सकारात्मक रखें

जो व्यक्ति अपनी सोच को, अपनी मानसिक दशा को हमेशा पोजिटिव रखता है उसे सफल होने से कोई भी नहीं रोक सकता। ज्योंहि हम नकारात्मक सोचते हैं हम अपने गोल से दूर होते जाते हैं।

११.निराशा की कोई भावना आपको रोक नहीं सकती

कभी- कभी हम जब सफलता की राह पर अग्रसर होते हैं तो कुछ निराशात्मक बातें हमारे सामने आतीं हैं अगर हम उन बातों पर ध्यान न देकर सिर्फ अपने लक्ष्य के बारे में सोचते हैं तो हमें सफलता जरूर मिलती है।

१२. नए विचारों, नयी योजनायें अपनाने में घबराएँ नहीं

नए विचार नयी क्रांति को जन्म देती है। नए विचार, नयी योजनायें सफलता की धुरी होते हैं।

१३.सदैव कड़ी मेहनत की इच्छा बनाये रखें

सफल होने के लिए आपको एक सामान्य आदमी से ज्यादा काम करना होगा तभी आप टॉप पर पहुँच सकते हो। सदैब अपने अंतर्मन का सुनिए और पालन कीजिए जब भी हम कोई काम करते हैं, हम अपने आप से बातें करते हैं। हमें हमेशा अपने मन की सुनकर ही निर्णय करना चाहिए।

(गौरीशंकर सिंह ,दिल्ली एनसीआर ब्यूरोचीफ)
चर्चित बिहार राष्ट्रीय पत्रिका

फिल्म पत्रकार अनूप नारायण सिंह को वर्ष 2019 का सर्वश्रेष्ठ फि ल्म समीक्षक अवार्ड

बिग गंगा चैनल के चर्चित कार्यक्रम भोजपुरिया टनाटन के माध्यम से बतौर भोजपुरी फिल्म समीक्षक राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाने वाले वरिष्ठ पत्रकार अनूप नारायण सिंह को वर्ष 2019 के भोजपुरी सिनेमा के सर्वश्रेष्ठ समीक्षा का अवार्ड मिलने से पटना से लेकर मुंबई तक बधाइयों का तांता लगा हुआ है. 22 दिसंबर 2019 रविवार को बिहार की राजधानी पटना के होटल पनास में आयोजित एक भव्य कार्यक्रम में छपरा जिले के मशरख प्रखंड के अरना पंचायत निवासी वरिष्ठ टीवी पत्रकार अनूप नारायण सिंह को वर्ष 2019 के सर्वश्रेष्ठ फि ल्म समीक्षक के रूप में ग्लोबल बिहार फिल्म क्रिटिक्स एवार्ड से सम्मानित किया गया. बिहार राज्य महिला आयोग की अध्यक्ष श्रीमती दिलमणि मिश्रा ने यह सम्मान प्रदान किए इस अवसर पर पुरस्कार आयोजन समिति के प्रमुख फैशन डिजाइनर नीतीश चंद्र भी उपस्थित थे. टीवी पत्रकार अनूप नारायण सिंह को वर्ष 2019 का प्रतिष्ठित पुरस्कार मिलने पर भोजपुरी फिल्मों के महानायक कुणाल सिंह अभिनेता रवि किशन मनोज तिवारी दिनेश लाल

निरहुआ पवन सिंह प्रमोद प्रेमी यादव गुंजन सिंह अयाज खान अभिनेत्री गुंजन पंत अनारा गुप्ता संगीता तिवारी रानी चटर्जी सीमा सिंह ग्लोरी मोहंता अंजना सिंह अक्षरा सिंह नीलिमा सिंह निम्की मुखिया फेम रीना रानी फिल्म निमार्ता सुनील को बना रजनीकांत पाठक दिनकर भारद्वाज हमें कश्यप रोहित राज यादव फिल्म प्रचारक संजय भूषण पटियाला रामचंद्र यादव पवन दुबे सोनू सिंह अखिलेश सिंह, सिवान की सांसद कविता सिंह वरीय जदयू नेता अजय कुमार सिंह, पाटलिपुत्र के सांसद रामकृपाल यादव विधायक संजीव चौरसिया विधायक मिथलेश तिवारी पूर्व विधायक कृष्ण कुमार सिंह मंटू अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा के प्रदेश अध्यक्ष डॉ विजय राज सिंह फिल्मकार शैलेश कुमार सिंह वरिय अधिवक्ता ओम कुमार सिंह प्यार पुलिस एसोसिएशन के अध्यक्ष संजय कुमार सिंह बिहार यूथ बिल्डर एसोसिएशन के अध्यक्ष भूषण कुमार सिंह बबलू लोक गायिका देवी अंतरा सिंह गीतकार पवन पांडे गायक अजीत आनंद गोलू राजा ने बधाई दी है

राष्ट्र की शुभता को आहत करने के षड़यंत्र

नागरिकता संशोधन कानून का जैसा हिंसक विरोध असम एवं पश्चिम बंगाल के बाद अब दिल्ली में हो रहा है उससे यही पता चल रहा कि अराजक तत्व उत्पात पर आमादा हैं, वे देश को जोड़ना नहीं तोड़ना चाहते हैं। सरकारी एवं निजी संपत्ति को आग के हवाले करने और सड़क एवं रेल मार्ग को बाधित करने एवं आम जनता में हिंसा एवं आतंक पैदा करने वाले इन उपद्रवी तत्वों का दुस्साहस इसीलिए चरम पर है, क्योंकि कुछ राजनीतिक दल उन्हें उकसाने में लगे हुए हैं। इस प्रकार यह आगजनी, हिंसा, विस्फोटों की शृंखला, अमानवीय कृत्य अनेक सवाल पैदा कर रहे हैं। इनके पीछे किसका दिमाग और किसका हाथ है? आज करोड़ों देशवासियों के दिल और दिमाग में यह सवाल है। क्या हो गया है हमारे देश को? पिछले एक सप्ताह से हिंसा रूप बदल-बदल कर अपना करतब दिखा रही है- विनाश, सरकारी सम्पत्ति को नुकसान पहुंचाने और निर्दोष लोगों को डराने-धमकाने की। इस तरह की अराजकता कोई मुश्किल नहीं, कोई वीरता नहीं। पर निर्दोष जब आहत होते हैं तब पूरा देश घायल होता है। उन उपद्रवी हाथों को खोजना होगा अन्यथा उपद्रवी हाथों में फिर खुजली आने लगेगी। हमें इस काम में पूरी शक्ति और कौशल लगाना होगा। अराजक एवं उत्पादी तत्वों की मांद तक जाना होगा। अन्यथा हमारी खोजी एजेंसियों एवं शासन-व्यवस्था की काबिलीयत पर प्रश्नचिन्ह लग जाएगा कि कोई दो-चार व्यक्ति कभी भी पूरे देश की शांति और जन-जीवन को अस्त-व्यस्त कर सकते हैं। कोई हमारा उद्योग, व्यापार ठप्प कर सकता है। कोई हमारी शासन प्रणाली को गूंगी बना सकता है। पश्चिम बंगाल के बारे में तो यह लगभग पूरी तौर पर साफ है कि ममता बनर्जी सरकार नागरिकता कानून के विरोध में सड़कों पर उतरे अराजक तत्वों को परोक्ष तौर पर शह देने में लगी हुई है। यही कारण है कि वहां मालदा, हावड़ा और मुर्शिदाबाद में व्यापक पैमाने पर हिंसा और आगजनी देखने को मिली। यदि उपद्रवी तत्वों के खिलाफ सख्ती का परिचय दिया जा रहा होता तो यह संभव ही नहीं था कि बंगाल एवं असम में अब तक हिंसा कायम रहती और उसकी चिंगारी देश के अन्य हिस्सो में पहुंच पाती। यह मानने के अच्छे-भले कारण हैं कि संकीर्ण राजनीतिक कारणों से बंगाल, असम और अब दिल्ली में हिंसा को भड़काया जा रहा है। केंद्र सरकार के लिए यह आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य है कि वह इस तरह मचाए जा रहे उत्पात के लिए दोषी राजनीतिक दलों को जवाबदेह बनाए। चूंकि नागरिकता कानून की विरोधी हिंसा एवं हवाओं ने दिल्ली में भी अपने पैर पसार लिए हैं इसलिए केंद्र सरकार को अतिरिक्त सतर्कता बरतने के साथ ही सख्ती का भी परिचय देना होगा। नागरिकता संशोधन कानून देश के नागरिकों एवं अल्पसंख्यक समुदायों के खिलाफ नहीं है, कम से कम पढ़े लिखे लोग पढ़कर समझ ही विरोध करें। विरोधी एवं उत्पादी लोगों का दिल बड़ा है अच्छी बात है यदि आपको घुसपैठियों से दिक्कत नहीं तो उन बेचारे सैनिकों की बलि देने की क्या जरूरत है जो बार्डर पर तैनात हैं। सारे बार्डर खोल देने चाहिए ना? इतना बड़ा दिल है तो अपने घरों के दरवाजे भी छोड़ दीजिए खुले, सर्दी का मौसम है फुटपाथ पर सोने वाले लोग आराम से आकर सोएं घरों में। जब आप अपना घर खुला नहीं छोड़ सकते तो राष्ट्र को घुसपैठियों के लिये कैसे खुला छोड़ सकते हैं? कॉलेज स्टूडेंट का क्या मतलब है विरोध करने का? सड़कों पर उतरने का? बसें फूंकने का? विरोध का क्या यही तरीका है कि सरकारी संपत्ति में आग लगाओ? विरोध का मतलब नग्न अराजकता नहीं हो सकता। दिल्ली में अराजक भीड़ ने जिस तरह दिन-दहाड़े कई बसों और दोपहिया वाहनों को आग के हवाले किया उससे तो यही लगता है कि सुनियोजित तरीके से नागरिकता कानून विरोधी हिंसा को हवा दी जा रही है। चिंताजनक यह है कि यह खतरनाक काम देश के अनेक हिस्सों में हो रहा है। कई राजनीतिक दल इसके लिए अतिरिक्त मेहनत करते भी दिख रहे हैं। दुष्प्रचार में लिप्त ऐसे दलों की केवल आलोचना ही पर्याप्त नहीं।

उन्हें बेनकाब भी किया जाना चाहिए। इसके साथ ही मानवतावादी होने का मुखौटा लगाए उत्पाती तत्वों को यह सख्त संदेश भी देना होगा कि किसी भी सूरत में हिंसा को बर्दाश्त नहीं किया जा सकता। निःसंदेह किसी के लिए भी यह समझना कठिन है कि दिल्ली में जामिया मिलिया विश्वविद्यालय अथवा उत्तर प्रदेश में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के छात्रों को नागरिकता कानून का विरोध करने की जरूरत क्यों पड़ रही है? आखिर जब यह स्पष्ट है कि इस कानून का भारतीय मुसलमानों से कहीं कोई लेना-देना नहीं तब फिर उसके विरोध का क्या औचित्य? स्पष्ट है राजनीतिक अस्तित्व लगातार खो रहे राजनीतिक दल सत्ता तक पहुंच बनाने का यह अराजक रास्ता अख्तियार कर रहे हैं। उत्पात का पर्याय बन गए इस उन्माद भरे हिंसक विरोध से कड़ाई से निपटना इसलिए आवश्यक है, क्योंकि कानून के शासन एवं लोकतांत्रिक मूल्यों की मजाक हो रही है। अब युद्ध मैदानों में सैनिकों से नहीं, भीतरघात करके, निदोर्षों को प्रताड़ित एवं उत्पीड़ित कर लड़ा जाता है। सीने पर वार नहीं, पीठ में छुरा मारकर लड़ा जाता है। इसका मुकाबला हर स्तर पर हम एक होकर और सजग रहकर ही कर सकते हैं। यह भी तय है कि बिना किसी की गद्दारी के ऐसा संभव नहीं होता है। कश्मीर, पश्चिम बंगाल एवं अन्य राज्यों में हम बराबर देख रहे हैं कि प्रलोभन देकर कितनों को गुमराह किया गया और किया जा रहा है। पर यह जो घटना हुई है इसका विकराल रूप कई संकेत दे रहा है, उसको समझना है। कई सवाल खड़े कर रहा है, जिसका उत्तर देना है। इसने नागरिकों के संविधान प्रदत्त जीने के अधिकार पर भी प्रश्नचिन्ह लगा दिया, इसने भारत की एकता पर कुठाराघात किया है। यह बड़ा षड़यंत्र है इसलिए इसका फैलाव भी बड़ा हो सकता है। सभी राजनैतिक दल अपनी-अपनी कुर्सियों को पकडे. बैठे हैं या बैठने के लिए कोशिश कर रहे हैं। उन्हें नहीं मालूम कि इन कुर्सियों के नीचे क्या है। जब देश संकट में है हमारे कर्णधार कहे जाने वाले तथाकथित राजनीतिक दल एवं उनके नेता राष्ट्र को विखंडित करने के लिये लाठी-भालों से लड़ रहे हैं, कहीं टांगें खींची जा रही हैं तो कहीं परस्पर आरोप लगाये जा रहे हैं, कहीं किसी पर दूसरी विचारधारा का होने का दोष लगाकर चरित्रहनन किया जा रहा है। सभी दुराग्रही हो गए हैं। विचार और मत अभिव्यक्ति के लिए देश का सर्वोच्च मंच भारतीय संसद में भी आग्रह-दुराग्रह से ग्रसित होकर एक-दूसरे को नीचा दिखाने की ही बातें होती हैं। दायित्व की गरिमा और गंभीरता समाप्त हो गई है। राष्ट्रीय समस्याएं और विकास के लिए खुले दिमाग से सोच की परम्परा बन ही नहीं रही है। और तो और इन्हीं आग्रहों के साथ चुनावी वैतरणी पार करने का प्रयास किया जा रहा है। जब मानसिकता दुराग्रहित है तो दुष्प्रचारह्ल ही होता है। कोई आदर्श संदेश राष्ट्र को नहीं दिया जा सकता। सत्ता-लोलुपता की नकारात्मक राजनीति हमें सदैव ही उल्ट धारणा यानी विपथगामी की ओर ले जाती है। ऐसी राजनीति राष्ट्र के मुद्दों को विकृत कर उन्हें अतिवादी दुराग्रहों में परिवर्तित कर देती है। भारत एक धर्मप्राण देश है। यहां पूजा-उपासना की स्वतंत्रता है, यह वसुधैव कुटुम्बकम का उद्घोष करने वाला देश है, यही भारतीय संस्कृति की विशेषता है। यहां हिन्दू, मुसलमान ही नहीं जैन, बौद्ध, पारसी, सिक्ख, ईसाई सनातनी सभी मजहबों के लोग भी तो रहते हैं। ये सभी अल्पसंख्यक हैं पर वे राष्ट्र की मुख्यधारा से अलग नहीं हैं। जुड़े हुए हैं। वे कभी अपने को दोयम स्तर के नागरिक नहीं मानते। यही सांझा संस्कृति ही यहां की राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता का आधार है, लेकिन इसके बीच दरारें डाल कर राजनीतिक रोटियां सेकने के आग्रह, पूर्वाग्रह और दुराग्रह राष्ट्रीय जीवन के शुभ को आहत करने वाले हैं।

फिल्म समीक्षा : दबंग 3

रेटिंगः दो स्टार
निमार्ताः अरबाज खान,सलमान खान और निखिल द्विवेदी
निर्देशकः प्रभु देवा
लेखकः सलमान खान, प्रभु देवा, दिलीप शुक्ला, आलोक उपाध्याय
कलाकारः सलमान खान, किच्चा सुदीप, सोनाक्षी सिन्हा, साई मांजरेकर, अरबाज खान.
अवधिः 2 घंटे 39 मिनट

अमूमन लोग सफल फिल्म की फ्रेंचाइजी के सिक्वअल बनाकर दर्शकों को अपनी तरफ खींचने का काम करते हैं. दर्शक सोचता है कि यह पिछली फिल्म का सिक्वअल है, तो इस बार ज्यादा अच्छी बनी होगी, मगर अफसोस ह्यदबंगह्ल फ्रेंचाइजी के साथ ऐसा नहीं कहा जा सकता.हर सिक्वअल के साथ इसका स्तर गिरता ही जा रहा है. 2010 की सफल फिल्म ह्यदबंगह्लका निर्देशन अभिनव कष्यप ने किया था.और इस फिल्म ने सफलता के कई रिकार्ड बना डाले थे.उसके बाद इस फिल्म से अभिनव कश्यप को बाहर का रास्ता दिखा दिया गया था.इसका सिक्वअल दबंग 2ह्लह्ल 2012 में आयी थी,जिसे खुद अरबाज खान ने निर्देषित किया था,मगर पहले के मुकाबले यह कमजोर थी.पर सलमान खान के प्रशंसकों ने इसे सफल बना दिया था. अब पूरे सात वर्ष बाद इस फ्रेंचाइजी की अगली फिल्म दबंग 3ह्लह्लआयी है,जिसका निर्देषन सलमान खान के खास प्रभु देवा ने किया है,जो कि ह्यदबंग 2ह्ल से भी निचले स्तर की है. वैसे यह ह्यदबंगह्ल सीरीज की प्रिक्वअल फिल्म है.

कहानीः

दबंगह्लह्ल फ्रेंचाइजी की यह तीसरी फिल्म ह्यप्रिक्वअलह्ल है, इसीलिए कहानी अतीत में चलती है. फिल्म के शुरू होने पर एक षादी समारोह में पहुंचकर चुलबुल पांडे,माफिया डौन बाली सिंह के लिए काम करने वाले स्थानीय गुंडे द्वारा लूटे गए सोने के जेवर वापस दिलाते हैं. इसी केस के चलते चुलबुल पांडे की मुलाकात बाली सिंह से होती है और उन्हे अपने पुराने घाव याद आते हैं. फिर कहानी अतीत में चली जाती है.

चुलबुल पांडे को याद आता है कि वह धाकड़ पांडे से पुलिस इंस्पेक्टर चुलबुल पांडे कैसे बने थे.फिर खुशी(साईं मांजरेकर)का चुलबुल पांडे(सलमान खान)के संग रोमांस की कहानी षुरू होती है.दरअसल चुलबुल की मां नैनी देवी (डिंपल कपाड़िया) ने खुशी को चुलबुल के भाई मक्खी (अरबाज खान) के लिए पसंद किया था, मगर मक्खी को शादी करने में कोई रुचि नहीं थी.उधर चुलबुल और दहेज परंपरा के खिलाफ जाकर अपनी मंगेतर खुशी को डौक्टर बनाने के लिए कटिबद्ध है, मगर तभी उनके प्यार पर ग्रहण लग जाता है. बाली की नजर खुशी पर पड़ती है और वह खुशी को पाने के लिए उतावला होकर कुछ भी करने पर आमादा है. खुशी के लिए ही धाकड़ बदलते हैं, दुनिया के लिए कुछ अच्छा करने से लेकर एक निश्चित तरीके से अपने धूप का चश्मा लगाने तक,खुशी में सब कुछ शामिल हो जाता है और चुलबुल पांडे बन जाते हैं. मगर बाली सिंह (किच्चा सुदीप)का दिल खुशी पर आ जाता है, इसलिए बाली गुस्से व ईर्ष्या के चलते खुशी के साथ उसके परिवार का खात्मा कर देता है. फिर पूरी फिल्म की कहानी चुलबुल पांडे और बाली सिंह के बीच बदला लेने की कहानी बन जाती है.

लेखनः फिल्म की पटकथा स्वयं अभिनेता सलमान खान ने दूसरे लेखकों के साथ मिलकर लिखा है,इसलिए सलमान खान के प्रशंसक तो ताली बजाएंगे,मगर फिल्म

की पटकथा खामियां का पिटारा है.फिल्म में चुलबुल पांडे अपनी पत्नी रज्जो को खुशी के साथ अपनी प्रेम कहानी सुनाते हैं, जबकि रज्जो पांडे और खुशी एक दूसरे से परिचित थीं. यह बहुत अजीब सा है.कुछ अपमान जनक संवाद व दृश्य भी हैं.फूहड़ हास्य दृश्य भी हैं.ह्यदबंग 3ह्लमें कुछ भी नया नही है. इंटरवल से पहले फिल्म काफी धीमी है. फिल्म का सबसे बड़ा नकारात्मक पक्ष इसकी लंबाई है. क्लामेक्स जरुर रोचक बन गया है.

निर्देशक प्रभू देवा पूरी तरह से विफल रहे हैं. उनका सारा ध्यान सलमान खान को हीरो के रूप में चित्रित करने में ही रहा. उन्होंने फिल्म में वह सब दिखाया है,जो कि सलमान खान के प्रशंसक देखना चाहते हैं. इस चक्कर में वह खुद को दोहराने में भी पीछे नही रहे. फिल्म के तमाम मसालों में प्रभु ने दहेज, नोटबंदी, पानी के सरंक्षण जैसे मुद्दों को भी पिरोया है. सलमान खान ने जब जबभी सामाजिक संदेश जबरदस्ती फिल्म के अंदर पिरोया है तब तब फिल्म बरबाद कर दे

सलमान खान को अभिव्यक्ति की कला में महारत हासिल है.वह अपने चेहरे पर शरारत और प्यार को उतनी ही आसानी से दर्ज कराते हैं,जितना कि यह खून की लालसा और गुस्सा को करते है.

रज्जो पांडे किरदार में सोनाक्षी सिन्हा महज सेक्सी नजर आयी हैं, अन्यथा वह अपने अभिनय से इस फिल्म को डुबाने में कोई कसर बाकी नहीं रखती.

खुशी के किरदार में सांई मांजरेकर जरुर कुछ उम्मीदें जगाती हैं. सुंदर दिखने के साथ कुछ भावनात्मक दृश्यों में सांई मांजरेकर ने अपनी अभिनय प्रतिभा का अच्छा परिचय दिया है.पर उनके किरदार के साथ भी न्याय नही हुआ.

फिल्म के खलनायक बाली सिंह के किरदार में दक्षिण भारतीय अभिनेता किच्चा सुदीप ने जबरदस्त परफार्मेंस दी है. पर फिल्म सलमान खान की है, सलमान खान ने ही पटकथा व संवाद भी लिखे हैं,ऐसे में सुदीप के बाली सिंह के किरदार को ठीक से रेखांकित नह किया गया. वैसे सुदीप इससे पहले बहुभाषी एक्शन ड्रामा वाली फिल्म पहलवानह्लह्ल में अपने अभिनय का जलवा दिखाकर हिंदी भाषी दर्शकों के बीच अपनी पैठ बना चुके हैं.फिल्म के सारे एक्षन दृश्य अतार्किक और सलमान खान की स्टाइल के ही हैं. मारधाड़, विस्फोट, अति हिंसा सब कुछ है. एक्शन दृश्यों में सलमान खान की उम्र जरुर बाधा बनती है. यदि आप सलमान खान के धुर प्रशंसक नहीं हैं, तो आपके लिए इस फिल्म को सहन करना मुश्किल है.

चाईल्ड लाईन का संकल्प बाल विवाह मुक्त हो हमारा जिला

राजेश पंजिकार (ब्यूरो चीफ)

बाल विवाह या नवजात शिशु को जन्म के उपरान्त माता पिता के द्वारा त्यागना,तथा बाल अत्याचार, प्रताडित करना आदि ऐसे जघन्य अपराध माने जाते है जिस पर सरकार के द्वारा दोषीयों को सजा एवं दंड देने का प्रावधान है.ऐसे कार्यो के निगरानी एवं निदान हेतु एक संस्था चाईल्ड लाईन बांका में संचालित है जिसकी स्थापना जिले में 06 नम्ववर 2016 को किया गया था. इस संस्था के निदेशक चिरंजीव कुमार सिंह ने चर्चित बिहार को बताया कि जिले मे यह संस्था लगातार बच्चों पर हो रहे अपराध बाल विवाह पर अंकुश लगाने हेतु हमारी संस्था चाईल्ड लाईन जिला मूख्यालय में सक्रीय हैं। जिला सम्वन्यक मनोज कुमार सिंह के ने बताया कि बांका जिले के रजौन, धौरैया, बाराहाट, बौंसी के अलावा अन्य प्रखडों भी हमारे सदस्यों द्वारा बाल अपराध पर नजर रखी जाती हैं .मनोज कुमार ने वताया कि चाईल्ड लाईन के द्वारा एक आपातकालीन मे. न०1098 भी जारी किया है जिस पर कोई भी ब्यक्ति अपने आसपास या जानकारी मे किसी बाल अपराध, बाल विवाह को अंजाम देने का प्रयास किया जा रहा हो या धटना धटित हो रहा हो की सूचना दे सकते हैं यह न० २४ वो धंटे सेवा रत है.बांका मे स्नेहा कुमारी महिला परामर्शी एवं बन्दना कुमारी चाईल्ड लाईन की बतौर टीम सदस्य के रूम मे कार्यरत हैं.साथ हीटीम लीडर के रूप मे कमलेश्वरी टीम लीडर के रूप मे बाराहाट केन्द्र के अधीन संचालित केन्द्र बौंसी ,बाराहाट, जौन, धौरैया, क्षेत्रो में चाईल्ड लाईन के कार्य को संचालित करते हैं इसके अलावे नितेश कुमार, पराग पंकज के टीम सदस्य, के रूप में अस्वनी कुमार टीम सदस्य,कृष्ण कुमार मंडल,विजय कुमार के रूप मे टीम सदस्य के रूप मे कार्यरत हैं,वहीं सुजाता कुमारी,ववितो कुमारी,प्रीति कुमारी बतौर महिला टीम सदस्य के रूप में कार्य रत है.मनोज कुमार ने आगे वताया कि जिले मे नवजात शिशु के त्यागने का १४ मामलों का रेसक्यू पिछले छः माह के अन्दर किया गया जिसेमें एक बच्चों को शंम्भुगंज अस्पताल से बरामद किया गया .जो जिला बाल संरक्षण केन्द्र में सुरक्षित है.और कुछ बच्चो को फुल्लीडुमर क्षेत्रो से खेतों व सुनसान स्थान से बरामद किया गया .कुल १४ बच्चो मे 8 बच्चों काअधिग्रहन (गोद लेना) सरकारी प्रक्रिया के बाद दिल्ली मुम्वई,बंगलुरू ऐसे स्थानों से इच्छुक संतान हीन माता पिता के द्वारा किया गया जिसमे कुछ लडके एवं कुछ लडकियां थी.

खुलडुमर प्रखंड में बाल विवाह की रोकथाम के लिए प्रशासन की पहल

शंभूगंज अस्पताल से बरामद नवजात

समन्वयक मनोज कुमार सिंह व उनके सहयोगीगण

चाईल्ड लाइन संस्था की स्थापना बांका जिले में 1 नवंबर 2016 से हुई थी। तक से अब तक समस्त जिले में बाल अपराध, बाल विवाह, नवजात शिशु त्याग आदि के कई मामलों का निस्पादन जिला समन्वयक एवं पूरी ईम के साथ प्रशासन की मदद से किया जा चुका है। महिला एवं बाल विकास मंत्रालय भारत सरकार के द्वारा टॉल फ्री नंबर 1098 निर्गत कियागया है।

चिरंजीव कुमार
निदेशक
चाइल्ड लाईन
बांका

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ योजना हेतु एक नई पहल की शुरूआत

जिला प्रशासन के द्वारा मिलेगा अभिभावक को बधाई संदेश

मिस्टी उम्र एक माह

अदिति प्रिया उम्र सात साल

राजेश पंजिकार (ब्यूरो चीफ)

राज्य सरकार द्वारा बालिकाएं के संरक्षण स्वास्थिय, शिक्षा, स्वावलमबन पर आधारित कई योजनाएं गतिमान है. इसमे मूख्यमंत्री कन्या सुरक्षा योजना,सम्पूर्ण टीका करण योजना,मुख्यमंत्री पोशाक योजना, बालिकाओं हेतु मुख्यममंत्री बालिका पोशाक योजना, बिहार शताब्दी मुख्यमंत्री बालिका पोशाक योजना, मुख्यमंत्री किशोरीस्वास्थ्य योजना,मुख्यमंत्री बालिका (इंटरमीडियट) प्रोत्साहन राशि योजना मुख्यमंत्री बालिका (स्नातक) प्रोत्साहन योजना पूरे बिहार मे गतिमान है . इस क्रम मे बेटी बचाओ ,बेटी पढाओ के तहत बांका जिला प्रशासन की एक नई पहल की शुरूआत की गई है जहां बेटी के जन्म पर अभिभावकों को जिला प्रशासन के द्वारा बधाई संदेश प्रदान की जाएगी. इस संदर्भ में कार्यक्रम पदाधिकारी ,बाल विकास विभाग रिफत अंसारी ने बताया कि जिले के सभी स्वास्थ्य केन्द्र रेफरल अस्पताल प्रसव केन्द्र मे यह बधाई संदेश की प्रति सुरक्षित रहेगी जहां बेटी के जन्म के उपरान्त प्रसव केन्द्र या अस्पतालों से प्रसूता को छुटी मिलने पर अस्पताल के प्रर्ची के साथ अन्य कागजातो जैसे जन्म प्रमाण पत्र जननी सुरक्षा योजनाओं सेंजुडी बिभिन्न तरह के कागजात के साथ बिशेष रूप से यह बधाई संदेश भी बेटी के अभिभावकों के नाम प्रदान किया जाएगा.जोकि एक अनोखीऔर सस्मानित पहल जिला प्रशासन की मानी जा सकती हैं.

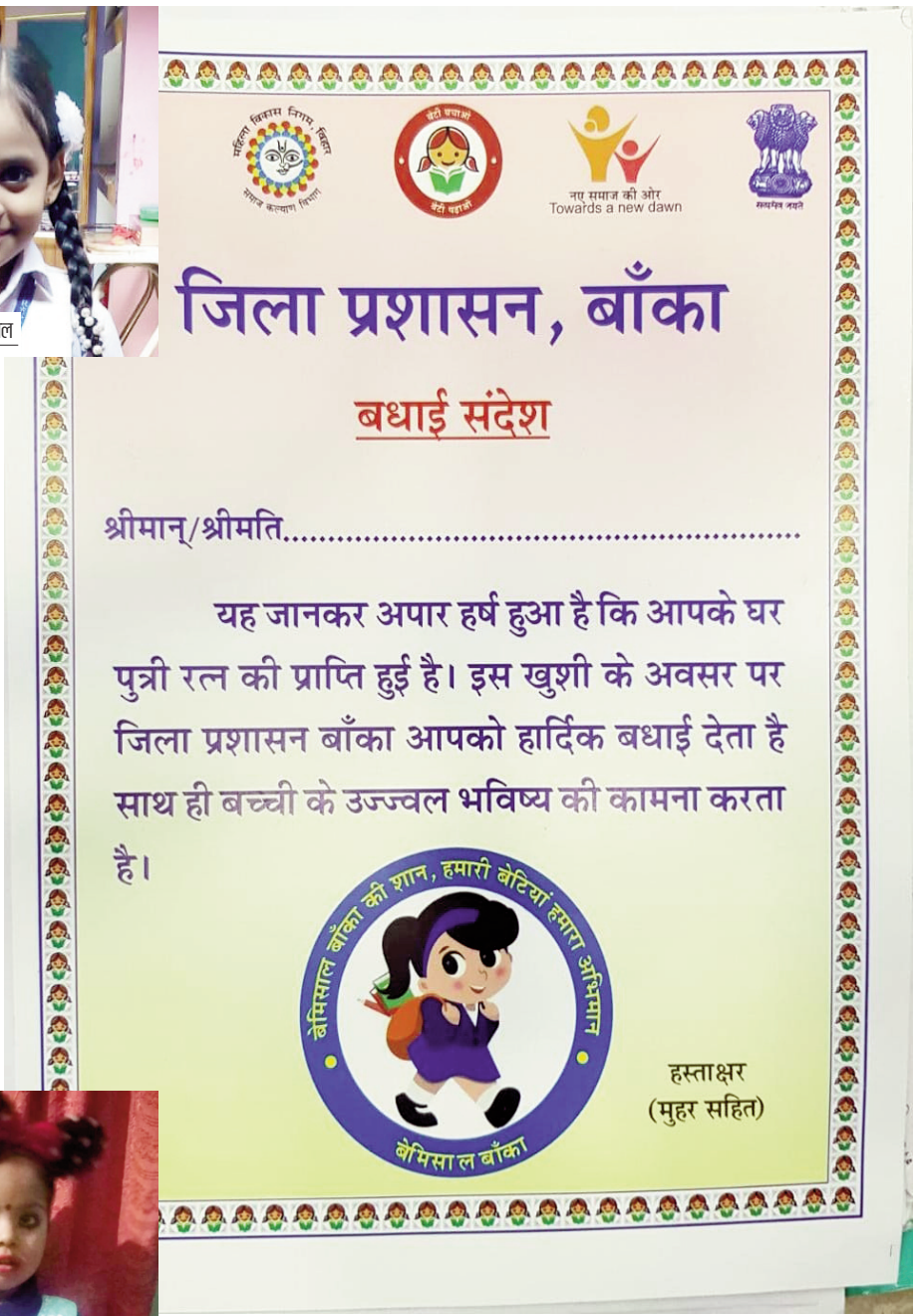

नेहल उम्र ढाई साल

परी उम्र तीन वर्ष

जल- जीवन- हरियाली अभियान के सफलता हेतु प्रभारी मंत्री ने की समीक्षात्मक बैठक

राजेश पंजिकार (ब्यूरो चीफ)

जलवायू परिवर्तन एवं जल संकट को देखते हुए पर्यावरण संरक्षण के लिए सरकार ने जल जीवन हरियाली अभियान की शुरूआत की है `इस महत्वाकांक्षी योजना को मुकाम तक पहुंचाने के लिए जिला परामर्श दात्री समिति का गठन किया गया है` जिसे क्षेत्र के जल स्त्रोतों में शामिल कुआं, चापानल, आहर,पाइन और तालाबों को अतिक्रमण मुक्त कराए जाने की जिम्मेदारी दीगई है` वहीं चेकडैम एवं जल संचयन के अन्य स्त्रोतों के निर्माण के साथ ही भवनों की छत पर रेन वाटर वर्क्स हार्वेस्ट यूनिट का निर्माण सघन पौधरोपण पर बल दिया जा रहा है। जिस का जायजा लेने के लिए मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने राज्य के सभी जिलों की यात्रा शुरू की है इसी क्रम मे 16 दिसम्वर को राज्य कल्याण मंत्री सा बांका जिला प्रभारी मंत्री रामसेवक सिंह ने बांका जिले में अधिकारियों के साथ जल जीवन हरियाली अभियान की प्रगति की समीक्षा बैठक करने हेतु बांका पधारे थे। इस क्रम में बांका समाहरणालय सभागार में जिला पदाधिकारी एवं अन्य पदाधिकारियों के साथ एक समीक्षात्मक बैठक की जिसने जल जीवन हरियाली अभियान को बांका जिले में सफल वना हेतु आवश्यक निंदेश देते हुए, उन्होंने कहा कि सरकार की ओर से सौर ऊर्जा के उपयोग को प्रोत्साहन ऊर्जा की बचत हर घर नल का जल ,हर घर तक पक्की गली नालिया, पहुंच पथ से दूर वासावटो को पक्की सड़कों से ज़ोडना व शौचालय निर्माण घर का सम्मान योजनाओं को पूरी तरह धरातल पर उतारने हेतु आवश्यक निर्देश दिया। सूवे में जल जीवन हरियाली अभियान को अंजाम तक पहुंचाने के लिए 11 बिंदुओं पर कार्य किए जा रहे हैं`जिसे मुख्यमंत्री के कार्यक्रम के पहले मुकम्मल करने का निर्देश अधिकारियों को दिया गयो इस क्रम में संभावित मुख्यमंत्री का दौरा बांका में 10 जनवरी को होने की संभावना है। इस कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु जल जीवन हरियाली अभियान को अंजाम तक पहुंचाने हेतु विभिन्न बिंदुओं पर उन्होंने अपनी राय दी` इसके बाद जिले में कवर वायर के जरिए विद्युत की आपूर्ति की जानी है। इसके लिए शहर से लेकर गांव तक लोगों के घरों में पहले से नंगे विद्युत पावर को बदलकर कर कभर वायर लगाने का निर्देश बिजली विभाग के कार्यपालक अभियंता को दिया` वही मंत्री ने जनप्रतिनिधियों से भी शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में कभार वायर लगवाने के लिए लोगों को जागरूक करने की अपील की।

समाहरणालय सभागार मे जल- जीवन - हरियाली की समीक्षात्मक बैठक करते जिला प्रभारी मंत्री सह समाज कल्याण मंत्री रामसेवक सिंह साथ मे जिलाधिकारी,पुलिस कप्तान ,डी.डी सी व अन्य अधिकारीगण.

हर घर नल का जल योजना का जनप्रतिनिधि रखे नजर : मंत्री ने इस विषय पर विशेष रूप से जनप्रतिनिधियों को निर्देशित करते हुए कहा कि मंत्री ने कहा कि सूबे के विकास के लिए सरकार ने सात निश्चय योजना की शुरूआत की है` जिसकी गुणवत्ता एवं समय पर उसे धरातल पर उतारने के कार्यों पर जनप्रतिनिधि अपनी नजर रखें`वहीं खाद्य सुरक्षा के तहत कितने लोगों के नाम कटे एवं कितने के नाम जोड़े गए इसकी भी जानकारी रखें ।19 जनवरी को बनेगी सबसे बड़ी मानव श्रृंखला मंत्री ने अपने समीक्षात्मक बैठक में कहा कि 19 जनवरी 2020 को जिले में जल जीवन हरियाली अभियान, नशा मुक्ति ,के समर्थन के साथ ही बाल विवाह एवं दहेज प्रथा के खिलाफ मानव श्रृंखला बनाई जाएगी`जो सबसे बड़ी मानव श्रृंखला होगी इसके लिए आम लोगों को जागरूक करने की आवश्यकता है मंत्री के द्वारा जिला प्रशासन को निर्देश दिया गया कि आम लोगों को जागरूकलकरें साथ ही लोहिया स्वच्छ बिहार अभियान के तहत लाभुकों के बीच दिसंबर तक प्रोत्साहन राशि का भुगतान करने काभी निर्देश मंत्री ने दियो वही 9 अगस्त 2020 को सूवे में मे 251 करोड़ पौधे लगाए जाने का लक्ष्य हैं इसके लिए पौधशाला का निर्माण किया जाएगा इसके लिए कृषि विभाग केअधिकारियों को को आवश्यक निर्देश दिए`इस समीक्षात्मक बैठक में जिलाधिकारी कुंदन कुमार, एस. पी अरविंद कुमार गुप्ता ,डी .डी सी. रवि प्रकाश, सांसद गिरिधारी यादव ,अमरपुर विधायक जनार्दन मांझी ,एवं एम एल सी मनोज यादव, सहित जिले के विभिन्न विभागों के अधिकारीगण उपस्थित थे`इसके उपरांत प्रभारी मंत्री परिसदन में जिले के मीडिया बंधुओं से मुखातिब हुए`इस क्रम में उन्होंने एक प्रेस वार्ता कर अपने आगमन का उदेश्य एवं कार्यरूप के लिए अपनी बात पत्रकारों के बीच रखी। साथ ही उन्होंने विभिन्न पत्रकारों द्वारा पूछे गए प्रश्नों का जवाब दियो इस क्रम में चर्चित बिहार पत्रिका द्वारा अधूरे चेकडैम को जल्द चालू करने हेतु प्रशासनिक पहल को गति लाने हेतु अधिकारीयों को निर्देशित करने हेतमंत्री महोदय का ध्यान आकृष्ट करायो जिससे अधूरी योजना जल्द चालू हो सके.जो योजनाएँ पूर्व में पारित हो चुकी है उन योजनाओं के संपादन हेतु विशेष रूप से आग्रह किया नई योजना के पहले पूर्व में चल रही योजना को पूर्ण रूप से सफल बनाने हेतु विभिन्न पत्रकारों द्वारा भी इस ओर मंत्री का ध्यान आकृष्ट करायो इसपर मंत्री महोदय ने आश्वासन दिया ,कि मैं अपने अगले कार्यक्रम में विशेष रूप से सभी अधिकारियों के साथ इस विषय में बैठक करूंगो और यदि संभव हो सके तो अधूरे उस योजनाओं का स्वंय आपलोगों के साथ स्थल पर चल कर निरीक्षण करूंगो ताकि उस का निष्पादन जल्द से जल्द हो सके.इसके साथ ही मंत्री महोदय ने हर योजना के सफलता हेतु मीडिया की भूमिका अहम होती है के लिए धन्यवाद दिया.

समीक्षात्मक बैठक मे शामिल जिले के अधिकारी गण

अमरपुर प्रखंड में कार्यक्रम पदाधिकारी (मनरेगा) के रूप में दीपक कुमार शर्मा प्रतिनियुक्त

राजेश पंजिकार (ब्यूरो चीफ)

बांका जिले के अमरपुर प्रखंड के मनरेगा कार्यालय में विगत कई महिनों से कार्यक्रम पदाधिकारी का पद रिक्त था। जिससे संबंधित कई विभागीय कार्य बाधित थे। प्रखंड के विकास हेतु मनरेगा की एक महत्वपूर्ण भूमिका होती है । प्रखंड कार्यालय के लिए मनरेगा में प्रतिनियुक्त कार्यक्रम पदाधिकारी की भूमिका अहम होती है । जिससे गांव के विकास हेतु चलाई जा रही सरकार की विभिन्न योजनाओं का क्रियान्वयन एवं उसके देखरेख का जिम्मा कार्यक्रम पदाधिकारी के हाथ होता है। स क्रम में प्रखंड प्रमुख मंजू देवी के अलावा कई पंचायत के मुखिया ने अधिकारियों से अमरपुर मनरेगा कार्यालय हेतु कार्यक्रम पदाधिकारी की पदस्थापना की मांग की थी ज्ञातव्य हो कि अमरपुर में विगत कई माह से कार्यक्रम पदाधिकारी का स्थान रिक्त था `जिला प्रशासन ने इस पर संज्ञान लेते हुए फुल्लीडुमर के कार्यक्रम पदाधिकारी दीपक कुमार शर्मा को १८ दिसम्वर 2019 को अमरपुर केलिए अतिरिक्त प्रभार दिया गया। 18 दिसंबर मंगलवार दीपक कुमार शर्मा ने अमरपुर मनरेगा कार्यालय पहुंचकरअपना पदभार ग्रहण किया इस अवसर पर उपस्थित प्रमुख ,मुखिया ,एवं पंचायत समितियों के द्वाराउनका स्वागत किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम पदाधिकारी ने कहा कि अमरपुर में मनरेगा के कार्यों में तेजी लाई जाएगी तथा सभी की शिकायत दूर की जाएगी ज्ञातव्य हो कि इसके पहले

दीपक कुमार शर्मा

शंभूगंज में कार्यक्रम पदाधिकारी शंभूगंज में पद पर आसीन थे जहां विभिन्न ने बाधितएवं अधूरी योजनाओं को इन्होंने पूरा कराया डाड एवं तटबंधों की मरम्मति हेतु सफल प्रयास किया . जिसमें खासकर चेक डैम और ऐसी नहर योजना थी ,जिससे कि दूर-दूर तक खेतों में पानी की व्यवस्था वाधित थी उन सभी योजनाओं को शंभूगंज प्रखंड में अपने सेवाकाल में इन्होंने सुचारू रूप से क्रियान्वयन कराया . जिससे आज के दिनों में भी उसे उस क्षेत्र में सिंचाई हेतु जल श्रोत्रखेतों तक पहुच कर समचित सिंचाई संभव हे पा रही है अब इनके लिए एक और चुनौती भरा है यह अमरपुर प्रखंड है इस क्रम में उन्होंने चर्चित बिहार को बताया कि अपनी मेहनत और पूरी कोशिश कर सरकार की योजनाओं को क्रियान्वित करने में मेरा योगदान हमेशा रहेगा`इसके लिए मैं हमेशा कटिबद्ध रहूंगा`और इस क्षेत्र में खुशहाली आए और मनरेगा की हर योजनाओं का सही समय पर संपादन हो इसके लिए भी मैं पूर्ण रुप से कटिबद्ध रहूंगा.

कविता

...ख्वाईशें...

डा० प्रभा

ये माना मैंने होंगी
उसकी भी कुछ मजबूरियां,
पर, जो मेरा हो नहीं
सकता किसी का हो नहीं सकता..
जमाने की बड़ी साजिशें
हैं मेरे जीने में अब शायद
पर रब ने जो नवाजा है
वो कोई ले नहीं सकता...
जमाने की नजर में है
अगर कोई खता तो है
जो मेरे इल्म ने मुझे बख्शा
वो खाली हो नहीं सकता...
हर एक शूँ में है उसके गीत
हर एक शूँ है गजल मेरी
मुखातिब है जो जमाने
से वो मेरा हो नहीं सकता... !!

कविता

...संध्या विरह मिलन...

राहुल, बांका

रवि थमा संध्या हो आई,
बड़ी सुखद बेला लगी ,
हो विभोर चकोर चांद झांका,
क्या कहें हम उस पल को,
मैंने भी प्रियतमा को ताका ।
बड़ी बेबसी उलझन सी लगी, सब नित्य-अनित्य सा लगा।
देखा बस था खाली- खाली ,
पता नहीं क्यों ताकता था मैं ,
क्या जो झांकता था मैं ।
संध्या भी तिरोहित कर गई
लगता छोड़ इस नीड़ को ,
उड़ चलु स्वच्छंद अकाश ।
टूट जाए स्व के बंधन,
मैं - हम का विरह मिलन ।
जमाना तो थम जाए यही,
पर कहां ऐसा हो पाता है ,
सूरज ढलता संध्या होती।
रहता कुझ कसक स्पंदन ,
इस संध्या को क्या कहूं ।
मैं तो थम सा जाता हूं ।
देखने तुझे मेरी आंखें,
नित्य विभोर हो जाती है।
कभी मदकती चमकती,
झुकी-झुकी रह जाती है ।
दिवस -रात्रि की कथा में
जिव्हा तो अनंत में विलीन,
मन भी पहुंचा असीम ,
इन सांसों का क्या करूं ,
काश ये भी दगा दे जाती ।
मैं अकेला रह जाता ,
देखता प्रकृति का कलरव ,
मुस्कुराता आनंद पाता,
अपनी बेबसी पर पछताता।
क्या कहें इस संध्या को ।
इस सहज सुखद बेला में
पक्षी भी मुझसे अच्छे ,
अपने नीड़ को तो पहुंचे ,
मैं तो नीड़ में रहकर ही,
नीड़ ढूंढता रह जाता हूं।

ऑस्टियोआर्थराईटिस हो सकता है?

बढ़ती उम्र में नसों एवं घुटनों के रोगों को ना करें नजरअंदाज: डॉ. लक्ष्मण पंडित

राजेश पंजिकार (ब्यूरो चीफ)

स्वास्थ्य परिचर्चा के तहत बढती उम्र में होने बाली लोगों में आम समस्याएं जैसे धुटने में दर्द रहना नसों में ऐठन होना,आदि विभिन्न तरहों की समस्याएं उत्पन्न होने लगती है .जिसे अकसर आम लोग नजरअंदाज कर देते हैं नतिजतन बाद मे वे गंभीर बीमारीयों के शिकार होकर रोगों से जूझते रहते हैं .इस क्रम मे हमने बांका सदर अस्पताल मे पदस्थापित डा० लक्ष्मण पंडित (सर्जन एवं नस रोग बिशेषग्य) से राय जाननी चाही तो उन्होने बताया कि .उम्र ५० के बाद शरीर के आंतरिक गतिवियाँ जैसे नसों में रक्त का संचरन की गति में कमी होना अत्यधिक शारीरिक भार के कारण घुटनों पर दबाव पडना.आदि कारणों से नस एवं घुटना संबंधि रोग उत्पन्न होने लगतें हैं .इसीक्रम मे इन्होने

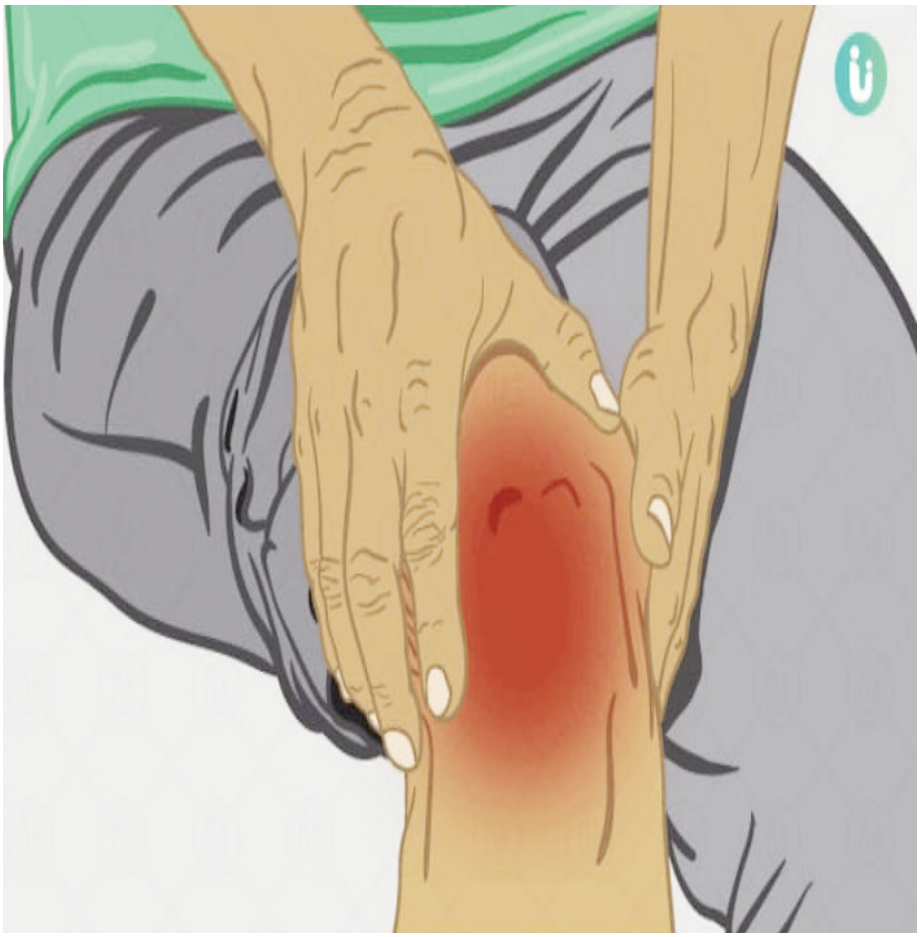

नियमित व्यायाम ,खान पान मे परहेज वसा युक्त खाना कम खाना नियमित पैदल चलना,के साथ साथ आसन करने से भी इससे निजाद मिल सकती है इसके अलावे अगर फायदा ना हो तो तुरंत चिकित्सक को दिवावें

डा.लक्ष्मण पंडित से जानकारी लेते हुएराजेश पंजिकार ब्यूरो

ऑस्टियोआर्थराईटिस के लक्षण एवं उससे निजाद पाने के उपाय भी बताएं।

इस रोग के बारें मे उन्होंने वताया कि इसके बास्तविक कारण काअभी भी पता नही चल सका है. लेकिन कुछ चीजें ऐसी हैं जो ऑस्टियोआर्थराईटिस के जोखिम को बढाती हैं.जैसे उम्र उम्र बढने केसाथ - साथ ऑस्टियोआर्थराईटिस विकसित होने का जोखिम बढाने मे सहायक होती है.जोडों मे अकडन,सूजन,और दर्द ऑस्टियोआर्थराईटिस के लक्षण हो सकते है इसे नजर अंदाज ना करें.मोटपे के कारण ,पारिविरिक समस्या,जोडो में चोट लगना भी इसके मूख्य कारण हो सकते हैं. डा.साहव नेआगे बताया ऑस्टियोआर्थराईटिस को हिन्दी मेंअस्थिसंधिशोथ कहा जाता है.यह गठिआ का सवसे आम रूप होता है.यह जोडो में दर्द एवंसूजन के साथ साथ उनकी हिलने डुलने की गति में भी कमी कर देता है.ऑस्टियोआर्थराईटिस जोडो के कार्टिलेजको क्षतिग्रस्त कर देता है.कार्टिलेज मजबूत तथा लचीले उत्तक होते है जो जोडो.में पाए जाते हैं.और दो हड्डियो को आपस मे जोडने का काम करते हैं.

नियमित टीकाकरण ,एव घरेलु देखभाल में सर्तकता, नवजात शिशु के लिए वरदान : डॉ भगवान दास

सर्दियों के मौसम में नवजात शिशु का सर्तकतापूर्ण घरेलू देखभाल एवं नियमित टीकाकरण से शिशु को बीमारीयों से बचाया जा सकता है.यह बात बताई बौंसी के प्रख्यात शिशु रोग के चिकित्सक डा० भगवान दास ने.स्वास्थ्य चर्चा के क्रम मे इन्होने सदीर्यों के मौसम के साथ साथ अन्य मौसम में शिशु की देखभाल माँके द्वारा एवं नियमित टीकाकरण से शिशुओं मे होने बाले संक्रमण से इजाद मिल सकती है. डा. साहव ने आगे बताया कि अगर शिशु जन्म के आधे धंटे के अंदर अगर नही रोता है .तो उसे बाद मे मानसिक बिकृति होने का भय रहता है .एक सर्वे के अनुसार बडे बडे शहरो के अस्पतालो में उस बक्त अगर हिन्दु शिशु है तो रामायण,और अगर मुस्लिम शिशु है तो कुरान सरीफ पढने की परंपरा अभिभावकों द्वारा प्रचलित है जिसके लिए प्रेरित भी किया जाता रहा हैं. बच्चों के जन्म के उपरान्त से मां के दूध का सेवन छः माह तक किया जाना अति आवश्यक है.जिससे बच्चो में रोगप्रतिरोधि क्षमता भी बढती है .और बच्चे स्वास्थ्य भी रहते हैं.अकसर बच्चे की माँ द्वारा बच्चों के आहार की समुचित मात्रा नही दी जाने के कारण बच्चों मे अनिद्रा एवं रोने एवं चिल्लाने की दशा अधिक देखी जाती है.कभी कभी बच्चो के नाक की नली मे भी अवरोध पैदा होने से बच्चे अनायास ही हमेशे रोते रहते हैं .जिसके लिए हमेशे माँ को सजग रहने की जरूरत हैं .शिशु को दूध पिलाने के कुछ मिनटों बाद कंधों से लगा कर पीठ थपथपना आवश्यक है जिससे स्वसन क्रिया के साथ ही साथ शिशु के आहार नली में भी अवरोध पैदा नही होता है. बच्चो ं मे होने बाली मूख्य वीमारियों

डा. भगवानदास के क्लिनिक में स्वास्थ्य परिचर्चा करते राजेश पंजिकार ब्यूरो

मे निमोनिया,दस्त रोग,रिकेटिक,एवं टायफाईड,एवं एनीमियां है.जो संक्रमण से पैदा होता है .हमेशे बच्चों के देखभाल मे माँ को बिशेष सर्तकता बरतनी पडेगी साफ सफाई.पर बिशेष ध्यान देने की जरूरत है.नियमित टीकाकरण सवसे जरूरी है.डा० साहव क अनुसार मेरे क्लिनिक मे जो भी बच्चे इलाज हेतुआते है .उनकी मां से पूरी जानकारी लेता हूं .जन्म कहां हुआ था,अस्पताल में या घर में निजीअस्पताल में बच्चो को टीका लगबाया है कि नही कव लगवाया है.आदि आदि.अगर नियमित टीकाकरण नही हुआ रहता है तो उसे पहली सलाह यह देता हूं .बच्चों को किसीभी सरकारी अस्पताल या स्वास्थ्य केन्द्र मे निम्न टीका लगवाये और इसे नियमित करें जो कि निःशुल्क लगाया जाता है.अपितु बच्चे स्वास्थ्य रहेगेंऔर मां का दूध नियमित सेवन से बच्चो का शारीरिक बिकास के साथ -ही साथ निरोगी भी होगा.

प्रतिज्ञा इंडेन गैस ऐजेसीं बांका को मिला बेस्ट उपभोक्ता अवार्ड

राजेश पंजिकार (ब्यूरो चीफ)

सरकार द्वारा प्रदत्त उज्वाला के तहत आम लोगों तक घर घर गैस कनेकसन दिया जाना, एक बहुत बडी उपल्बधि मा□ी जा सकती है.जिससे गरीव परिवारों मभी एल पी जी गैस के द्वारा मां बहनों ने खाना वनाने की शुरूआत हो गई है. इस क्रम में बांका जिले में स्थित इडेन गैस एंजेसी को बेगुसराय जोन मे सवसेअधिक उपभोक्ता बनाने के लिए बेस्ट ऑवार्ड से सम्मानित किया गया.अवसर था सिलीगुडी मे आयोजित एक विशाल वितरक सम्मेलन का.जहां पूरे बिहार, बंगाल सहित अन्य प्रांतों के बिभिन्न जिलों से वितरक उपस्थित हुए थे.जहां बेगुसराय जोन में सवसेअधिक उपभोक्ता बनाने के एवज मे प्रतिग्या इंडेन गैस ऐजेंसी बांका को यह अवार्ड बिहार के कार्यकारी निदेशक विभाष कुमार जी.एम उदय कुमार एवं मूख्य क्षेत्रीय प्रबंधक राजन रंजन के हाथो प्रोपराईटर प्रतिग्या कुमारी को प्रदान किया गया.आवार्ड प्राप्त करने के उपरान्त चर्चित बिहार को बताया कि यहअवार्ड उनके अनुसार मेरा नही बल्कि मेरे सहयोगियों का हैं जिनके लगन और मेहनत ईमानदारी पूर्वक किये जाने से यह अवार्ड प्राप्त हो सका है.साथ ही प्रोपराईटर ने अपने पूरी टीम काआभार प्रकट करते हुएधन्यवाद दिया .वही इस उपल्बिधि हेतु चर्चित बिहार पत्रिका परिवार कीओर से शुभकामनाएं दी गई.

जल -जीवन -हरियाली अभियान को प्रभावी वनाने हेतु मुखिया जी अनोखी पहल

राजेश पंजिकार(ब्यूरो चीफ)

बांका जिले के कटोरिया प्रखंड के कटोरिया- पंयायत मे जल- जीवन-हरियाली अभियान को सफल बनाने हेतु पंचायत के मुखिया प्रदीप कुमार गुप्ता द्वारा नई पहल की शुरूआत की गई है .हर दिन पंचायत भवन मे मिलने बाले ग्रामीणो एव सहयोगियो को एक पौधा उपहार प्रदान कर जल- जीवन - हरियाली अभियान को सफल वनाने हेतु श्रृजात्मक पहल शरू की है.इससे एक ओर जहां आम लेगों के मन बृक्ष लगाओ ,बृक्ष बचाओ की भावना जागृत होगी वही दूसरी ओर पर्यावरण स्वच्छता काभी

नव वर्ष केअवसर पर मुखिया प्रदीप कुमार गुप्ता के द्वाराअपने पंचायत के लोगों को उपहार स्वरूप पौधा प्रदान करते हुए

जल - जीवन- हरियाली अभियान के तहत पौधा रोपण करते हुए मुखिया प्रदीप कुमार गुप्ता

संदेश जाएगा. सिचांई की ब्यवस्था के लिए एक ओर जहां छाताकुरूम गांव के लोग चेक डेम के निर्माण एव उसके उपक वने पुलिया सेआवागमन प्रारंभ होने से सुविधाओ का लाभ प्राप्त कर रहे हैं वही दूसरी ओर गर्भवती महिलाओ को घर तक ऐम्बुलेस से उसी पुलिया के सहारे पहुंचाया जा रहा है साथ ही वरसात के मौसम मे बीमार लाचार लोग या पढने बाले बच्चे,बच्चियां पुलिया के कारण पढाई एव इलाज हेति अस्पताल नही जा सकतेथे अव उनलोगों को इसका लाभ प्राप्त हो प्रारंभ हो गया है. साथ ही मुखिया जी के द्वारा पंचायक के राजवाडा मे बहुतों की संख्या में बृक्षारोपन कराया गया है एव कराया जा रहा है. एक तरफ से देखा जाय तो कटोरिया क्षेत्र वन क्षेत्र कहलाता हैइन क्षत्रो में पठारो की संख्या भी बहुतायत है बाबजूद इसके मिट्टी की उर्वरा शक्ति कमजोर होने के कारण नए पौछो का सृजन सरलता सेनही हो पाता इस कारण नए पौधो की संख्या पहले कम थी परन्तु मुखिया जी के पहल और सरकारी योजनाओ को साकार कर अव कई एकड में नए पौधों का रोपन किया जा रहा है .जिससे जल संरक्षण एवं पर्यावरण के स्वच्छ होने के आसार दिख रहें हैंजल है तो कल है सिद्धात को प्रमाणित करने हेतु पंचायत मे जगह जगह तथा सडक के किनारे बृक्षा रोपन का कार्य कटोरिया पंचायत मे गतिमान है. घनी आवादी क्षेत्रो में पेयजल की समुचित ब्यबस्था ,नालीके पानी निकासी के साथ नए पी.सी.सी सडकों के र्निमाण मे कटोरिया पंचायत सरकार की योजना सफलता पूर्वक चल रहा हैं जिले लेकर राज्य स्तर के अधिकारी के द्वारा निरीक्षणके व उपरान्त कटोरिया पंचायत को स्वच्छता पर बिशेषसम्मान मूख्यमंत्री के मुख्य सलाहकार अंजनी कुमार सिंह के द्वारा जिला पदाधिकारी ,उपविकास आयुक्त महोदय तत्कालिक के समक्ष अवार्ड प्राप्त हुआ है.अव देखना यह होगा कि आगे जल- जीवन- हरियाली अभियान के लिएअपने प्रतिनिधित्व काल में और नई पहल कटोरिया- पंचायत के मुखिया प्रदीप कुमार गुप्ता के द्वारा क्या होगी.

जल संरक्षण हेतु छाता कुरूम का पुलिया सह चेक डैम आम जनता के सेवार्थ

जल जीवन हरियाली अभियान के तहत सडक किनारे पौधारोपण.

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ

अजय कुमार

समाजसेवी

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ

अरुण सिंह

पूर्व कमांडेंट

राष्ट्रीय सचिव, राष्ट्र निर्माण पार्टी

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ

जय जयराम सिंह

समाजसेवी

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ

चिरंजीव कुमार

निदेशक चाईल्ड लाईन

बांका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ

बांका व्हील्स, बांका

SAHARA EVOLS

अब बांका में खुला सहारा इलेक्ट्रिक बाईक का शानदार शो रूम

अब बांका शहर बनेगा प्रदूषणमुक्त

बांका विल्स में इलेक्ट्रिक स्कूटी, बाइक और इलेक्ट्रिक रिक्शा के कई रेंज के मॉडल उपलब्ध है।

अब नो पेट्रोल, नो डीजल, नो प्रदूषण

मुकेश कुमार

प्रोपराईटर

एमडी प्लजा मार्केट, कटोरिया रोड, बांका

मो. 9631375224

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ

नीरज कुमार

मुखिया

ग्राम पंचायत -घोरमारा

प्रखंड - कटोरिया-

जिला- बांका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ

मनोज कुमार सिंह

जिला- समन्वयक

चाईल्ड लाईन

बांका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ

नन्दनी देवी

पूर्व मुखिया

ग्राम पंचायत- लखनउडीह

बांका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ

पुतुल कुमारी

पूर्व सांसद
बांका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ

डॉ. प्रभा रानी

महिला चिकित्सा पदाधिकारी,
सदर अस्पताल, गोड्डा (झारखंड)

किसी भी प्रकार के निवेश हेतु शाखा से सम्पर्क करें

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के सभी निवेशकों ,अभिकर्ताओं एवं कर्मचारीयों के साथ समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ

कृष्णानन्द रजक

सेक्टर वर्कर
सहारा इंडिया, बांका
9431274261 (मो.)

SAHARA
INDIA PARIWAR

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिलेवासीयों को हार्दिक शुभकामनाएँ

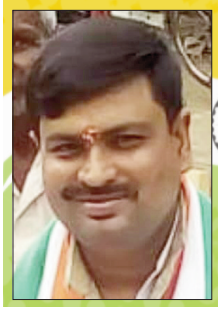

भानुप्रताप सिंह

प्रखंड कॉग्रेस अध्यक्ष, शंभुगंज जिला बांका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिलेवासीयों को हार्दिक शुभकामनाएँ

निरंजन कु सिंह

पैक्स अध्यक्ष रैनिया, जोगडीहा पंचायत, बांका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिलेवासीयों को हार्दिक शुभकामनाएँ

डॉ मौलेश्वरी सिंह विद्याभूषण

M.H.M.B.B.S. (Darbhanga)
R.M.P.H. (Patna), D.C.P. (Ranchi)
Regd. No. 16261 दुधारी
बांका, मो. 9955601568

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिलेवासीयों को हार्दिक शुभकामनाएँ

डॉ बलराम मंडल

D.E.H(Redg no 23631

रजि नं-23631
ग्राम - दुधारी
जिला- बांका
9939992228

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिलेवासीयों को हार्दिक शुभकामनाएँ

डा.संगीता मेहता

बाराहाट
बांका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिलेवासीयों को हार्दिक शुभकामनाएँ

डॉ. सरयू प्रसाद यादव

अध्यक्ष कुसाहा वन समिति
जिला- बांका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिलेवासीयों को हार्दिक शुभकामनाएँ

आचार्य रघुनंदन शास्त्री

आवासीय मार्शल एकेडमी, खेसर,
बांका, मो.:8002850364

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिलेवासीयों को हार्दिक शुभकामनाएँ

उत्तम कुमार निराला

बांका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिलेवासीयों को हार्दिक शुभकामनाएँ

बेबी कुमारी घोष

वार्ड पार्षद
वार्ड नं-11
नगर परिषद
बांका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिलेवासीयों को हार्दिक शुभकामनाएँ

प्रतिज्ञा कुमारी

प्रो. प्रतिज्ञा गैस एजेंसी, कटोरिया रोड, बांका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिलेवासीयों को हार्दिक शुभकामनाएँ

तारा देवी

जिला परिषद सदस्या
बांका उत्तरी-14

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिलेवासीयों को हार्दिक शुभकामनाएँ

HP GAS
your friendly gas

रामचंद गैस एजेंसी

शिव आशीष मार्केट, बांका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ

पंकज कुमार जय

प्रो.- जयप्रकाश मेडिकल हॉल
पुनसिया जिला- बांका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिलेवासीयों को हार्दिक शुभकामनाएँ

श्री निवास चन्द श्री

संस्थापक ज्ञान गंगा आवासीय विद्यालय इदगाह रोड बांका व मकदुमा रोड सम्मुखिया रोड, बांका,
मो. 9934831312

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ

गोबिंद राजगडिया

बांका

विकासशील इंसान पार्टी
VIP पार्टी
ना सरकार मेरी है! ना रौब मेरा है!
ना बड़ा-सा नाम मेरा है! मुझे तो एक छोटी-सी बात का गौरव है,
मैं ''बिहार का हुँ ''.... और बिहार मेरा है।
विकासशील इंसान पार्टी
की ओर से
नववर्ष, गणतंत्र दिवस
एवं
सरस्वती पूजा की
हार्दिक शुभकामनाएँ
चुनाव चिन्ह
अभय कुमार सिंह
9934279823
जिलाध्यक्ष-समस्तीपुर
विकासशील इंसान पार्टी

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिलेवासीयों को हार्दिक शुभकामनाएँ

नवल किशोर यादव

वरीय कोषागार पदाधिकारी
बांका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिलेवासीयों को हार्दिक शुभकामनाएँ

रवि रंजन

जिला निबंधन पदाधिकारी
बांका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिलेवासीयों को हार्दिक शुभकामनाएँ

चन्द्र देव महतो

जिला सांख्यिकी पदाधिकारी
बांका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिलेवासीयों को हार्दिक शुभकामनाएँ

बिजय कु सिंह

जिला खनन पदाधिकारी
बांका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिलेवासीयों को हार्दिक शुभकामनाएँ

संजीव कुमार

जिला प्रबंधक
बिहार राज्य खाद्य निगम, बांका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिलेवासीयों को हार्दिक शुभकामनाएँ

डॉ लक्ष्मण पंडित

एम.बी.बी.एस.
एम.एस. सर्जरी
सदर, अस्पताल , बांका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिलेवासीयों को हार्दिक शुभकामनाएँ

विजय कुमार चन्द्र

प्रखंड बिकास पदाधिकारी
बांका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिलेवासीयों को हार्दिक शुभकामनाएँ

पंकज कुमार

कार्यक्रम पदाधिकारी
मनरेगा - कटोरिया
जिला बांका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिलेवासीयों को हार्दिक शुभकामनाएँ

दीपक कु. शर्मा

कार्यक्रम पदाधिकारी
मनरेगा- सहअमरपुर
जिला- बांका

आई.सी.डी.एस

बांका की ओर से नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिलेवासीयों को हार्दिक शुभकामनाएँ

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिलेवासीयों को हार्दिक शुभकामनाएँ

सुशीला धान

बाल विकास परियोजना पदाधिकारी
बांका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिलेवासीयों को हार्दिक शुभकामनाएँ

विनय पाल

बिशेष शाखा पदाधिकारी
बांका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिलेवासीयों को हार्दिक शुभकामनाएँ

अनिरूद्ध प्रसाद सिंह

संस्थापक -मुक्ति निकेतन संस्थान
कटोरिया, बांका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिलेवासीयों को हार्दिक शुभकामनाएँ

ओम प्रकाश मंडल

कनीय अभियंता
सिचांई प्रमंडल - बौंसी
जिला बांका

नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ

डॉ अनिल कुमार

D.O .P.M.C.H(Patna)-F.C.L.I
(Aligarh) L.A.V (NewDelhi)
M.N.O.A.I (Hariyana)
Ex member of R.C.S(Patna)

नवज्योति नेत्रालय
पुरानी बस स्टेंड, बांका